खण्ड-260, अंक-3
बुधवार, 17 भाद्रपद, शक संवत् 1887
(8 सितम्बर, 1965 ई0)

उत्तर प्रदेश विधान सभा

की

कार्यवाही

(अधिकृत विवरण)

खण्ड 260 में 10 अंक है

उत्तर प्रदेश विधान सभा सचिवालय (कार्यवाही अनुभाग) द्वारा प्रकाशित

मुद्रक:

निदेशक, राजकीय मुद्रण एवं लेखन सामग्री, लखनऊ , उत्तर प्रदेश (भारत)

१९६७

मूल्य : बिना महसूल 25 पैसे, महसूल सहित 31 पैसे |

वार्षिक चन्दा : बिना महसूल 10 रुपये, महसूल सहित 12 रुपये |

उत्तर प्रदेश विधान सभा

बुधवार, ८ सितम्बर, १९६५

विधान सभा की बैठक सभा-मंडप, लखनऊ में ११ बजे दिन में अध्यक्ष, श्री मदनमोहन वर्मा की अध्यक्षता म आरम्भ हुई ।

उपस्थित सदस्य---३९०

अक्षयवरसिंह, श्री
अखण्डप्रतापसिंह, श्री
अजीज इमाम, श्री
अनीसुर्रहमान, श्री
अब्दुल समी, श्री
अब्दुल हसीब खां, चौधरी
अमजद अली, श्री
अयोध्याप्रसाद, श्री
अली जहीर, श्री सैयद
अवधनारायणप्रतापसिंह, श्री
अवधेशकुमार सिनहा, श्री
अवधेशप्रताप, राजा
अशरफ अली खां, श्री
अहमद बख्श, श्री
आनन्दसिंह, कुंवर
इन्द्रपाल, श्री
इन्द्रासनसिंह, श्री
इरतजा हुसैन, श्री
ईश्वरशरण, श्री
उग्रसेन, श्री
उमादत्त, श्री
उमाशंकर, श्री
उमाशंकर तिवारी, श्री
उल्फतसिंह यादव, श्री
ऊदल, श्री
ऋषिनारायण शास्त्री, श्री
एस० जी० दत्त, श्री
ए० सी० ग्राइस, श्री
कंधईलाल, श्री
कन्हैयालाल, श्री
कमलापति त्रिपाठी, श्री
कलारानी मिश्रा, श्रीमती
कल्पनाथसिंह, श्री
कल्याणचन्द मोहिले, श्री (उपनाम छुन्नन गुरू)
कल्याणराय, श्री
काशीनाथबहादुरपाल, श्री
काशीनाथ मिश्र, श्री
काशीप्रसाद द्विवेदी, श्री
किशोरीलाल अग्रवाल, श्री
किश्वर आरा बेगम, श्रीमती
कुमार करुणा कृष्ण नायर, श्री
कृष्णचन्द, श्री
कृष्णपालसिंह, श्री
कृष्णसिंह, श्री
कृष्णानन्द राय, श्री
केदारनाथ भार्गव, श्री
केशभान, श्री
केशरीप्रसाद पांडेय, श्री
केशव गुप्त, श्री
केशवराम, श्री
केशवसिंह, श्री
कैलाश, श्री
कोतवालसिंह भदौरिया, श्री
खयालीराम, श्री
खुशीराम, श्री
खूबसिंह, श्री
खेमचन्द, श्री
गंगाधर मैठाणी, श्री
गंगाप्रसाद, श्री
गंगाप्रसाद वर्मा, श्री

गंगाप्रसादसिंह, श्री
गंगासिंह विष्ट, श्री
गणेशचन्द्र काछी, श्री
गणेशप्रसाद, श्री
गनेशीलाल चौधरी, श्री
गयाप्रसाद, श्री
गयाप्रसाद मेहरोत्रा, श्री
गिरजाप्रसाद, श्री
गिरधारीलाल, श्री (वाराणसी)
गिरवरप्रसाद, श्री
गुप्तारसिंह, श्री
गुलाबसिंह, श्री
गेंदादेवी,श्रीमती
गेंदासिंह, श्री
गोकुलप्रसाद, श्री
गोपीनाथ दीक्षित, श्री
गोविन्द सहाय, श्री
घनश्यामदास, श्री
घासीराम जाटव, श्री
चतुर्भुज शर्मा, श्री
चन्दनसिंह, श्री
चन्द्रजीत यादव, श्री
चन्द्रदेव, श्री
चन्द्रपाल, श्री
चन्द्रबलीसिंह, श्री
चन्द्रभानु गुप्त, श्री
चन्द्रसिंह रावत, श्री
चम्पावती, श्रीमती
चरणसिंह, श्री
चिरंजीलाल जाटव, श्री
चुन्नीलाल, श्री
चैतन्यराजसिंह, श्री
छत्रपति अम्बेश, श्री
छेदालाल चौधरी, श्री
जगदम्बाप्रसाद, श्री
जगदीशनारायण सिनहा, श्री
जगदीशप्रसाद, श्री (बहराइच)
जगदीश प्रसाद, श्री (मुरादाबाद)
जगदीशप्रसाद पांडेय, श्री
जगदीशशरण अग्रवाल एडवोकेट, श्री
जगदीशशरण रस्तोगी, श्री
जगन्नाथ चौधरी, श्री
जगन्नाथ राव, श्री
जगन्नाथसिंह, श्री
जगमोहनसिंह नेगी, श्री
जगवीरसिंह, श्री
जगीलुर्रहमान किदवई, श्री
जगोपाल, श्री
जगराम वर्मा, श्री
जलील अब्बासी, काजी
जसरामसिंह, श्री
जियाउर्रहमान, श्री (उपनाम वक्कन)
जुगलकिशोर, आचार्य
जुगलकिशोर, श्री
जुल्फिकार अली खां, नवाबजादा सैयद
जे० पी० मिश्र, श्री
ज्वालाप्रसाद, श्री
झाखण्डेराय, श्री
झिनकूमिटराम, श्री
डलनाराम, श्री
डूंगरसिंह, श्री
तारा अग्रवाल, श्रीमती
तेजभानसिंह, कुंवर
तेजसिंह, श्री
त्रेपनसिंह, श्री
दयाराम शाक्य, श्री
दलजीतसिंह, श्री
दशरथप्रसाद, श्री
दामोदरदयाल खन्ना, श्री
दीनदयाल करबरिया, श्री
दीननारायणसिंह, श्री
दुर्गाप्रसाद, श्री
दुर्योधन, श्री
देवदत्त मिश्र, श्री
देवीदत्त, श्री
देवेन्द्रसिंह, श्री
देशराजसिंह, श्री
द्वारकाप्रसाद पांडेय, श्री
द्विजेन्द्रनारायण, श्री
धर्मदत्त वैद्य, श्री
धर्मसिंह, श्री
धूमप्रसाद, श्री
नत्थाराम रावत, श्री
नत्थूसिंह, श्री
नन्दकुमारदेव वाशिष्ठ, श्री
नरदेवसिंह, श्री
नरसिंहनारायण पांडेय, श्री
नरेन्द्रसिंह, श्री
नरेन्द्रसिंह विष्ट, श्री
नरोत्तमसिंह, श्री
नवलकिशोर, श्री
नाथूराम शिक्षक, श्री

नारायणसिंह, श्री
नित्यानन्द पांडेय, श्री
नियाज हसन खांन, श्री
नेकराम शर्मा, श्री
नैनसिंह, श्री
नौनिहाल सिंह चौधरी, श्री
पंचमदास, श्री
परमाईलाल, श्री
पशुपतिनाथसरनसिंह, श्री
पातीराम अहरवार, श्री
पितईराम, श्री
पीतमसिंह प्रधान, श्री
पुरुषोत्तमलाल बधवार, श्री (राजाजी)
पूरनलाल, श्री
प्रकाशवती सूद, श्रीमती
प्रेमसिंह, श्री
फूलसिंह, श्री
बंकटासिंह, श्री (टुन्नूसिंह)
बंशीधर पांडेय, श्री
बंशीधर मिश्र, श्री
बंशीलाल, श्री
बद्रीप्रसाद, श्री
बद्रीप्रसाद पालीवाल, श्री
बनारसीदास, श्री
बब्बनसिंह, श्री
बलदेवसिंह आर्य, श्री
बलवानसिंह, श्री
बलवीरसिंह, श्री
बसन्तलाल, श्री
बसन्तलाल शर्मा, श्री
बांकेलाल, श्री
बाबूलाल, श्री
बाबूसिंह, श्री
बालकराम वैश्य, श्री
बालेन्दुभूषणप्रतापसिंह, श्री
बालोजी अग्रवाल, श्री
बिपिनबिहारी तिवारी, श्री
बिशनलाल यादव, श्री
बृजबिहारी, श्री
बृजभूषणशरण, श्री
बृजमोहनलाल गुप्त, श्री
बृजराजसिंह, श्री
बृजरानी, श्रीमती
बृजेश्वर सहाय, श्री
बेचनराम, श्री
बेदराम, श्री
बेनीबाई, श्रीमती
बैजनाथसिंह, वैद्य श्री
बैजूराम, श्री
ब्रह्मदत्त मायर, श्री
भगवानदास बरनवाल, श्री
भगवानदास यादवेन्दु, श्री
भगवानदीन, श्री
भगवान सहाय, श्री
भगौतीदीन , श्री
भानुप्रतापसिंह, श्री
भीखालाल, श्री
भीमाप्रसाद, श्री
मंगल, श्री
मंगलदेव, श्री
मतोलासिंह, श्री
मदनपालसिंह, श्री
मनसाराम, श्री
मन्नालाल, श्री
महमूद हसन खां, श्री
महरामसिंह, श्री
महावीरप्रसाद, श्री
महावीरप्रसाद श्रीवास्तव, श्री
महावीरसिंह, श्री
माताप्रसाद, श्री
मान्धातासिंह, श्री
मुकन्दीलाल बैरिस्टर, श्री
मुकुटबिहारीलाल, श्री
मुजफ्फर हसन, श्री
मुन्नूसिंह, श्री
मुमताज मुहम्मद खां, श्री
मुरलीधर कुरील, श्री
मुलतानसिंह, श्री
मुहम्मद रफी खां, श्री
मूलचन्द शास्त्री, श्री
मेघनाथसिंह शिशोदिया, श्री
मेवालाल जायसवाल, श्री
मैनेजरसिंह, श्री
मोहनलाल, आचार्य
मोहनलाल अहिरवार, श्री
मोहनलाल वर्मा, श्री
मोहनसिंह, श्री
यशपालसिंह वर्मा, श्री
यशोदादेवी, श्रीमती
यादवेन्द्रदत्त, श्री
यादवेन्द्रसिंह, श्री (लल्लन जी)
योगेश्वरप्रसाद खंडेडी, श्री

रक्षपालसिंह, श्री
रघुनाथ, श्री
रघुनाथप्रसाद, श्री
रघुनाथसिंह, श्री
रघुवीरराम, श्री
रघुवीरसहाय कैथवार, श्री
रघुवीरसिंह, श्री
रतीपाल, श्री
रणबहादुरसिंह, श्री
रमाकान्तसिंह, श्री
रमेशचन्द्र शर्मा, श्री
राजदेव, श्री
राजनाथसिंह, श्री
राजनारायण, श्री
राजनारायण मिश्र, श्री
राजाराम, श्री
राजेन्द्रकिशोरी, श्रीमती
राजेन्द्रकुमारी बाजपेयी, डाक्टर
राजेन्द्रसिंह, श्री
राजेन्द्रसिंह यादव, श्री
राधेश्याम शर्मा, श्री
रामआधार कनौजिया, श्री
रामआधीनसिंह, श्री
रामआनन्द पांडेय, श्री
रामआवध, श्री
रामकिंकर, श्री
रामकिशोर त्रिपाठी, श्री
रामकिशोर वर्मा, श्री
रामकुमार शास्त्री, श्री
रामचन्द्र विकल, श्री
रामजीलाल सहायक, श्री
रामनाथ पाठक, श्री
रामपाल त्रिवेदी, श्री
रामपालसिंह, श्री
रामप्यारे, श्री
रामप्रसाद देशमुख, श्री
रामबली मिश्र, श्री
रामभजन, श्री
राममूर्ति, श्री
राममूर्ति 'अंचल', श्री
रामरती, श्रीमती
रामरूपसिंह, श्री
रामलखन वकील, श्री
रामलखन शुक्ल, श्री
रामलखनसिंह, श्री
रामलाल, श्री

रामसमझावन, श्री
रामसिंह, श्री (एटा)
रामसिंह, श्री (मैनपुरी)
रामसिंह, श्री (सहारनपुर)
रामसुन्दर पांडेय, श्री
रामसुन्दर शास्त्री, श्री
रामसूरतप्रसाद, श्री
रामस्वरूप भारतीय, श्री
रामायणराय, श्री
रामेश्वरनाथ, श्री (उपनाम चौबे)
रियासत हुसैन, श्री
रुद्रसिंह राठौर, कुंवर
लक्ष्मीशंकर यादव, श्री
लखपतराम शर्मा, श्री
लखीसिंह, श्री
लालबहादुरसिंह, श्री (जौनपुर)
लालबहादुरसिंह, श्री (वाराणसी)
लोकपालसिंह, श्री
वशिष्ठनारायण शर्मा, श्री
वसी नकवी, श्री
विक्रमशाह, राजा
विजयकुमार, श्री
विजयपालसिंह, श्री
विजयशंकर, श्री
विजयशंकर सिंह, श्री
विजयसिंह, श्री
विद्यावती राठौर, श्रीमती
विनयलक्ष्मी सुमन, श्रीमती
विश्वनाथ पांडेय 'प्रणव', श्री
विश्वनाथप्रसाद, श्री
वीरसेन, श्री
वैद्यनाथ पांडेय, श्री
शंकरलाल, श्री
शकुन्तलादेवी, श्रीमती
शकुन्तला नायर, श्रीमती
शराफत हुसैन रिजवी, श्री
शशिभूषण सिंह, श्री
शान्ति चन्द्र शुक्ल, श्री
शान्ति प्रपन्न शर्मा, श्री
शारदानन्द, श्री
शिब्बनलाल सक्सेना, श्री
शिवचरण, श्री
शिवदानसिंह, श्री
शिवनाथसिंह, श्री
शिवमंगल, श्री
शिवसम्पति शर्मा, श्री

शिवेन्द्रप्रताप, श्री
शीतलप्रसाद, श्री
शुगनचन्द मजदूर, श्री
शुगनचन्द शर्मा, श्री
शौकत हमीद खां, श्री
श्यामलाल, श्री
श्यामसुन्दर शुक्ल, श्री
श्रद्धादेवी, कुमारी
श्रीनिवास, श्री
श्रीपत मिश्र, श्री
श्रीपालसिंह, कुंवर
श्रीराम, श्री
श्रीराम तिवारी, श्री
सईद अहमद, श्री
सत्यदेव, श्री
सत्यनारायण पाण्डेय, श्री
सत्यवीर कुंवर, श्री
सन्तसिंह यूसुफ, श्री
सरदारसिंह, श्री
सहदेवसिंह, श्री
सालिग्राम जैसवाल, श्री
सियादुलारी, श्रीमती
सियाराम गंगवार, डाक्टर
सीताराम, डाक्टर
सुखलाल, श्री
सुखदेवप्रसाद, श्री
सुखरामदास, श्री
सुखलाल, श्री (इटावा)
सुखलाल, श्री (लखनऊ)
सुचेता कृपालानी, श्रीमती
सुदामाप्रसाद गोस्वामी, श्री
सुरजनराम विशारद, श्री
सुरेन्द्रदत्त बाजपेयी, श्री
सुरेन्द्र विक्रम, श्री
सुशीला रोहतगी, श्रीमती
सूबेदारसिंह, श्री
सूरजपालसिंह यादव, श्री
सूरजलाल गुप्त वकील, श्री
सेवाराम, श्री
सोहनलाल धुसिया, श्री
हमीद खां, श्री
हरिगनराम , श्री
हरिनाथ तिवारी एडवोकेट, श्री
हरीदत्त काण्डपाल, श्री
हरीशकुमार गंगवार, श्री
हरीसिंह, श्री
हलीमुद्दीन, श्री
हुकुमसिंह विसेन, श्री
हेतराम सिंह, श्री
हेमराज, श्री
हेमवतीनन्दन बहुगुणा, श्री
होतीलाल अग्रवाल, श्री
होरीलाल यादव, श्री

नोट—वित्त मंत्री, श्री कैलाश प्रकाश तथा शिक्षा उपमंत्री, डा० रामनारायण पाण्डेय भी उपस्थित थे ।

मार्शल द्वारा टोपी न पहनने पर आपत्ति

श्री ऊदल (जिला वाराणसी)—

पहले मार्शल टोपी लगाकर आते थे उसका क्या हुआ ? उनकी जगह वर्तमान मार्शल बिना टोपी लगाये आते हैं । यह सदन के आत्मसम्मान के विरुद्ध है ।

श्री अध्यक्ष—

बाद में बात कर लीजियेगा ।

भारत की सुरक्षा के लिये ४० हजार स्वयं सेवक देने के संबंध में जनसंघ दल की सूचना

श्री यादवेन्द्रदत्त (जिला जौनपुर)—

अध्यक्ष महोदय, मैं भारतीय जनसंघ की ओर से यह सूचना देना चाहता हूं कि इस संकट के समय में ४० हजार स्वयंसेवक देश की सुरक्षा के लिये भारतीय जनसंघ देने को तैयार है जिनकी सेवायें सरकार जैसे भी चाहे उपयोग में ला सकती है ।

प्रश्नोत्तर

बुधवार ८ सितम्बर, १९६५

तारांकित प्रश्न

[उत्तर प्रदेश विधान सभा की प्रक्रिया तथा कार्य-संचालन नियमावली, १९५८ के नियम ३९ (२) के अन्तर्गत प्राथमिकता दिये गये तारांकित प्रश्न]

विकास खण्ड राही, में कूप निर्माण

*१—श्री रतीपाल (जिला रायबरेली)—

क्या सरकार बताने की कृपा करेगी कि जिला रायबरेली के अन्तर्गत विकास खण्ड, राही में मार्च, १९६५ ई० से १६ जून तक कितने कुओं के लिये रुपया ग्रान्ट किया गया है, आज तक कितने कुयें बन कर तैयार हुये हैं और कितने अभी तक नहीं बने और क्यों ?

मुख्य मंत्री के सभा सचिव (श्री बंशीधर पांडेय)—

विकास खंड, राही में मार्च से जून १६ तक ४० कुओं के लिये तकावी ऋण दिया गया जिसमें से केवल ६ कुयें अभी तक बन कर तैयार हुये हैं तथा शेष ३४ कुएं नहीं बने। इन कुओं के न बनने का मुख्य कारण यह है कि स्वीकृत ऋण की अन्तिम किश्त देने की तिथि से साधारणतया कृषक को कूप निर्माण पूर्ण करने हेतु एक साल का अवसर प्रदान किया जाता है। चूंकि इन कुओं में निर्धारित अवधि अभी समाप्त नहीं हुई है अतएव कूप न बनने के कारण बताने का प्रश्न नहीं उठता है।

श्री रतीपाल—

माननीय मंत्री जी मेरी सूचना को सही मान कर क्या इस बात की जांच करायेंगे कि राही ब्लाक में ८० कुएं खोदे गये जिसमें ४० उन्होंने दिखाये और ६ बने हुये बताये गये हैं और बाकी कुओं के लिये ऋण और अनुदान इसलिये नहीं दिया गया कि डी० पी० ओ० साहब ने प्रति कुआं २०० रुपया मांगा था ?

सामुदायिक विकास मंत्री (श्री राममूर्ति)—

इस बात की कोई जानकारी नहीं है। माननीय सदस्य अगर इसको लिख कर देंगे कि डी० पी० ओ० इस तरह से रुपया मांगते हैं तो हम उसकी बाकायदा इंक्वायरी करायेंगे।

श्री रतीपाल—

जब अप्रैल मास, ६५ में माननीय मंत्री ने दौरा किया था तो क्या उनको ज्ञात है कि इसी डी० पी० ओ० के खिलाफ कांग्रेस दल वालों ने तथा और लोगों ने शिकायत की थी और माननीय मंत्री ने १ लाख रुपया डी० पी० ओ० से वापस कराया था ?

श्री राममूर्ति—

कोई जानकारी इसकी नहीं है।

श्री मैनेजरसिंह (जिला बलिया)—

४० कुयें स्वीकृत किये गये थे जिनमें ६ बनाये गये तो ४० कुओं के लिये किसानों को ऋण दिया गया या नहीं ? उनके लिये सीमेंट की व्यवस्था की गयी या नहीं ?

श्री बंशीधर पांडेय—

४० कुओं के लिये कुल ४७,८६० रुपये स्वीकृत हुए, जिसमें से ३३,१४० रुपये का ऋण वितरित भी किया जा चुका है। कुओं के लिये जो अन्तिम ऋण की किश्त दी जाती है उसमें एक साल का वक्त होता है। अभी उनके पास समय है और वे बना सकते हैं।

श्री बद्रीप्रसाद पालीवाल (जिला इटावा)—

क्या सरकार अपनी नीति को स्पष्ट करेगी कि किसानों की जब कुओं के बनाने की मांग ज्यादा है तो उसके अन्तर्गत यह उनको कुयें बनाने के लिये ज्यादा अनुदान और ऋण देगी उनकी मांग के मुताबिक ?

श्री बंशीधर पांडेय—

यह बात सही है कि किसानों की मांग ज्यादा कुयें बनाने के लिये है लेकिन हमारा एक प्लान है जिसके अनुसार बजट में हम रुपया प्रोवाइड करते हैं और उसके अनुसार ऋण तथा अनुदान दिया जा सकता है।

श्री रघुनाथसिंह (जिला वाराणसी)—

अध्यक्ष महोदय, मूल प्रश्न के उत्तर में बताया गया है कि ४० कुयें बनाने थे जिनमें से केवल ६ बनें और बाकी कुओं के न बनने का कारण यह है कि किश्त की अंतिम अदायगी के बाद एक साल की मोहलत रख दी है। किसान तो चाहता है कि उसको सामान मिल जाय तो वह जल्दी से जल्दी कुयें बना लें। क्या मंत्री जी बतायेंगे कि कुओं के न बनने का मूल कारण यह है कि सीमेंट नहीं मिल सका। यदि हां, तो क्या मंत्री जी सिंचाई को महत्व देने के लिये सीमेंट वगैरह के लिये उचित कार्यवाही करेंगे ?

श्री बंशीधर पांडेय—

श्रीमन्, मार्च से जून तक रुपया बंटा है। इस बीच में जितने कुयें खुद सके वह बन गये। कुओं का अब सीजन आ रहा है और उम्मीद है कि अब बन जायंगे।

श्री जगदम्बाप्रसाद (जिला फैजाबाद)—

क्या मंत्री जी इसकी जानकारी करायेंगे कि इस किस्म की शिकायत यही नहीं बल्कि बहुत से जिलों में है कि रुपया दिया गया लेकिन कुयें नहीं बन सके ? दूसरी शिकायत यह है कि बी० डी० ओ० तथा अन्य अधिकारियों ने मिलकर रुपये का दुरुपयोग किया है ? यदि हां, तो मंत्री जी इसके लिये क्या कार्यवाही करने जा रहे हैं ?

श्री राममूर्ति—

अध्यक्ष महोदय, शिकायत का क्या सवाल है ? रुपया मार्च से जून तक बांटा गया है। रुपये मिलने के बाद १२ महीने का समय मिलता है। ६ कुयें बन गये हैं और बाकी कुओं के बनने के लिये काफी समय पड़ा हुआ है। १२ महीने खत्म हो जायं और कुयें न बनें तो कोई बात हो सकती है। यह बात जरूर हो सकती है किसी ब्लाक में रुपये मिलने के बाद सामान न मिले तो उसके बारे में यदि कोई चीज नोटिस में लाई जाये तो अधिकारियों का ध्यान दिलाया जा सकता है। यह कोई खास बात नहीं है।

मुरादाबाद शहर से शराब की दूकानें हटाने का सुझाव

*२—श्री रियासत हुसेन (जिला मुरादाबाद)—

क्या आबकारी मंत्री यह बतायेंगे कि मुरादाबाद जिले में १ जनवरी, १९६४ से ३० जून, १९६४ तक कितने नये लाइसेंस शराब, अफीम और गांजे की दूकानों के लिये दिये गये और किस-किस को दिये गये ?

शिक्षा उपमंत्री (डाक्टर रामनारायण पांडेय)—

निर्दिष्ट अवधि में मुरादाबाद जिले में अफीम तथा गांजे की दूकान के लिये कोई नया लाइसेंस नहीं दिया गया। अंग्रेजी शराब की फुटकर बिक्री का एक नया लाइसेंस सम्भल के लिये मंजूर किया गया। उसको श्री चिरंजी लाल को दिया गया।

*३—श्री रियासत हुसैन—

क्या मंत्री जी यह बताने की कृपा करेंगे कि शहर मुरादाबाद के अन्दर कितनी दूकानें शराब, गांजा और अफीम की खास बाजार में हैं और कितने दिनों से यह दूकानें चल रही हैं?

डाक्टर रामनारायण पांडेय—

अफीम तथा गांजे की कोई दूकान नहीं है। शराब के ६ ठेकों में से ४ दूकानें खास बाजार में हैं। ये दूकानें लगभग सन् १९३० के पूर्व से हैं।

श्री रियासत हुसैन—

क्या मंत्री जी यह बताएंगे कि यह जो नया लाइसेंस दिया गया उसके लिये ठेकेदार चिरंजी-लाल ने खुद दरख्वास्त दी थी, या जनता की तरफ से दरख्वास्तें आयीं थीं या कोई और कारण था जिससे नया लाइसेंस शराब का दिया गया ?

डाक्टर रामनारायण पांडेय—

इसके लिये एक कमेटी मुकर्रर होती है वह सिफारिश करती है।

श्री रियासत हुसैन—

सवाल यह है कि क्या जनता ने यह ख्वाहिश जाहिर की थी कि हमारे यहां अंग्रेजी शराब की दूकान होनी चाहिये या चिरंजीलाल जी ने दरख्वास्त पेश की या मंत्री जी के सामने कोई और कारण आये जिसकी वजह से उन्होंने उचित समझा कि वहां एक दूकान जरूर होनी चाहिये ?

चिकित्सा मंत्री (श्री दाऊदयाल खन्ना)—

संभल में जो सलाहकार समिति है, १९६१ की बात है, उसने सिफारिश की कि यहां दूकान खोली जाय। चिरंजीलाल की दरख्वास्त का सवाल नहीं था। वह सिफारिश सरकार के पास आयी। लोगों ने लाइसेंस के लिये दरख्वास्तें दीं और कलेक्टर ने जिस प्रकार नियमों के अनुसार मुनासिब समझा होगा, उसको दे दिया।

श्री शराफत हुसैन रिजवी (जिला मुरादाबाद)—

इस बात को देखते हुए कि मुरादाबाद जिले में शराब, गांजा और ताड़ी की दूकानें शहर के अन्दर हैं वहां बलवे हुआ करते हैं, क्या मंत्री जी आदेश देंगे कि शहर के बाहर दूकानें कायम की जायं ? यदि हां, तो कब तक ?

श्री दाऊदयाल खन्ना—

यह दूकानें सन् ३० से हैं।

श्री देवदत्त मिश्र (जिला उन्नाव)—

क्या माननीय मंत्री जी यह बतायेंगे कि जिन लोगों को देशी शराब बेचने का लाइसेंस दिया जाता है उनको खुली शराब बेचने का भी लाइसेंस दिया जाता है ?

श्री दाऊदयाल खन्ना—

कुछ लाइसेंस ऐसे होते हैं जहां पर बन्द बोतलों में बेचते हैं। कुछ लाइसेंस ऐसे हैं जहां पर दोनों प्रकार से बेच सकते हैं।

श्री शराफत हुसैन रिजवी--

शहर के अन्दर दूकानों पर जो रोजाना झगड़े हुआ करते हैं, क्या उसको देखते हुए मंत्री जी आदेश देंगे कि वह शहर से उठा कर बाहर कर दी जायं ?

श्री दाऊदयाल खन्ना--

झगड़े होने का सवाल ही नहीं है। सन् ३० से दूकानें हैं।

श्री अध्यक्ष--

उनका सुझाव यह है कि चूंकि आबकारी की दूकानें शहर के अन्दर न्युसेंस की वैल्यू रखती हैं, क्या इस पर विचार करेंगे कि वह शहर के बाहर कर दी जायं ?

श्री दाऊदयाल खन्ना--

न्युसेंस का सवाल इसलिये नहीं होता कि अगर शहर में न्युसेंस होता है, तो उसको बेहात में क्यों फैला दिया जाय ? सलाहकार समिति तय करती है कि कौन दूकान कहां हो। अगर माननीय सदस्य चाहते हैं, तो वहां की सलाहकार समिति, जिसमें एम० एल० ए० भी होते हैं, से सिफारिश करवा दें कि वहां से दूकान हटायी जाय तो विचार करेंगे।

श्री राजनारायण मिश्र (जिला कानपुर)--

अगर कोई गलती सन् ३० में हो गयी, तो क्या वह राइट आफ प्रेस्क्रिप्शन हो जाता है, क्या सरकार का फर्ज नहीं है कि उस न्युसेंस को रिमूव करने का प्रयास करे ?

श्री दाऊदयाल खन्ना--

माननीय सदस्य ने समझ लिया है कि दूकान चलाना जुर्म है। गवर्नमेंट लाइसेंस देती है तो जुर्म तो हुआ नहीं।

श्री मैनेजरसिंह--

क्या माननीय मंत्री बतायेंगे कि मुरादाबाद में शराब के शौकीन ज्यादा क्यों पैदा हो गये हैं ?

श्री दाऊदयाल खन्ना--

माननीय सदस्य के जिले में शायद हमारे यहां से ज्यादा शौकीन हैं।

श्री रघुवीरराम (जिला गाजीपुर)--

क्या माननीय मंत्री जी, आम तौर पर शराब की दूकानों पर जो गांजा बिकता है, उसको बन्द करवाने की कृपा करेंगे ?

श्री दाऊदयाल खन्ना--

अगर कहीं ऐसा होता है तो वह खिलाफ कानून होता है। अगर इसमें माननीय सदस्य हमारी मदद करें, जरा भी हमें सूचना दे सकें, तो हम उनके खिलाफ सख्त कार्यवाही करेंगे।

श्री श्रीराम (जिला बिजनौर)--

क्या माननीय मंत्री जी को ज्ञात है कि जिनकी दूकानें बिजनौर व मुरादाबाद में अंग्रेजी शराब की दी गयी है, वह उन्होंने पांच-पांच सौ रुपये के प्राफिट पर दूसरे लोगों को बेच रखी हैं ?

(कोई उत्तर नहीं दिया गया।)

श्री ब्रह्मदत्त मायर (जिला सहारनपुर)—

क्या माननीय मंत्री जी यह बताने की कृपा करेंगे मुरादाबाद में सन ६१ में एक दूकान मंजूर हुई और उसके बाद ६२–६३ निकल गया। किन्तु उसके बाद जब वहां पर श्री आर० एन० भटनागर, एक्साइज आफिसर आए तो यह दूकानें उनकी वजह से सन् ६४ में वहां पर खुलीं ? क्या यह सच है ?

श्री दाऊदयाल खन्ना—

यह दूकानें किसी के कारण से नहीं खुली हैं। सहकार समिति की राय थी और डिस्ट्रिक्ट मैजिस्ट्रेट ने भी उसे माना। तब दूकानें खुलीं।

श्री रियासत हुसैन—

क्या माननीय मंत्री जी को मालूम नहीं है कि अमरोहा–गेट और गंज आदि जिन चार स्थानों का मंत्री जी ने जिक्र किया, जहां-जहां पर शराब की दूकानें हैं। उन दुकानों पर शराब पीकर जो कि वहां पर हिन्दू मुसलमान पीते हैं और शराब पीने के बाद आपस में लड़ते-झगड़ते हैं, जिससे वहां पर हिन्दू मुसलमानों के दंगे होते हैं। इस चीज का सबूत उन स्थानों पर स्थित थानों पर की गयी रिपोर्टों से मिल सकता है। तो क्या इस चीज को सामने रखते हुये माननीय मंत्री जी इन चार दूकानों को शहर की उन लोकैलिटीज से हटाकर किसी दूसरी जगह ले जाने की कृपा करेंगे ?

श्री दाऊदयाल खन्ना—

अध्यक्ष महोदय, मैं तो उस जगह का स्वयं रहने वाला हूं। मैंने तो देखा नहीं है कि वहां पर इसके कारण हिन्दू मुसलमानों के झगड़े होते हों।

उन्नाव जिले में कूप निर्माण

*४—श्री श्रीराम तिवारी (जिला उन्नाव)—

क्या विकास मंत्री बताने की कृपा करेंगे कि वर्ष १९६५–६६ में अब तक उन्नाव जिले के किस ब्लाक में कितने सिंचाई के कूपों के निर्माण के लिये कितनी-कितनी सीमेंट व कितनी-कितनी धनराशि तकावी देने हेतु मांग की गई और उन्हें कितनी सीमेंट व धनराशि दी गयी ?

श्री बंशीधर पांडेय—

सूचना संलग्न है।

(देखिये नत्थी 'क' आगे पृष्ठ २९९ पर)

*५—श्री श्रीराम तिवारी—

क्या विकास मंत्री बताने की कृपा करेंगे कि वर्ष १९६५–६६ में अब तक उन्नाव जिले में किस ब्लाक में कितने सिंचाई के कूप निर्मित हुये और कितने सीमेंट के अभाव में अर्द्ध निर्मित पड़े हैं ?

श्री बंशीधर पांडेय—

सूचना संलग्न है।

(देखिये नत्थी 'क' आगे पृष्ठ २९९ पर)

श्री श्रीराम तिवारी—

क्या माननीय मंत्री जी यह बताने की कृपा करेंगे कि जो सीमेंट और तकावी विभिन्न ब्लाकों को एलाट की गयी है, उसमें जो उनकी मांग थी उससे बहुत कम एलाट की गयी है और कुछ

ब्लाकों में जिनमें सीमेंट और तकावी की मांग बहुत कम थी, वहां के वास्ते सीमेंट और तकावी अधिक एलाट की गयी है, इसका क्या कारण है ? नवाबगंज ब्लाक में जिसमें १०० कुओं के लिये १,७०० बोरी सीमेंट की मांग की गयी थी, उसमें ६२०....

श्री अध्यक्ष--

यह तो आप भाषण दे रहे हैं, प्रश्न कीजिये।

श्री श्रीराम तिवारी--

मेरे यहां उन्नाव जिले के विकास खंडों में सीमेंट बहुत कम दी गयी है और बहुत से ऐसे विकास खंड हैं जहां पर कम मांग थी, कुंयें कम बनने थे, वहां पर ज्यादा दी गयी। तो मैं मंत्री जी से जानकारी करना चाहता हूं कि ऐसा क्यों किया गया ?

श्री राममूर्ति--

अध्यक्ष महोदय, यह जो सूची दी गयी है मुझे, इसमें यह तो दिया गया है कि कितनी-कितनी सीमेंट किस-किस ब्लाक को दिया गया है, किन्तु इसमें इस बात का जिक्र नहीं है कि कितनी कितनी मांग के विपरीत इस मात्रा में सीमेंट दी गयी है। लेकिन जैसा कि माननीय सदस्य फरमा रहे हैं जहां ज्यादा मांग थी वहां कम दी गयी और जहां कम थी वहां ज्यादा दी गयी। तो यह गलत बात है और यदि माननीय सदस्य लिखकर इसका विवरण देंगे तो हिदायत हम कर देंगे कि इस प्रकार की गलत बात नहीं होनी चाहिये।

श्री नरसिंहनारायण पांडेय (जिला गोरखपुर)--

माननीय मंत्री जी ने जो सूचना दी, तो इसको देखते हुये क्या माननीय मंत्री जी यह बताने की कृपा करेंगे कि जो कुवें ऐसे हैं जो सीमेंट के अभाव में अभी निर्मित नहीं हो पाये हैं, उनके निर्माण के लिये आप क्या उपक्रम करने जा रहे हैं ?

देश में संकटकालीन स्थिति होने के कारण सदन की बैठक स्थगित करने का सुझाव

श्री नेकराम शर्मा (जिला अलीगढ़)--

श्रीमन्, मैं चाहता हूं कि असेम्बली का कार्य तुरन्त बन्द कर दिया जाय क्योंकि मेरठ जिले में छाताधारी पाकिस्तानी सिपाही उतरे हैं उनकी वजह से बहुत महत्वपूर्ण और संकटपूर्ण स्थिति आज हमारे सामने आ गयी है। आप सदन की कार्यवाही को १५ मिनट के लिये स्थगित कर दीजिये ताकि नेता लोग आपस में परामर्श करें और सदन की कार्यवाही बन्द कर दीजाय। मैं आपसे और माननीय बनारसीदास जी से प्रार्थना करना चाहता हूं कि आप माननीय सदस्यों और माननीय नेताओं को मौका दें कि वे तुरन्त जाकर अपने-अपने क्षेत्रों में छाताधारी सैनिकों को पकड़वाने में मदद दें। यह बहुत ही संकटकालीन अवस्था है और इसलिये आप १५ मिनट के लिये सदन को अभी स्थगित कर दें।

श्री जे० पी० मिश्र (जिला हरदोई)--

मैं मांग करता हूं कि असेम्बली तुरन्त बन्द कर दी जाय जिससे हम अपने-अपने क्षेत्रों में जाकर काम करें। मैं चाहता हूं कि असेम्बली को तुरन्त बन्द कर दिया जाय।

श्री लखपतराम शर्मा (जिला झांसी)--

यह स्थिति नहीं है कि हम असेम्बली चलावें और हमारा कर्त्तव्य अपने-अपने क्षेत्रों में अधिक है। इसलिये मैं भी समझता हूं कि असेम्बली का कार्य तुरन्त बन्द कर दिया जाय।

सहकारिता मंत्री (श्री बनारसीदास)----

मैं समझता हूं कि पैनिकी होने की जरूरत नहीं है। हमें सब चीजों पर बहुत गम्भीरता से विचार करना है। सदन को इस तरह से स्थगित करने पर जनता पर असर पड़ सकता है। अभी माननीया मुख्य मंत्री जी आ रही हैं आपके सामने, जैसा सभी नेताओं से बातें हुई हैं, वह एक प्रस्ताव भी रखेंगी और साथ ही साथ हमें क्या करना चाहिये यह भी बतायेंगी। यह मैं सदन को बता देना चाहता हूं कि हमें पैराट्रूपर्स की परवाह नहीं है। उनकी पूरी तरह से सतर्कता से, दृढ़ता से पकड़ने का इंतिजाम किया जा रहा है, सभी जगह हमारे अधिकारी सतर्क हैं। हमें अपनी तरफ से मनोबल को कायम करना चाहिये चाहे हम असेम्बली में रहें, चाहे जहां भी हों हम दृढ़ता से अपने कामों को पूरा करेंगे।

श्री रामायणराय (जिला देवरिया)--

मान्यवर, मैं माननीय सदन के सदस्यों की जानकारी के लिये बताता हूं कि हमारी सेनायें.....

श्री अध्यक्ष--

यह आप किस आधार पर कह रहे हैं ?

श्री रामायणराय--

यह पी० टी० आई० का समाचार आया है कि जयपुर सेक्टर से हमारी सेनायें सिन्ध के लिये रवाना हो गयी हैं।

श्री अध्यक्ष--

आप लोग शान्त रहिये। माननीय संसदीय मंत्री ने कहा है कि मुख्य मंत्री जी अभी आ रही हैं उनको आने दीजिये फिर हम विचार करेंगे।

प्रश्नोत्तर (क्रमागत)

श्री अध्यक्ष--

माननीय विकास मंत्री, नरसिंहनारायण पांडेय जी के प्रश्नों का उत्तर दीजिये। माननीय कांडपाल जी, जरा शान्त हो जावें।

श्री राममूर्ति--

माननीय पांडेय जी ने फरमाया कि बहुत से कुयें अधबने पड़े हैं तो हमारे यहां का जो नियम है उसके अनुसार अगर किसी कुयें के लिये नहीं मिला तो वह लोग दरख्वास्त दें उनको सीमेंट की कमी है तो उनकी दरख्वास्त पर गौर किया जाता है और मामूली तरीके से २० बोरी सीमेंट दिया जाता है अगर उससे कम रहता है तो उसका प्राविधान किया जाता है।

श्री देवदत्त मिश्र--

सीमेंट न मिलने के कारण समय के अन्तर्गत जो कुयें नहीं बन पाये हैं उनसे २५ परसेंट काट लिया जाता है उसको न कटवाने का आदेश देंगे ?

श्री बंशीधर पांडेय--

इस संबंध में डेवलपमेंट कमिश्नर ने हम लोगों का ध्यान आकर्षित किया है और हम यह कर भी रहे हैं कि जो कट जाता है उसको कैसे दे दिया जाय इस पर हम विचार कर रहे हैं।

श्री पुरुषोत्तमलाल बधवार (जिला बदायूं)--

केन्द्रीय सरकार की सूचना यह है कि अगले महीने से सीमेन्ट डिकंट्रोल हो रहा है तो क्या हमारी सरकार का भी विचार है कि सीमेन्ट को डिकंट्रोल कर दिया जाय ?

श्री राममूर्ति--

अभी तक जो केन्द्रीय सरकार का निश्चय हुआ है उसके बारे में हमारे यहां कायदे से खबर नहीं आई है लेकिन यह सुना है कि डिकंट्रोल होने के बाद भी जो सरकारी काम बनता है या सरकार के जरिये से जो काम बनाया जाता है उसके लिये सीमेन्ट रिजर्व किया जायगा और उसके लिये कोटा अलग से निर्धारित किया जायगा।

[८ सितम्बर, १९६३ के लिये निर्धारित तारांकित प्रश्न]

*१-२--श्री कमलासिंह यादव (जिला गाजीपुर)--

[स्थगित किये गये।]

३--श्री माधवप्रसाद त्रिपाठी (जिला बस्ती) तथा श्री जगन्नाथ राव (जिला जौनपुर)--

[स्थगित किया गया।]

बाराबंकी जिले में जन-शक्ति योजनान्तर्गत सड़कों का निर्माण

*४--श्री रामकिशोर त्रिपाठी (जिला बाराबंकी)--

क्या सरकार बताने की कृपा करेगी कि मुख्य अभियन्ता सार्वजनिक निर्माण विभाग, उत्तर प्रदेश ने अपने पत्र संख्या ५८९, मार्च, १९६५ द्वारा बाराबंकी जिले में जनशक्ति योजना के अन्तर्गत सड़कों के निर्माण के संबंध में कोई पत्र अधीक्षण अभियन्ता, अल्प सिंचाई विभाग, उत्तर प्रदेश को लिखा है? यदि हां, तो इस पत्र में किन-किन सड़कों को इस योजना में शामिल करने का सुझाव दिया गया है और उस पर अब तक क्या कार्यवाही की गयी है? क्या सरकार पत्र की एक प्रतिलिपि सदन की मेज पर रखेगी?

श्री बंशीधर पांडेय---

जी हां, निम्नलिखित तीन सड़कों को ग्रामीण जनशक्ति योजना में लेने का सुझाव दिया था:--

१--हैदरगढ़-सुबेहा सड़क

२--हैदरगढ़-महाराजगंज सड़क

३--भिलवल-हसवापुर-गुढ़ा सड़क

इन सड़कों की लागत आदि के ब्लाकवार आंकड़े भेजने के लिए--यदि वे सड़कें इस योजना में स्वीकृत ब्लाकों में पड़ती हैं--मुख्य अभियन्ता को लिखा गया है। पत्र की प्रतिलिपि (क) पर संलग्न है।

(देखिये नत्थी 'ख' आगे पृष्ठ ३०० पर)

*५--श्री रामकिशोर त्रिपाठी--

क्या यह बात सही है कि उक्त पत्र द्वारा जिला अभियन्ता सार्वजनिक निर्माण विभाग, बाराबंकी को यह भी लिखा गया है कि वह उक्त पत्र में उल्लिखित सड़कों के सम्बन्ध में पूर्ण सूचनायें चेक लिस्ट पी० में जिला नियोजन अधिकारी बाराबंकी को भी भेज दें और उस की एक प्रतिलिपि अधीक्षण अभियन्ता (अल्प सिंचाई) उत्तर प्रदेश को भी भेज दें? यदि हां, तो इस सम्बन्ध में क्या कार्यवाही हुई? क्या सरकार इन चेक लिस्ट पी० से सम्बन्धित पत्रों की एक-एक प्रति सदन की मेज पर रखने की कृपा करेगी?

श्री बंशीधर पांडेय--

जी हां। परिशिष्ट (ख) द्वारा मुख्य अभियन्ता सार्वजनिक निर्माण विभाग से निवेदन किया गया था कि यदि ये सड़क योजनान्तर्गत स्वीकृत ब्लाकों म पड़ती हों तभी चेक लिस्ट

(बी) पर सूचना प्रेषित की जाय। परिशिष्ट (ग) द्वारा जिला अभियन्ता, सार्वजनिक निर्माण विभाग ने सूचित किया कि यह सड़कें स्वीकृत रुदौली में नहीं पड़ती बल्कि हैदरगढ़ तथा त्रिवेदीगंज ब्लाक में पड़ती हैं ऐसी दशा के इन सड़कों को चेक लिस्ट "बी" की सूचनायें-फिलहाल जब तक भारत सरकार द्वारा योजनान्तर्गत नये ब्लाकों को लेने की अनुमति नहीं मिलती, भेजने का प्रश्न नहीं उठता।

(देखिये नत्थी 'ख' आगे पृष्ठ ३०० पर)

*६--श्री रामकिशोर त्रिपाठी--

क्या यह बात सही है कि पत्र संख्या ५८९ में अधीक्षण अभियन्ता अल्प सिंचाई विभाग को यह भी लिखा गया है कि चेक लिस्ट पी० अधिशासी अभियन्ता प्रान्तीय खण्ड फैजाबाद द्वारा भेजने का उल्लेख किया गया है ? यदि हां, तो क्या सरकार कृपया बतायेगी कि फैजाबाद के उक्त अभियन्ता ने अधीक्षण अभियन्ता अल्प सिंचाई विभाग, उत्तर प्रदेश को चेक लिस्ट पी० भेज दी है ? यदि हां, तो वह कब ? यदि नहीं, तो क्यों ? क्या सरकार इसकी प्रति-लिपि सदन की मेज पर रखते हुये यह बताने की कृपा करेगी कि उक्त पत्रों के अनुसार इनमें उल्लिखित सड़कों को जनशक्ति योजना में शामिल कर लिया गया है ? यदि हां, तो कब तक कार्य प्रारम्भ हो जायेगा ? यदि नहीं, तो क्यों ?

श्री बंशीधर पांडेय--

जी हां। जी नहीं, चेक लिस्ट (बी) न भेजने के कारण प्रश्न संख्या ५ में दिये हैं जिनके अनुसार फिलहाल इन सड़कों को ग्रामीण जनशक्ति योजना के अन्तर्गत शामिल करने या कार्य आरम्भ करने का प्रश्न नहीं उठता

श्री रामकिशोर त्रिपाठी--

क्या माननीय मंत्री जी इन सड़कों की उपयोगिता और महत्ता को देखते हुए इन हैदरगढ़ और त्रिवेदीगंज के ब्लाकों को भी उस योजना के अन्दर शामिल करने की कृपा करेंगे ?

श्री बंशीधर पांडेय--

इस प्रदेश में बहुत सी ऐसी सड़कें हैं और बहुत से ऐसे ब्लाक हैं जो महत्वपूर्ण हैं लेकिन वे धनराशि को देखते हुये और योजना को सामने रखते हुये उसमें रखे जाते हैं और उसके अनुसार ही सरकार अपना प्लान बनाती है।

श्री रामकिशोर त्रिपाठी--

क्या माननीय मंत्री जी इस बात पर विचार करेंगे कि जब योजना को कंसीडर किया जाय तो इन पिछड़े हुये ब्लाकों को भी उसमें प्राथमिकता दी जाय ?

श्री राममूर्ति--

इन ब्लाकों की संख्या बहुत बड़ी है। हमने गवर्नमेंट आफ इंडिया से यह दरख्वास्त की है कि चौथी प्लान के अन्दर हम को ५० करोड़ रुपया इस काम के लिए दिया जाय क्योंकि हम हर जिले में छांटकर ब्लाकों में सब जगह इस काम को करना चाहते हैं। यह इस बात पर मुनहस्सर करता है कि कितना रुपया गवर्नमेंट आफ इंडिया से मिलता है। जितनी स्कीम आई हैं उनको प्रायोरिटी मिली हुई है। उनके हिसाब से जरूर शामिल किया जायगा।

श्री मैनेजर सिंह--

इन विकास खंडों की स्वीकृति सरकार देती है। क्या सरकार बतायेगी कि क्या केन्द्रीय सरकार इस वर्ष भी कुछ ब्लाकों की अनुमति देने वाली है और क्या इसके लिये कोई सूची राज्य सरकार बना रही है ?

श्री बंशीधर पांडेय--

श्रीमन, जब भारत सरकार अपना इंडिकेशन करेगी कि हम इतने ब्लाक पूरे देश में लेंगे तो उत्तर प्रदेश में कितने ब्लाक पड़ेंगे उस सूचना के अनुसार हम उनको छांटेंगे ।

श्री बृजबिहारी (जिला आजमगढ़)--

जनशक्ति उपयोग योजना के अन्तर्गत बहुत से कामों की सूची केन्द्रीय सरकार में स्वांकृति के लिये भेजी गयी थी और यह अनुरोध किया गया था कि चौथे चरण में इनको कार्यान्वित किया जाय, बहुत से उनमें से वापस आ गये हैं । तो क्या मंत्री जी फिर से उनसे अनुरोध करने के लिये तैयार हैं कि वह योजना के चौथे चरण में ले लिये जायं ?

श्री बंशीधर पांडेय--

जैसा कि विकास मंत्री जी ने अभी कहा कि जो पंचायती राज मंत्रियों की कान्फरेंस अभी श्रीनगर में हुई थी उसमें इसके लिये भी चर्चा हुई थी और यह कहा गया था कि इसके लिये दो सौ करोड़ रुपया चाहिये, लेकिन भारत सरकार अभी केवल ५० करोड़ रुपये का प्राविधान इसके लिये कर रही है । डेढ़ सौ ब्लाक हमने भेजे थे उनमें से केवल ३५ स्वीकृत हो कर आये हैं ।

श्री ऊदल--

इस बात को देखते हुए कि प्रतापगढ़ में हैदरगढ़ और त्रिवेदीगंज में सड़कों का बिल्कुल अभाव है और इस तरह की रिपोर्ट भी क्षेत्री अभियन्ता ने दी है, तो क्या इस बात को ध्यान में रखते हुए मंत्री जी पुनः विचार करेंगे कि इन ब्लाकों को ले लिया जाय ?

श्री राममूर्ति--

पुनः विचार किया जा सकता है और इसके बाद दुबारा भी विचार किया जा सकता है, लेकिन कोई आश्वासन नहीं दिया जा सकता कि यह कौन सी योजना में लिये जायंगे ।

श्री ब्रह्मदत्त मायर--

प्लानिंग कमीशन और केन्द्रीय सरकार ने प्रान्तीय सरकारों से यह कहा है कि ज्यादा से ज्यादा श्रम वे अपने यहां जुटाने की कोशिश करें और क्या बहुत से कार्य इसलिये नहीं रुके पड़े हैं कि उनके लिये धन उपलब्ध नहीं है और क्या सरकार उनके लिये धन उपलब्ध कराने की कोशिश करेगी ?

श्री बंशीधर पांडेय--

यह योजना ५० फीसदी भारत सरकार की सहायता से चलती है और ५० फीसदी उत्तर प्रदेश को जो लोन मिलता है, उस से चलती है, तो भारत सरकार जितना रुपया देगी उस पर तो कार्य होगा ही, लेकिन अगर आप उसके साथ अपने साधन जुटा लें तो काम और जल्दी हो सकेगा।

श्री नाथूराम शिवाक (जिला इलाहाबाद)--

ग्राम शक्ति उपयोग योजना के अन्तर्गत इलाहाबाद जिले में ८ ब्लाक लिये गये हैं और वहां स्थिति इस प्रकार की है कि जो भी काम वहां हुआ है वह केवल प्रधान मन्त्री जी के क्षेत्र में ही हुआ है, और बाकी के क्षेत्र वैसे ही पड़े हैं । तो क्या मैं मन्त्री जी से और सरकार से आपके द्वारा प्रार्थना कर सकता हूं कि एक ही स्थान पर सारे साधन केंद्रित न किये जायं ?

श्री अध्यक्ष--

वह कहते हैं कि मंत्री लोग अपने क्षेत्र में इसको इस्तेमाल कर लेते हैं ।

श्री रामकिशोर त्रिपाठी---

पिछले सत्र में २८-४-६५ को सरकार की ओर से कहा गया था कि यह सड़क सरकार के विचाराधीन है और सहानुभूति है। विभाग ने भी कहा है कि सड़क इस योजना में शामिल कर ली जाय, लेकिन इस उत्तर में यह नहीं लिखा। तो क्या मंत्री जी आश्वासन देने के लिए तैयार हैं कि विभाग को आदेश दे देंगे कि जब इस केस को कंसीडर किया जाय बढ़ोत्तरी के लिए, तो इन ब्लाकों का खयाल रखें और विशेषरूप से ध्यान दें ?

श्री बंशीधर पांडेय---

अब इस संबंध में कुछ नहीं कह सकता।

श्री रघुनाथसिंह---

क्या मंत्री जी योजना आयोग के पास ऐसी प्रार्थना करेंगे कि वह चुने हुए भू-भागों को ही विकास के लिए न चुने, बल्कि थोड़ी-थोड़ी सहायता सब जगह की जाय ताकि सब जगह की जनता लाभान्वित हो ?

श्री बंशीधर पांडेय---

हर एक भू-भाग को बांटने की बात नहीं है। जहां पर कि लेबर इंटेंसिव एरिया है, आदमी ज्यादा काम करने वाले हैं तो उनको ऐसा काम दें जिस में वह लग जायं।

श्री देवदत्त मिश्र---

क्या सरकार यह नीति निर्धारण करेगी कि उन्हीं जिलों को लिया जायगा जो आर्थिक दृष्टि से और औद्योगिक दृष्टि से पिछड़े हैं ?

श्री बंशीधर पांडेय---

भारत सरकार ने जो नीति निर्धारित की है उसमें यह है कि जहां पर आदमी की बहुतायत होती है और काम की कमी होगी वहां पर ऐसे कार्यों को लेकर उन को एम्पलायमेंट दिया जाय।

*७-९---श्री लखीसिंह (जिला मथुरा)---

[स्थगित किये गये।]

गुप्ता कुष्ठ चिकित्सालय, खीरी

*१०---श्री छदालाल चौधरी (जिला खीरी) तथा श्री संकटासिंह (जिला खीरी)---

क्या स्वास्थ्य मंत्री कृपया बताने की कृपा करेंगे कि नगरपालिका, लखीमपुर खीरी ने अपने एक प्रस्ताव संख्या १८, दिनांक ११ जनवरी १९६५ ई० द्वारा स्वास्थ्य विभाग से सार्वजनिक स्वास्थ्य विभाग के हित में कुष्ठ अस्पताल को लखीमपुर-खीरी की आबादी से हटाने के लिए प्रार्थना की है ? यदि हां, तो उस पर क्या कार्यवाही हुई है ?

डाक्टर रामनारायण पांडेय---

जी हां। परन्तु गुप्ता कुष्ठ चिकित्सालय, खीरी को किसी दूसरे स्थान पर हटाना सम्भव नहीं है, क्योंकि कोई उपयुक्त स्थान तथा भवन उपलब्ध नहीं है, जहां इसे हटा कर बसाया जाय। यह चिकित्सालय चारों तरफ चहारदीवारी से घिरा है और शहर के एक किनारे पर स्थित है।

गोंडा जिला परिषद् में गबन की जांच

*११—श्री सुखदेवप्रसाद (जिला गोंडा)—

क्या यह सत्य है कि जिला परिषद्, गोंडा के अध्यक्ष एवं सेक्रेटरी ने मिलकर ४, ५ लाख रुपया गबन किया है जिसके कागजात जून, १९६५ के अन्तिम सप्ताह में सील किये गये ? यदि हां, तो पूर्ण ब्योरा देने की कृपा करेंगे ?

श्री बंशीधर पांडेय—

जिला परिषद्, गोंडा के लेखाओं में गम्भीर वित्तीय अनियमितताओं तथा गबन का संदेह है। अतः परिषद् के लेखाओं का स्पेशल आडिट कराया जा रहा है। स्पेशल आडिट के के पूरा होने पर ही इस सम्बन्ध में स्थिति स्पष्ट हो सकेगी।

श्री सुखदेवप्रसाद—

क्या माननीय मंत्री जी बताने की कृपा करेंगे कि जिला परिषद्, गोंडा के लेखे-जोखे में घोर अनियमितताओं और गबन का संदेह है तो क्या सरकार ने उन लेखों को जून, १९६५ में सील कर दिया था ? यदि हां, तो यह संदेह कब और कैसे हुआ और इस तथ्य का पता कैसे लगा, यह बताने की कृपा करेंगे ?

श्री बंशीधर पांडेय—

इस संबंध में विस्तृत रूप से कहने में असमर्थ हूं। यह तो जांच हो रही है और जांच अधिकारी जब रिपोर्ट देंगे तभी किसी कार्यवाही पर विचार हो सकता है।

श्री जगन्नाथ राव—

सरकार को इन वित्तीय अनियमितताओं की सूचना कब और किस सोर्स हुई, क्या माननीय मंत्री जी बताने की कृपा करेंगे ?

श्री बंशीधर पांडेय—

इसके लिये सूचना की आवश्यकता होगी।

श्री मैनेजर सिंह—

मैं यह जानना चाहता हूं कि जिस एग्जीक्यूटिव आफिसर तथा जिन अधिकारियों के कार्यालय में यह अनियमितताएं हुई हैं, क्या उनसे लाभ उठाने के लिये ही उनको बलिया भेज दिया गया है ?

(उत्तर के लिये मंत्री जी को नहीं पुकारा गया।)

श्री जगदम्बाप्रसाद—

क्या सरकार बताने की कृपा करेगी कि वह जांच किस अधिकारी से करा रहे हैं ?

श्री बंशीधर पांडेय—

अभी तो स्पेशल आडिट पार्टी इसको देख रही है।

श्री सुखदेवप्रसाद—

इस बात को देखते हुए कि जिस एकाउन्टेंट ने अनियमितता की है वह चोरी से कागजात ठीक कर रहा है, क्या सरकार उसको तुरन्त निलम्बित करने की कृपा करेगी ?

श्री राममूर्ति—

अध्यक्ष महोदय, अभी तो कोई चीज सामने आयी नहीं है। अब स्पेशल आडिट वगैरह हो जाये, केस सामने आये, उसकी रिपोर्ट पर विचार हो, तब सोचा जायेगा, क्या किया जाय।

श्री सुखदेवप्रसाद---

जो कागजात सील किये गये हैं क्या उनमें वह कागजात भी सील किये गये हैं जो कि एक क्लर्क, मोहम्मद यूसुफ साहब के घर पर निकले ह ? यदि हां, तो क्या सरकार उनकी जांच कर रही है ?

श्री बंशीधर पांडेय---

यह विवरण की बातें हैं, पूरी जानकारी इस समय नहीं है, आडिट हो रहा है, उसके बाद सब चीजें सामने आयगी।

श्री सुखदेवप्रसाद---

जो श्रीमन्, उत्तर दिया है उससे संतोष नहीं हो रहा है। इसलिये आप इसको स्थगित कर दें और जब पूरी जानकारी आ जाये तब इसे रख दें ?

श्री अध्यक्ष---

आप नियम ५० पढ़ लें, इसके लिये वही तरीका है।

फर्रुखाबाद जिले में पंचायत मंत्रियों का अवशेष वेतन

*१२---श्री होरीलाल यादव (जिला इटावा)---

क्या सरकार बताने की कृपा करेगी कि फर्रुखाबाद जिले के पंचायत मन्त्रियों का वेतन पिछले मास का बाकी पड़ा है ? यदि बाकी पड़ी है, तो उसे अदा करने के लिये क्या कार्यवाही हो रही है ?

श्री बंशीधर पांडेय---

जिला फर्रुखाबाद के पंचायत मंत्रियों का केवल जुलाई मास का वेतन भुगतान हेतु अवशेष है और अब इसका भी भुगतान किया जा रहा है।

श्री होरीलाल यादव---

श्रीमन्, जुलाई मास का वेतन अभी तक नहीं मिला है। यह सितम्बर मास चल रहा है। तो क्या सरकार ऐसा प्रबन्ध करेगी कि मंत्रियों को वेतन समय से मिल जाया करे ?

श्री बंशीधर पांडेय---

वेतन समय से मिलने का पूरा प्रबन्ध है। इसमें तो फार्म आदि भरने में कुछ गलती हो गयी थी, इस कारण इसमें देरी हो गयी।

*१३---श्री बिपिनबिहारी तिवारी (जिला सीतापुर)---

[स्थगित किया गया।]

सहकारी पय-परिषद्, कानपुर का आडिट

*१४---श्री शिवनार्थसिंह (जिला कानपुर) (अनुपस्थित)---

क्या सहकारिता मंत्री कृपया बतायेंगे कि जिला सहकारी पय-परिषद्, कानपुर का आडिट सन् १९६२ व १९६३ में किया गया और आडिट रिपोर्ट में गम्भीर आरोपों के साथ सरकार को स्पेशल रिपोर्ट भेजी गई ? यदि हां, तो सरकार ने उस पर क्या कार्यवाही की ?

श्री बनारसीदास---

सहकारी पय-परिषद्, कानपुर का सहकारी वर्ष १९६०-६१ का आडिट वर्ष १९६२ में तथा सहकारी वर्ष १९६१-६२ का आडिट वर्ष १९६३ में हुआ, परन्तु आडिट रिपोर्ट के साथ

कोई स्पेशल रिपोर्ट नहीं भेजी गई । अतः सरकार द्वारा कोई कार्यवाही करने का प्रश्न नहीं उठता ।

*१५—श्री शिवनार्थसिंह (अनुपस्थित)—

क्या सहकारिता मंत्री कृपया बतायेंगे कि जिला कानपुर के अन्तर्गत सहकारी संघ, घुघुवा व संबंधित समितियों का जनरल आडिट सन् १९६४-६५ में किया गया और उसकी स्पेशल रिपोर्ट सरकार को प्राप्त हुई ? यदि हां, तो उस पर अब तक क्या कार्यवाही की गई ?

श्री बनारसीदास—

जी हां ।

जनरल आडिट वर्ष ६४-६५ में हो चुका है परन्तु कोई स्पेशल रिपोर्ट नहीं प्राप्त हुई है । अतः उस पर कार्यवाही करने का प्रश्न नहीं उठता ।

*१६—श्री शिवनार्थसिंह (अनुपस्थित)—

क्या सहकारिता मंत्री बताने की कृपा करेंगे कि मारकेटिंग सोसाइटी, रूरा, जिला कानपुर का आडिट सन् १९६४ में किया गया और उस आडिट रिपोर्ट में गबन व अष्टाचार के गम्भीर आरोप थे ? यदि हां, तो उस आडिट रिपोर्ट के आधार पर क्या कार्यवाही की गई और यदि नहीं, तो क्यों ?

श्री बनारसीदास—

जी हां ।

मारकेटिंग सोसाइटी द्वारा रूरा का सहकारी वर्ष १९६२-६३ का आडिट वर्ष १९६४ के मई व जून मास में किया गया । इस वर्ष की आडिट रिपोर्ट में गबन व अष्टाचार का उल्लेख नहीं है, अतः अन्य प्रश्न नहीं उठते ।

गोरखपुर सदर अस्पताल में वार्ड मास्टर की गिरफ्तारी

*१७—श्री नरसिंहनारायण पांडेय—

क्या स्वास्थ्य मंत्री यह भी बतायेंगे कि गोरखपुर सदर अस्पताल के एक्सरे विभाग में कितने कर्मचारियों की जरूरत किस-किस कार्य हेतु होती है तथा अभी तक कितने उपलब्ध हैं ? बाकी को पूरा करने हेतु क्या-क्या कार्यवाहियां की गयीं ? यदि नहीं, तो क्यों ?

डाक्टर रामनारायण पांडेय—

गोरखपुर सदर अस्पताल के एक्सरे विभाग में एक रेडियो लाजिस्ट, एक एक्सरे टैक्नीशियन व एक वार्ड ब्वाय कार्य कर रहे हैं जो वहां के कार्य के लिये पर्याप्त हैं ।

*१८—श्री नरसिंहनारायण पांडेय—

क्या स्वास्थ्य मंत्री यह भी बतायेंगे कि गोरखपुर सदर अस्पताल में कोई वार्ड मास्टर को घूस लेते हुए जुलाई के तीसरे सप्ताह में पुलिस ने पकड़ा ? यदि हां, तो पूरा विवरण सदन की मेज पर रक्खेंगे ?

डाक्टर रामनारायण पांडेय—

गोरखपुर, सदर अस्पताल के वार्ड मास्टर, श्री दयाशंकर लाल को १७ जुलाई, १९६५ को पुलिस ने एक व्यक्ति से २० रु० घूस लेने के आरोप में गिरफ्तार किया । असलियत का पता कचेहरी के फसले के बाद ही ज्ञात हो सकेगा ।

श्री नरसिंहनारायण पांडेय--

क्या माननीय मंत्री हमारी इस सूचना को सही मान कर कि एक्सरे विभाग में जो डाक्टर रखे गये हैं वे पर्याप्त नहीं हैं और वहां पर एक और डिपार्टमेंट है जो एक्सरे विभाग के अन्तर्गत ही आता है। इस तरह से एक टैक्नीशियन जो एक्सरे का काम करता है वहां पर उसको दूसरा भी काम करना पड़ता है। तो क्या इसकी आवश्यकता को देखते हुए इसकी जांच कराने की कृपा करेंगे कि और स्थान वहां बढ़ाये जायं?

श्री दाऊदयाल खन्ना---

जितनी जगहें हैं वहां पर स्टाफ काम कर रहा है और इस पर सरकार मुतमईन है कि वहां स्टाफ की जरूरत नहीं है। लेकिन अगर माननीय सदस्य चाहते हैं तो उसकी मालूमात कर लेंगे।

श्री नरसिंहनारायण पांडेय--

क्या माननीय मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि जो यह वार्ड मास्टर २० रु० घूस लेते हुए पकड़ा गया वह किसी की आज्ञा से पकड़ा गया.....

श्री अध्यक्ष--

किसी की आज्ञा से आपका मतलब क्या है?

श्री नरसिंहनारायण पांडेय--

किसने आर्डर दिया जिससे पुलिस ने पकड़ा?

श्री दाऊदयाल खन्ना---

किसी की आज्ञा का सवाल नहीं। कोई शिकायत पहुंची होगी, पुलिस वहां गई होगी और उसने पकड़ लिया। इस पर वार्ड मास्टर ने कहा कि जमीन पर गिरे हुये थे। अगर जमीन पर गिरे हुए थे तो यह चीज अदालत में तय होगी।

श्री नरसिंहनारायण पांडेय--

श्रीमन्, जो रुपया कहते हैं कि जमीन पर गिरा हुआ पकड़ा गया तो क्या उसमें दस-दस के दो नोट बताये जाते हैं और क्या वे वही रुपये पकड़े गये जिन पर अधिकारी के दस्तखत थे?

श्री दाऊदयाल खन्ना--

यह तो हमारे पास नहीं है, सब चीज अदालत में आयेगी।

गोंडा जिले में सहकारी बीज भण्डारों के मुअत्तल सुपरवाइजर

*१९--श्री द्विजेन्द्रनारायण (जिला बाराबंकी)--

क्या सहकारिता मंत्री बताने की कृपा करेंगे कि गोंडा जिले में कहां-कहां कोआपरेटिव सीड स्टोर हैं और हर एक सीड स्टोर पर कौन कौन सुपरवाइजर कब-कब से काम कर रहे हैं?

श्री बनारसीदास---

बांछित विवरण संलग्न है।

(देखिए नत्थी 'ग' आगे पृष्ट ३०१-३०५ पर)

*२०—श्री द्विजेन्द्रनारायण—

अप्रैल, सन् १९६२ से जुलाई, सन् १९६५ तक कौन-कौन सुपरवाइजर सस्पेंड हुए और किन-किन अपराधों में ? किन-किन के मुकदमें कोर्ट में दिये गये और कोर्ट ने क्या क्या निर्णय दिया ?

श्री बनारसीदास—

बांछित विवरण संलग्न है ।

(देखिये नत्थी 'ग' आगे पृष्ठ ३०१–३०५ पर)

*२१—श्री द्विजेन्द्रनारायण—

ऐसे कौन-कौन लोग हैं जो कोर्ट से बरी हो जाने के बाद भी अभी तक उन्हें नियुक्त पुनः नहीं किया गया और न उनके वेतन का भुगतान ही किया गया ? क्या सरकार ऐसा प्रबन्ध करेगी कि उनके वेतन आदि का भुगतान शीघ्र हो जावे ?

श्री बनारसीदास—

यह प्रश्न नहीं उठता ।

श्री द्विजेन्द्रनारायण—

क्या सरकार बतायेगी कि ऐसे सुपरवाइजर्स जो जिला गोंडा में काम कर रहे हैं और जिनको एक ही स्थान पर तीन वर्ष से अधिक हो गये हैं, उनका स्थानान्तरण क्यों नहीं किया गया ?

श्री बनारसीदास—

जो सुपरवाइजर्स हैं वे एक जिले के अन्दर पांच-छः सात साल तक रहते हैं और गोंडा के अन्दर ऐसे सुपरवाइजर्स हैं नहीं, जो छः, सात साल से ज्यादा हों और कुछ लोगों का ट्रांसफर भी किया गया है ।

श्री जगन्नाथ राव—

गोंडा जिले में जो २५ स्थानों पर बीज गोदाम हैं उनमें से जो चार स्थानों के सुपरवाइजर्स थे वे अनियमित गबन के मामले में निलम्बित किये गये । आप इसको देखते हुए जांच करायेंगे कि यह सब गबन उन सुपरवाइजर्स के ज्यादा दिन रहने से हो रहा है ?

श्री बनारसीदास—

ऐसा नहीं है । आप अगर सूची में देखें कि जितने सुपरवाइजर्स निलम्बित किये गये हैं, उनकी संख्या १४ दी गई है । आमतौर से आदेश दिये गये हैं कि जो पांच साल से ज्यादा रुके हुए हैं एक स्थान पर, उनका ट्रांसफर उस रीजन में दूसरे जिले में कर दिया जाय ।

श्री हरिनाथ तिवारी एडवोकेट (जिला फैजाबाद)—

श्रीमन्, आप सूची देखें तो ऐसे लोग भी हैं जो सन् ५९ से हैं, उन्हें पांच साल से अधिक हो गया है । उनका ट्रांसफर क्यों नहीं किया जाता ?

श्री बनारसीदास—

ऐसे जो सुपरवाइजर्स हैं वे सरकारी नौकरी में तो हैं नहीं । कोआपरेटिव यूनियन के कर्मचारी हैं । जैसा मैंने अर्ज किया जब नोटिस में आया कुछ माह पूर्व आदेश दे दिये गये कि पांच साल से अधिक रुके हुए सुपरवाइजर को एक जगह न रहने दिया जाय ।

श्री द्विजेन्द्रनारायण—

क्या सरकार बताने की कृपा करेगी कि दो सुपरवाइजर्स मोहम्मद रफी खां और जयनारायण सिंह के खिलाफ जो गबन के आरोप हैं, वह कितने कितने रुपये के हैं ?

श्री बनारसीदास--

मोहम्मद रफी खां के बारे में ५,८३७ रुपये के लगभग अपहरण का दायित्व निश्चित किया गया और उन्हें इस आधार पर नौकरी से अलग कर दिया गया है। जमानत के रूप में जो रुपया इनका जमा था, उससे हानिपूर्ति करने की कोशिश की जा रही है। उसकी नौकरी भी कोआपरेटिव यूनियन ने खत्म कर दी है। जयनारायण सिंह के बारे में अभी पूरी सूचना मेरे पास नहीं है।

श्री गयाप्रसाद मेहरोत्रा (जिला सीतापुर)--

क्या माननीय मंत्री जी को पता है कि गोंडा जिले के जिन सुपरवाइजरों के खिलाफ भ्रष्टाचार के आरोप हैं उनके हटाने के लिए वहां से लिखा गया, लेकिन प्रादेशिय कोआपरेटिव यूनियन उनको हटा नहीं रही हैं, तो क्या ऐसे लोगों को हटाने के लिए जिला कोआपरेटिव बैंक को अधिकार देने की व्यवस्था करेंगे ?

श्री बनारसीदास--

माननीय सदस्य खुद एक बैंक के मैनेजिंग डाइरेक्टर हैं। वह जानते हैं कि सुपरवाइजरों को सजा डिसिप्लिनरी कमेटी देती है। बाद में अपील कोआपरेटिव यूनियन में होती है, उसके अन्दर कितनी कठिनाइयां होती हैं, जो मामले पुलिस को दिये जाते हैं वह चलते हैं। और अध्यक्ष महोदय, मैं क्षमा चाहता हूं, जयनारायण सिंह के बारे में सूचना मेरे पास है। वह इस प्रकार है . . . .

जयनारायण सिंह, सहायक विकास अधिकारी, सहकारिता विकास क्षेत्र, परसपुर की रिपोर्ट पर इन्हें निलम्बित किया गया था। इनके विरुद्ध परसपुर बीज भंडार संघ एवं क्षेत्र की समितियों में अनियमिततायें करने तथा धन के अपहरण से संबंधित आरोप हैं। विस्तृत जांच के पश्चात् इनके विरुद्ध लगभग २१ हजार रुपये के अपहरण का धन सहायक विकास अधिकारी द्वारा निकाला गया है। स्थानीय अनुशासन समिति ने मामले की गम्भीरता को देखते हुए इनका मामला उचित आदेश हेतु क्षेत्रीय अनुशासन समिति को भेजने का निर्णय लिया। इनके केस से संबंधित पत्रावली क्षेत्रीय अनुशासन समिति को भेजी जा रही है।

श्री दयाराम शाक्य (जिला फर्रुखाबाद)--

माननीय मंत्री जी ने जो प्रश्न के उत्तर में बताया ५ हजार रुपये और २१ हजार रुपये के गबन का आरोप इन दो व्यक्तियों पर है और उनके जमानत से इसकी वसूली की व्यवस्था हो रही है, तो जमानत की राशि कम है और उतना रुपया उससे वसूल नहीं किया जा सकता। तो क्या माननीय मंत्री जी ऐसी परिस्थिति में इनका केस पुलिस के सुपुर्द करेंगे ?

श्री बनारसीदास--

इसके लिए अगर पुलिस के अन्दर मुकदमा चलाया जा सका तो जरूर कार्यवाही की जायगी। जमानत से जितना वसूल हो सकता है वह किया जायगा और बाकी वसूलयाबी के लिए भी प्रयत्न किया जायगा।

श्री हरिनाथ तिवारी एडवोकेट--

जो सूची माननीय मंत्री जी ने दी है उसमें वह देखेंगे कि २५ में से १४ सुपरवाइजरों को निलम्बित कर दिया है। इतना भ्रष्टाचार वहां है और ऐसा ही भ्रष्टाचार हर जिले में है, तो इसके लिए वह कौन सा कदम उठाने जा रहे हैं जिससे इस तरह के भ्रष्टाचार न हों ?

श्री बनारसीदास--

असली इलाज तो यह है कि अभी सहकारिता विधेयक हमने पास किया है। वह जब कानून की शक्ल में आ जायगा तो हमें फैसला करना है कि सुपरवाइजर की स्थिति क्या हो, या

तो वह बैंक्स के कर्मचारी हों या सरकारी कर्मचारी हों, जब तक इसका कोई निश्चित फैसला नहीं हो जाता तब तक पूरी तरह नियंत्रण करना बड़ा कठिन होगा ।

*२२—श्री रक्षपालसिंह (जिला फतेहपुर)–

[हटा दिया गया।]

सहायक जिला पंचायत अधिकारी के पदों की पूर्ति

*२३—श्री रामकिशोर वर्मा (जिला फतेहपुर),श्री रामकिशोर त्रिपाठी तथा श्री शिवदानसिंह (जिला अलीगढ़)—

क्या विकास मंत्री बताने की कृपा करेंगे कि पंचायत राज विभाग के पंचायत निरीक्षकों में से पदोन्नति करके सहायक जिला पंचायत अधिकारी के रिक्त पदों की पूर्ति तथा अस्थायी स्थानापन्न नियुक्तियों हेतु लोग सेवा आयोग द्वारा सन् १९६२ ई० में कोई प्रतीक्षा सूची २ वर्ष तक उपयोग करने के लिये तैयार की गई थी ? क्या उसे अब भी लागू किया जा रहा है ? यदि हां, तो उसे अब तक दुहराये न जाने का कारण क्या है? उसे कब तक सरकार दोहरायेगी अथवा उसमें ऐसे नामों को भी सम्मिलित करने पर विचार करेगी, जो उस चुनाव के बाद अब पदोन्नति के लिये योग्य हो गये हैं ?

श्री बंशीधर पांडेय—

जी हां ।

इस सूची की कोई अवधि आयोग द्वारा नियत नहीं की गई थी । सहायक जिला पंचायत अधिकारी के पदों पर स्थानापन्न नियुक्ति के लिए एक नई सूची बनाने के संबंध में आवश्यक कार्यवाही की जा रही है । जो भी व्यक्ति इस सूची के लिए अर्ह होंगे उन सब के बारे में नई सूची बनाते समय विचार किया जायगा ।

श्री रामकिशोर वर्मा—

उत्तर में जैसा कहा गया कि सहायक जिला पंचायत अधिकारी के पदों पर स्थानापन्न नियुक्ति के लिये एक नई सूची बनाने के सम्बन्ध में आवश्यक कार्यवाही की जा रही है, तो मंत्री जी यह बताने का कष्ट करेंगे कि जो सूची बनेगी वह किसी आयोग द्वारा बनेगी या विभाग के किन्हीं अधिकारियों द्वारा और उसका अन्तिम रूप कब तक तैयार होगा ?

श्री बंशीधर पांडेय—

पब्लिक सर्विस कमीशन द्वारा बनाई जायगी।

श्री रामकिशोर त्रिपाठी—

क्या माननीय मंत्री जी पुनः जांच करावेंगे कि यह सूची तीन साल के लिये बनाई गई थी ?

श्री बंशीधर पांडेय—

मेरा "नहीं" का जवाब सही है ।

श्री रामकिशोर वर्मा—

आयोग की सूची में से बहुत वरिष्ट लोगों को नहीं लिया गया, यह क्यों ?

श्री बंशीधर पांडेय—

दरअसल एक सूची ६२ में बनाई गई थी । जिसमें २१ आदमी थे। फिर दूसरी बनी जिसमें ३४ थे । दूसरी सूची बनी तब पंचायत राज्य अधिकारियों की ४९ जगह कन्फर्म की

गई। उसके साथ ही उन्होंने १५ आदमियों की सूची बना दी और कह दिया कि यह दो साल तक चलेगी और वह रिजर्व लिस्ट थी। अगर ऊपर की सूची में से कोई रिक्त स्थान रहेगा तो वह रिजर्व लिस्ट में से भरा जायगा। अब तो ६२ की सूची में से भी काम कर रहे हैं।

*२४—श्री होरीलाल यादव—

[हटा दिया गया।]।

आयुर्वेदिक कालेज, लखनऊ में छात्रों के स्थान

*२५—श्री शारदानन्द (जिला सीतापुर) (अनुपस्थित), श्री गयाप्रसाद मेहरोत्रा, श्री मन्नालाल (जिला खीरी) तथा श्री बिपिनबिहारी तिवारी—

क्या सरकार बताने की कृपा करेगी कि क्या स्थानीय राजकीय आयुर्वेदिक कालेज अधिकारियों ने यह मांग की है कि कालेज में १५ छात्रों के लिये स्थान बढ़ा दिया जाय? यदि हां, तो इस बात को ध्यान में रखते हुये कि आज चिकित्सकों की महान आवश्यकता है, तो क्या सरकार सीटें बढ़ाने के लिये अनुमति प्रदान करने की कृपा करेगी?

डाक्टर रामनारायण पांडेय—

जी हां। कालेज के प्रथम वर्ष में सीटें बढ़ाने की अनुमति सरकार ने प्रदान कर दी है।

श्री मन्नालाल—

कितनी सीटें बढ़ाने की अनुमति प्रदान की गई है?

डाक्टर रामनारायण पांडेय—

१०० की इजाजत दे दी गई है।

श्री मन्नालाल—

राज्य में वैद्यों की कमी को देखते हुए अन्य कालेजों में क्या सीटें बढ़ाने की कृपा करेंगे?

श्री दाऊदयाल खन्ना—

जिन-जिन संस्थाओं से रिक्वेस्ट आयेगी उन पर विचार होगा।

श्री जगन्नाथ राव—

क्या मंत्री जी को ज्ञात है कि स्थानीय राजकीय आयुर्वेदिक कालेज में प्रथम वर्ष की भर्ती में द्वितीय श्रेणी के विद्यार्थियों को छोड़कर तृतीय श्रेणी के विद्यार्थी लिये गये हैं और इसकी जांच करावेंगे?

श्री दाऊदयाल खन्ना—

जो नियम होंगे उन्हीं के मुताबिक लिये होंगे।

*२६-२७—श्री महरामसिंह (जिला फर्रुखाबाद)—

[स्थगित किये गये।]

सदर अस्पताल, बहराइच में आपरेशन

*२८—श्री रामअधार कनौजिया (जिला बहराइच)—

क्या स्वास्थ्य मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि सदर अस्पताल, बहराइच म माह नवम्बर, दिसम्बर, १९६४ व जनवरी, १९६५ में किन-किन व्यक्तियों के हाइड्रोसील व हार्निया का आपरेशन हुआ था तथा क्या यह सही है कि चार व्यक्तियों की मृत्यु हो गई है और एक व्यक्ति जिनका हार्निया का आपरेशन हुआ था वह पागल हो गया ? यदि हां, तो किस कारण ?

डाक्टर रामनारायण पांडेय—

सदर अस्पताल, बहराइच में माह नवम्बर, दिसम्बर, १९६४ व जनवरी, १९६५ में जिन व्यक्तियों के हाइड्रोसील व हार्निया का आपरेशन हुआ था, उनका नाम संलग्न† सूची 'क' व 'ख' में दर्ज है। यह सही नहीं है कि इनमें से चार व्यक्तियों की मृत्यु हो गई। केवल एक व्यक्ति, श्री वाजिद खां जिनका हाइड्रोसील का आपरेशन हुआ था, उनकी टिटनेस रोग से मृत्यु हो गई। उक्त काल में हार्निया के आपरेशन किये गये व्यक्तियों में कोई व्यक्ति पागल नहीं हुआ।

श्री रामअधार कनौजिया—

आपरेशन के बाद किन कारणों से टिटनेस से मृत्यु हुई ?

श्री दाऊदयाल खन्ना—

टिटनेस के जर्म्स पहुंच गये होंगे।

*२९—श्री ऊदल—

[हटा दिया गया।]

स्वरूप रानी नेहरू अस्पताल, इलाहाबाद में रोगी का पैर काटा जाना

*३०—श्री बृजबिहारी —

प्रश्न कर्त्ता के प्रश्न संख्या ७५, दिनांक २१ अप्रैल, १९६५ के उत्तर के सम्बन्ध में क्या सरकार बताने की कृपा करेगी कि श्री आर० सी० गुप्त ने १ जून, सन् १९६३ से ३१ मई, १९६४ तक जिन १४८ फ्रैक्चर के रोगियों का इलाज किया था उनके नाम तथा पता क्या हैं ?

श्री दाऊदयाल खन्ना—

जिन १४३ फ्रेक्चर के रोगियों का इलाज किया गया, उनके नाम और पते संलग्न† तालिका में दिये हुये हैं।

*३१—श्री ऊदल—

[स्थगित किया गया।]

*३२—श्री नाथूराम शिक्षक—

[स्थगित किया गया।]

नोट—तारांकित प्रश्न २८ के उपरान्त प्रश्नोत्तर का समय समाप्त हो गया है।

†छापी नहीं गई।

*३३-३४—श्री हरीशकुमार गंगवार (जिला बरेली)—

[स्थगित किये गये।]

झांसी में मेडिकल कालेज खोलने की योजना

*३५—श्री लखपतराम शर्मा—

क्या सरकार कृपया यह बतायेगी कि क्या यह सत्य है कि झांसी में मेडिकल कालेज की योजना सरकार द्वारा स्वीकार की जा चुकी है ? यदि हां, तो मेडिकल कालेज का निर्माण कार्य प्रारम्भ न होने के क्या कारण हैं व किस स्थान पर मेडिकल कालेज का कार्य प्रारम्भ होगा ?

श्री दाऊदयाल खन्ना—

चतुर्थ पंचवर्षीय आयोजना के लिये तैयार किये गये प्रारूप में, झांसी में एक मेडिकल कालेज खोलने की एक योजना भी सम्मिलित है। उक्त मेडिकल कालेज की स्थापना के लिये प्रारम्भिक तैयारियां की जा रही हैं।

झांसी-कानपुर रोड पर झाँसी से करीब ३ मील की दूरी पर एक स्थान इस कालेज के स्थापित करने के लिये चुना गया है। वह भूमि एक्वायर हो जाने पर उसी पर कालेज के निर्माण का कार्य प्रारम्भ होगा।

पुस्तकालय भवन, नेशनल इन्टर कालेज, पिंडरा

*३६—श्री विजयपालसिंह (जिला मुजफ्फरनगर)—

क्या विकास मंत्री बताने की कृपा करेंगे कि ग्राम प्रधान, जमापुर ब्लाक पिंडरा, जिला वाराणसी ने एक दरख्वास्त ३ जून, १९६५ को विकास अधिकारी को रमईपुर में लाइब्रेरी खोलने हेतु दी थी जिसके लिये १२ सौ रुपये श्री रामधारी शास्त्री, रमईपुर ने ले लिया था, परन्तु लाइब्रेरी नहीं खोली गई ? यदि हां, तो इस सम्बन्ध में अब तक क्या कार्यवाही की गई ?

श्री राममूर्ति—

जी हां। प्रधान, ग्राम सभा ने इस आशय का एक आवेदन-पत्र दिया था कि ग्राम सभा पिंडरा के अन्तर्गत सन् ५५ में जनहित हेतु १,४०० रु० का अनुदान पुस्तकालय के लिये दिया गया था। जिसका निर्माण नहीं हुआ। वे चाहते थे कि निर्माण स्थान की जांच करके उचित कार्यवाही की जाय और यदि कोई विभागीय कार्यवाही चल रही है तो उससे अवगत कराया जाय।

इस सम्बन्ध में जांच करने पर यह ज्ञात हुआ है कि नेशनल इंटर कालेज, पिंडरा में पुस्तकालय भवन निर्माण हेतु जिला नियोजन समिति, वाराणसी द्वारा अनुदान दिया गया था। अभिलेखों के देखने से ज्ञात होता है कि ५२०८.६६ नया पैसा की लागत का एक पुस्तकालय भवन नेशनल इंटर कालेज, पिंडरा में बनवाया गया है। अनुदान ग्रहीता, श्री रामअधार शास्त्री ने जांच अधिकारी को जांच के समय इस पुस्तकालय भवन को दिखाया जो २६ फीट ६ इंच लम्बा २२ फीट चौड़ा है। क्षेत्र के सहायक विकास अधिकारी, अल्प सिंचाई के मतानुसार इसकी लागत लगभग ५०००.०० रूपया है।

सहकारी संघ परवाना का भट्ठा

*३७—श्री राजेन्द्रसिंह यादव (जिला फर्रुखाबाद)—

क्या सरकार बताने की कृपा करेगी कि फर्रुखाबाद जिले में ब्लाक मुहम्मदाबाद के अन्तर्गत परवाना सहकारी संघ के संचालक मंडल का चुनाव सन् १९६० से अब तक क्यों नहीं हुआ ? इसके मुख्य कारण क्या हैं ?

श्री बनारसीदास—

ऐसी बात नहीं है। इस अवधि में दो चुनाव दिनांक २२ अप्रैल, १९६२ व १९ अगस्त, १९६५ को हुये। अतः दूसरा प्रश्न नहीं उठता।

*३८—श्री राजेन्द्रसिंह यादव—

क्या सरकार बताने की कृपा करेगी कि सहकारी संघ, परगना में वर्ष सन् १९६५ में ईंट भट्ठा चला? यदि हां, तो किसकी आज्ञा से और इसमें हानि-लाभ का जिम्मेदार कौन होगा?

श्री बनारसीदास—

जी हां।

भट्ठा चलाने का निश्चय संघ के संचालक मंडल ने अपने जलसा, दिनांक ४ जुलाई, १९६४ में किया था। इस व्यवसाय में हानि-लाभ का जिम्मेदार संघ स्वयं होगा।

*३९—श्री राजेन्द्रसिंह यादव—

क्या सरकार को ज्ञात है कि इस संघ का अध्यक्ष एक जिला परिषद् का अध्यापक है? यदि हां, तो परिषद् का अध्यापक पदाधिकारी बन सकता है? इन्हीं अध्यक्ष ने भट्ठे से अपना मकान बनाने हेतु कितनी ईंट खरीदी और कितनी बिना मूल्य दिये भट्ठे से उठवा ली?

श्री बनारसीदास—

जी हां।

१९ अगस्त, १९६५ के पूर्व परगना सहकारी संघ के अध्यक्ष, जिला परिषद्, फर्रुखाबाद के एक अध्यापक, श्री राजाराम वर्मा थे। उक्त तिथि को श्री अश्विनि कुमार त्रिपाठी नये अध्यक्ष चुने गये हैं। परिषद् के अध्यापक के लिये संघ के पदाधिकारी होने पर सहकारी नियमों में कोई रोक नहीं है। श्री वर्मा ने २६,५०० ईंटें संघ के भट्ठे से नकद खरीदी थीं। उनके द्वारा बिना मूल्य दिये भट्ठे से ईंट उठवाने की कोई शिकायत संघ के पास अभी तक नहीं है।

जोन्स मिल, आगरा के श्रमिकों का प्राविडेण्ट फण्ड

*४०—श्री बालोजी अग्रवाल (जिला आगरा)—

क्या सरकार बताने की कृपा करेगी कि आगरा के जोन्स मिल नं० २ व ३ जिनका कोड नं० १५४८ व १५४९ है, गत ६ माह से बन्द है? यदि हां, तो क्या सरकार उनके प्राविडेंट फंड को अविलम्ब दिलाने की व्यवस्था करेगी?

श्री बनारसीदास—

जी नहीं। कथित मिलों को बन्द हुये अभी ६ माह नहीं हुये हैं। प्राविडेंट फंड का पैसा श्रमिकों को मनीआर्डर द्वारा भेजा जा रहा है।

बी० डी० ओ०, जगनेर

*४१—श्री बालोजी अग्रवाल—

क्या विकास मंत्री बताने की कृपा करेंगे कि बी० डी० ओ०, जगनेर ने ५ हजार रुपया हैंड पम्प लगवाने के लिये जनता से लिया? यदि हां, तो हैंड पम्प कहां-कहां लगे और उन पर कितना रुपया खर्च हुआ?

श्री राममूर्ति—

जी नहीं।

धन के उपयोग का प्रश्न नहीं उठता है।

पंचायत लिपिकों की पदोन्नती

*४२—श्री उमाशंकर (जिला आजमगढ़)—

क्या विकास मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि पंचायत लिपिकों को सहायक विकास अधिकारी पदों पर पदोन्नति देने के प्राविधान समाप्त कर दिये गये ? यदि हां, तो क्यों ?

श्री राममूर्ति—

जी हां। शासन ने क्षेत्रीय कार्यकर्त्ताओं में से ही सहायक विकास अधिकारियों के पदों पर पदोन्नति करने का निर्णय किया है।

*४३—श्री उमाशंकर—

क्या यह सच है कि कुछ लिपिक पूर्व प्राविधान के अनुसार पदोन्नति किये गये थे और अब वह प्रत्यावर्तित कर दिये गये हैं ? यदि हां, तो उनकी संख्या कितनी है ?

श्री राममूर्ति—

जी हां। सहायक विकास अधिकारियों (पंचायत) के पदों पर अल्पकालीन स्थानापन्न नियुक्तियां जिलास्तर पर की जाती हैं। अतएव यह सूचना जिलों से मंगानी होगी जिसमें समय लगेगा।

*४४—श्री उमाशंकर—

क्या विकास मंत्री बताने की कृपा करेंगे कि प्रत्यावर्तित लिपिकों की यह सर्विस समाप्त कर उन्हें इसके समान कौन-सी पदोन्नति की सुविधा दी गई ? यदि नहीं, तो क्यों ?

श्री राम मूर्ति—

लिपिकों को अपने संबंधित संवर्ग (Cadre) में पदोन्नति की सुविधायें प्राप्त होंगी।

खण्ड विकास अधिकारी, धानापुर का स्थानान्तरण

*४५—श्री रियासत हुसैन—

क्या यह सत्य है कि खंड विकास अधिकारी, धानापुर विकास क्षेत्र, वाराणसी का स्थानान्तरण मिर्जापुर जिले में हो गया था, परन्तु बाद में रद्द कर दिया गया ? यदि हां, तो ऐसा क्यों किया गया ?

श्री राममूर्ति—

जी हां, श्री चन्द्र शेखर सिंह, खंड विकास अधिकारी, धानापुर (वाराणसी) का स्थानान्तरण मिर्जापुर जिले में छानवे विकास क्षेत्र को किया गया था।

चूंकि खंड विकास अधिकारी, छानवे (मिर्जापुर) के स्थानान्तरण को रद्द करने के लिये मिर्जापुर के जिला अधिकारियों तथा जिला परिषद के अध्यक्ष ने विशेष रूप से आग्रह किया। अतः ऐसी परिस्थिति में खंड विकास अधिकारी, धानापुर (वाराणसी) तथा खंड विकास अधिकारी, छानवे (मिर्जापुर) जिनका परस्पर स्थानान्तरण किया गया था, के स्थानान्तरण का आदेश रद्द करना पड़ता।

*४६—श्री रियासत हुसैन—

क्या सरकार को यह ज्ञात है कि उक्त खंड विकास अधिकारी, ने अपने एक प्रतिवेदन जिसे उसने ८, जुलाई १९६५ को जिला नियोजन अधिकारी को भेजा है लिखा है कि ऐसी स्थिति में धानापुर क्षेत्र में कार्य करना असम्भव हो गया है, विकास कार्य ठप पड़ गया है ? यदि हां, तो क्या सरकार उक्त खंड विकास अधिकारी को धानापुर क्षेत्र से हटाने का विचार कर रही है ?

श्री राममूर्ति—

जी हां, खंड विकास अधिकारी, धानापुर ने दिनांक ८-७-६५ को जिला नियोजन अधिकारी को एक प्रतिवेदन दिया है, जिसके अन्तिम प्रस्तर में लिखा है कि ऐसी स्थिति में धानापुर विकास क्षेत्र में मेरे लिये कार्य करना असम्भव हो गया है। विकास कार्य ठप सा पड़ गया है।

क्षेत्र विकास अधिकारी का धानापुर विकास क्षेत्र से स्थानान्तरण विचाराधीन है।

*४७—श्री नरसिंहनारायण पांडेय—

[७ वें बुधवार के लिये निर्धारित किया गया।]

जिला परिषद् कर्मचारियों के लिये वेतन समिति स्थापित करने की मांग

*४८—श्री कमलासिंह यादव, श्री मुमताज मुहम्मद खां (जिला बुलन्दशहर), श्री मुहम्मद रफी खां (जिला शाहजहांपुर) तथा श्री प्रेमसिंह (जिला बहराइच)—

क्या सरकार जिला परिषद् के कर्मचारियों के वेतन तथा भत्ते के संबंध में एक वेतन समिति की स्थापना करेगी? यदि नहीं, तो क्यों? यदि हां, तो कब तक?

श्री राममूर्ति—

जी नहीं, क्योंकि जिला परिषदों की वित्तीय स्थिति ऐसी नहीं है कि वे संशोधित वेतन-क्रमों पर आये हुए अतिरिक्त व्यय का भार वहन कर सकें।

सैदपुर तथा स्याना क्षेत्र में वृद्धावस्था पेन्शन

*४९—श्री कमलासिंह यादव, श्री मुमताज मुहम्मद खां, श्री मुहम्मद रफी खां तथा श्री प्रेमसिंह—

क्या सरकार बताने की कृपा करेंगी कि विधान सभा क्षेत्र स्याना (बुलन्दशहर) तथा विधान सभा क्षेत्र सैदपुर, जिला गाजीपुर में कितने व्यक्तियों को ओल्ड ऐज पेंशन मिल रही है?

श्री बनारसीदास—

स्याना क्षेत्र में ३ और सैदपुर क्षेत्र में ३१ व्यक्तियों को वृद्धावस्था पेंशन मिल रही है।

मलेरिया विभाग में छटनी

*५०—श्री महरामसिंह, श्री मतोलासिंह (जिला बांदा), श्री माधवप्रसाद त्रिपाठी तथा श्री लखीसिंह—

क्या स्वास्थ्य मंत्री बताने की कृपा करेंगे किउत्तर प्रदेश में मलेरिया विभाग को समाप्त करके हजारों की संख्या में विभागीय कर्मचारियों को सर्विस से पृथक करने की योजना क्या सरकार के विचाराधीन है? यदि हां, तो इसका प्रभाव कब तक कितने कर्मचारियों पर पड़ेगा?

श्री दाऊदयाल खन्ना—

जी हां, १/९/६५ से ३५.७५ राष्ट्रीय मलेरिया उन्मूलन यूनिटों में मलेरिया उन्मूलन का कार्य समाप्त हो चुका है। अतः जो कर्मचारी इस विभाग में काम कर रहे थे उनको अन्य विभागीय योजनाओं में रख लिया गया है। छटनी का प्रभाव केवल ७८७ व्यक्तियों पर पड़ा है जिनमें ३३ ड्राइवर और ७५४ चतुर्थ श्रेणी क कर्मचारी हैं।

*५१—श्री महरामसिंह, श्री मतोला सिंह, श्री माधवप्रसाद त्रिपाठी तथा श्री लखीसिंह—

क्या स्वास्थ्य मंत्री जी ऐसे समस्त मलेरिया कर्मचारियों को जिनको सर्विस से पृथक होना पड़ेगा, परिवार नियोजन तथा चेचक उन्मूलन आदि विभागों में स्थान देकर बेकार होने से बचाने की व्यवस्था करेंगे ? यदि नहीं, तो क्यों ?

श्री दाऊदयाल खन्ना—

ऐसे समस्त मलेरिया कर्मचारियों की नौकरी की व्यवस्था की गई फिर भी ७८७ व्यक्तियों के लिए कोई भी व्यवस्था इस समय तक नहीं हो सकी क्योंकि उनकी नियुक्ति के लिए यथोचित स्थान नहीं हैं।

विकास खण्ड कार्यालय, कल्याणपुर

*५२—श्री मन्नालाल—

क्या सरकार बताने की कृपा करेगी कि सरकार के आदेशानुसार, सन् १९६४ में विकास खंड कार्यालय कल्याणपुर, जिला कानपुर का स्पेशल आडिट हुआ था ? यदि हां, तो उस आडिट का क्या परिणाम निकला और उस पर अब तक क्या कार्यवाही हुई ? यदि नहीं, तो क्यों ?

श्री राममूर्ति—

जी नहीं। आडिट के परिणाम का प्रश्न नहीं उठता।

हापुड़ में चेचक

*५३—श्री बालोजी अग्रवाल—

क्या सरकार को ज्ञात है कि हापुड़ में चेचक व हैजे की बीमारी फैल रही है, जिससे सैकड़ों मौतें हो चुकी हैं और हो रही हैं ? यदि हां, तो सरकार ने इसकी रोकथाम के लिये क्या प्रबन्ध किया है ?

श्री दाऊदयाल खन्ना—

प्राप्त सूचना के अनुसार हापुड़ नगर में इस वर्ष जनवरी से लेकर २१ अगस्त को समाप्त होने वाले सप्ताह तक चेचक से केवल २ व्यक्तियों की मृत्यु हुई तथा कालरा व अतिसार से किसी भी व्यक्ति की मृत्यु नहीं हुई।

स्वास्थ्य विभाग के कर्मचारियों ने बीमारी की सूचना प्राप्त होते ही निरोधक कार्यवाही की, जिसके फलस्वरूप रोग पर अविलम्ब नियंत्रण पा लिया गया।

*५४–५५—श्री रघुनाथसिंह—

[हटा दिये गये।]

इलाहाबाद जिले में जन शक्ति उपयोग योजना

*५६—श्री नाथूराम शिक्षक—

क्या विकास मंत्री बताने की कृपा करेंगे कि सुपरिन्टेंडिंग इंजीनियर, उत्तर प्रदेश के पत्र संख्या सी० ४ आर०—२२५ आर० एम० पी० एस० पी०, ७–६४, दिनांक २५ जनवरी, १९६५ के द्वारा स्वीकृत १६९ ब्लाकों में मैनपावर यूटिलइजेशन के आधार पर प्रयाग जिले में कौन-कौन से ब्लाक उक्त आदेश के अन्तर्गत लिये गये हैं ?

श्री राममूर्ति—

सुपरिन्टेन्डिंग इन्जीनियर, ग्रामीण जनशक्ति एवं अल्प सिंचाई। उत्तर प्रदेश के सन्दर्भित पत्र द्वारा कोई ब्लाक स्वीकृत नहीं किया गया था बल्कि इस पत्र में उक्त अधिकारी ने शासन

द्वारा ग्रामीण जनशक्ति योजना में पूर्व स्वीकृत १६६ ब्लाकों में समय २ पर स्वीकृत विभिन्न कार्यक्रमों को संकलित करके विभिन्न अधिकारियों को भेजा था।

वैसे प्रयाग (इलाहाबाद) जिले में इस योजना में निम्न ८ ब्लाक स्वीकृत हैं :—१ धानूपुर (नगवा), २ हंडिया ३—मेजा ४—उरवा ५—सरांव ६—मंडा ७—सैदाबाद ८—बहरियां।

पिडरा-सरांय सड़क पर पुल की आवश्यकता

*५७—श्री ऊदल—

क्या सरकार को पता है कि गांव सभा सरांय, परगना कोल असला, तहसील व जिला वाराणसी में जो कच्ची सड़क पिंडरा से गांव सभा सरांय होते हुये धरसौना कटौना को जाती है उस स्थान में नाद नदी पर एक पुल बनवाने पर सरकार विचार कर रही है ? यदि हां, तो कब तक ? क्या सरकार को पता है कि इस स्थान में ५–६ महीने तक आने जाने में हजारों आम जनता को रोजना परेशानी होती है ?

श्री राममूर्ति—

जी नहीं।

ऐसा कोई प्रस्ताव शासन के विचाराधीन नहीं है। वर्षा ऋतु में जनता को इस स्थान पर नाद नदी पार करने में कठिनाई उठानी पड़ती है।

असिस्टेन्ट डिस्ट्रिक्ट एम्प्लायमेन्ट अफसरों की मांग

*५८—श्री ऊदल—

क्या सरकार बताने की कृपा करेगी कि असिस्टेंट डिस्ट्रिक्ट एम्पलायमेंट अधिकारियों के असोसियेशन, उत्तर प्रदेश ने १८ व १६ अक्तूबर, १६६४ को लखनऊ में मीटिंग करके कई प्रस्ताव ६ पेज में पास कर सरकार के पास भेजे है ? यदि हां, तो उसमें क्या-क्या मांग की गई थीं और उन प्रस्तावों पर सरकार ने क्या कार्यवाही की है ?

श्री बनारसीदास—

जी हां, इन प्रस्तावों में सेवा की दशाओं में सुधार तथा कुछ अधिकार–वृद्धि की मांग की गई थी। ये प्रस्ताव विचाराधीन हैं।

*५६—श्री ऊदल—

क्या सरकार बताने की कृपा करेगी कि एम्प्लायमेंट एन्ड ट्रेनिंग विभाग एक स्थायी विभाग होता जा रहा है और उसका फैलाव पूरे उत्तर प्रदेश में हो रहा है तथा इस विभाग को बहुत से जिम्मेदारी के कार्य करने पड़ रहे हैं, तो क्या सरकार इस विभाग में कार्य करने वालों की तनख्वाह सर्विस बुक, विभाग का पुनस्संगठन जोन वाइज, रीजनल अथवा जिला के पैमाने पर करने का विचार करेगी ?

श्री बनारसीदास—

सेवा की दशाओं में सुधार का उत्तर प्रश्न संख्या २८ में दिया जा चुका है। सेवा योजन कार्यालय का संगठन भारत सरकार से स्वीकृत ढांचे के अनुकूल होता है और इसका पुनर्गठन प्रदेश सरकार अपनी इच्छानुसार नहीं कर सकती।

*६०—श्री ऊदल—

क्या सरकार कृपया बतायेगी कि एम्प्लायमेंट आफिसर, असिस्टेन्ट एम्प्लायमेंट आफीसर की पे तथा पद बराबर के हैं तो एम्प्लायमेंट आफिसर, असिस्टेंट एम्प्लायमेंट आफिसर के नामकरण की क्या जरूरत है ?

श्री बनारसी दास---

एम्प्लायमेन्ट आफीसर राज्य सेवा योजन सेवा २५०-८५० वेतन क्रम में होते हैं। जिला सहायक सेवा योजन अधिकारी अधीन राजपत्रित सेवा योजन सेवा वेतन क्रम २००-३५० में होते हैं। जब ये जिला सेवा योजन कार्यालय के अधिकारी होते हैं तो जिला सेवा योजन अधिकारी कहलाते हैं और जब वे ही उप मंडलीय सेवा योजन कार्यालयों में नियुक्त होते हैं तो सहायक सेवा योजन अधिकारी कहे जाते हैं।

अतारांकित प्रश्न

पिंडरा अस्पताल में शय्याओं का वार्ड

१---श्री ऊदल---

क्या स्वास्थ्य मंत्री बताने की कृपा करेंगे कि पिंडरा, एलोपैथिक अस्पताल, ब्लाक पिंडरा, जिला वाराणसी में ६ चारपाई से सज्जित एक कमरे के निर्माण हेतु सन् ६५ में स्वास्थ्य अधिकारी तथा सिविल सर्जन, वाराणसी ने सरकार को रिपोर्ट भेजकर निर्माण की आज्ञा मांगी है ? यदि हां, तो इस संबंध में क्या कार्यवाही की गई ?

श्री दाऊदयाल खन्ना---

पिंडरा, जिला वाराणसी, स्थित एलोपैथिक अस्पताल जिला परिषद्, वाराणसी, का है। इस अस्पताल में ६ शैय्याओं का वार्ड बनाने के लिये जिला परिषद् ने अनुदान की मांग की है। इस संबंध में स्वास्थ्य सेवा निदेशक आवश्यक जाँच कर रहे है और उनकी संस्तुतियां प्राप्त होने पर जिला परिषद् को अनुदान देने या न देने के विषय पर आवश्यक निर्णय लिया जा सकेगा।

प्रश्नों के संबंध में आपत्ति

श्री बृजबिहारी (जिला आजमगढ़)---

श्रीमन्, के आदेश से आज के लिये लगभग ३०० प्रश्न रखे गये थे। इनमें से २८ ही लिये जा सके हैं। तो क्या आप ऐसी व्यवस्था करेंगे कि जिससे अधिक से अधिक प्रश्न लिये जायं सकें। कुछ प्रश्नों पर ज्यादा अनुपूरक प्रश्न करने की इजाजत दे दी जाती है, जिससे बहुत से प्रश्न रह जाते हैं। जो आवश्यक होते हैं।

श्री अध्यक्ष---

अगर आपका प्रश्न हो और मैं उस पर केवल एक अनुपूरक प्रश्न कर दूं तो आप स्वयं ही असन्तुष्ट होंगे। मैं देख लेता हूं कि क्या भावना है और कितनी दिलचस्पी ली जा रही है। इस हिसाब से मैं प्रयत्न करता हूं कि जो प्रश्न लिये जावें उन पर तो पूरा प्रकाश पड़ जाय।

भारतीय सैनिकों की रणभूमि में पाकिस्तानी अतिक्रमण के विरुद्ध शौर्य पूर्ण पराक्रम दिखाने के संबंध में संकल्प

*मुख्य मंत्री (श्रीमती सुचेता कृपालानी)---

माननीय अध्यक्ष जी, सारी पार्टियों की सम्मति से एक प्रस्ताव तैयार हुआ है। जो सदन की तरफ से हम लोग रखेंगे अपनी केन्द्रीय सरकार को मदद देने के लिये, और हमारे जो वीर पुरुष लड़ रहे हैं भारत की सुरक्षा के लिये, उनकी सराहना और सपोर्ट के लिये। मगर यह प्रस्ताव रखने के पहले मैं दो बातें आप को बता दूं कि इस समय क्या परिस्थिति है।

---

*वक्ता ने भाषण का पुनर्वीक्षण नहीं किया।

जब मैं ३ दिन पहले दिल्ली में पहुंची उस समय तक केवल यह था कि जम्मू के पास छम्ब क्षेत्र में पाकिस्तान का हमला हुआ है और वह यह प्रयास कर रहा है कि छम्ब से आगे बढ़कर अखनूर तक पहुंचें ताकि जम्मू से श्रीनगर का रास्ता वह ले ले, जिससे श्रीनगर और जम्मू अलग-अलग हो जाय। जब हम पहुंचे तो पता चला कि वातावरण बहुत तेजी से बिगड़ता जा रहा है और शायद लड़ाई का रास्ता बहुत बढ़ जायगा। दिल्ली में इस समय वातावरण कोई साधारण नहीं है। लड़ाई का वातावरण है। अभी तक वह वातावरण यहां तक नहीं पहुंचा है। वहां तो सारे लोग यह महसूस कर रहे हैं कि वे लड़ाई के क्षेत्र में ही बैठे हुए हैं। मैं आप को मुख्तसर में बता दूंगी कि इस समय क्या परिस्थिति है। कुछ तो अखबार से और कुछ रेडियो की खबर है जो अभी कनफर्म नहीं हुई हैं।

एक तो छम्ब सैक्टर में लड़ाई बहुत गम्भीर है। वहां हमने उन्हें कामयाबी से रोक दिया है और इस वक्त पाकिस्तानी वहां से बाहर निकल रहे हैं। वहां हमारी सेना ने उनके काफी टैंक्स नष्ट किये हैं और अब वे वहां से पीछे धीरे धीरे निकल रहे हैं। इसके अलावा लाहौर सेक्टर में हम लोग आगे बढ़ रहे हैं। वहां जाने का कारण यह है कि वह हमारे ऊपर हमला न कर सकें। अगर हम अपने मुल्क के ऊपर हमला बचाना चाहते हैं तो जहां से वे लोग आते हैं उस पर हमें कब्जा करना पड़ता है। हमारी तरफ से आक्रमण नहीं है, केवल सुरक्षा के लिये हमें यह करना पड़ता है। हमें पता नहीं है कि लाहौर का कितना हिस्सा उनके हाथ में आया है या नहीं। किस्म-किस्म की बातें हो रही हैं। मगर मैं ठीक आप को नहीं बता सकती हूं। लाहौर सेक्टर में और स्यालकोट सेक्टर में लड़ाई हो रही है। कई जगह उनकी तरफ से और हमारी तरफ से हवाई हमले हुए हैं। कलकत्ता के पास कलईकुन्डा में उन्होंने हवाई जहाज से हमला किया। अदमपुर पंजाब में, अमृतसर में, हलवाड़ा पंजाब में, और कई जगह हैं। इन सब जगह पाकिस्तान ने हवाई जहाजों से हमला किया है। जामनगर में हुआ है। उधर भी हमारे एयर के कुछ बेस हैं। अभी अभी खबर आई है कि जोधपुर के ऊपर भी वह दिखाई पड़ा। श्रीनगर में भी अटैक करने का प्रयास उसने किया। सुबह दिल्ली के ऊपर उसने कोशिश की और उनका हवाई जहाज गिराया गया। फिर पाकिस्तान का रेडियो स्वयं क्लेम कर रहा है जिसे हम कनफर्म नहीं कर पाये हैं। गुजरात में पाकिस्तान ने नेवी पर शैलिंग की है, यह बात अभी मालूम हुई है। हमारे दो जहाजों को कराची में इम्पाउन्ड कर लिया गया है। पुंछ-टिथवाल सेक्टर में हमारे सिपाही कामयाबी से आगे बढ़े हैं।

अभी तक उत्तर प्रदेश वाले समझ रहे थे कि लड़ाई उत्तर प्रदेश से बाहर है लेकिन सुबह ही हमें खबर मिली है कि अब लड़ाई उत्तर प्रदेश में भी आ गयी है। अभी सुबह खबर आयी है कि मेरठ और गाजियाबाद के बीच में पाकिस्तान पैराटुपर्स उतरे हैं करीब ९०-१०० तादाद में। उनको काम्ब किया जा रहा है। पुलिस और जनता मिल कर उनको पकड़ने का प्रयास करेगी चाहे आज वे हमारे सिपाहियों की पोशाक में हों, चाहे सिखों के वेश में हों क्योंकि अलहैदा-अलहैदा वेश धारण कर के उनको उतारा जा रहा है। यह भी नहीं कहा जा सकता कि वह एक ही जगह उतरेंगे। पंजाब में वे कई स्थानों पर उतरे हैं। उन सबको हमें पकड़ना है।

जो लोग पाकिस्तान के नेशनल्स की रक्षा करेंगे, अपने घरों में उनको छिपायेंगे, पैराटूपर्स की अपने घरों में रक्षा करेंगे, उन को सख्त सजा दी जायगी। वे देश के गद्दार हैं। और जो भी उनको पकड़ा देंगे, उनको ५०० रुपया इनाम दिया जायगा, मैं यह ऐलान करती हूं। हम लोगों को पूरा तैयार रहना है और हर तरह से देश की रक्षा करनी है। हमारे यहां भी बहुत सी क्लनरेबिल जगहें हैं। अभी तक लड़ाई टैकनीकल है, मिलिटरी इम्पार्टेंस की जगहों पर अटैक करने की कोशिश की जा रही है। उत्तर प्रदेश में कई बहुत बड़ी जगहें हैं जहां पर लड़ाई का जरूरी काम होता है। वे सारी जगहें महत्वपूर्ण हैं। उन सारी जगहों की सुरक्षा हमें करना है।

[श्रीमती सुचेता कृपालानी]

हम लोग होम गार्ड्स बढ़ायेंगे, पुलिस बढ़ायेंगे, सिविल डिफेंस का भी सारा प्रोग्राम हमें बनाना है। जैसे ही यह हो जायगा, हम ऐलान कर देंगे ताकि सब तरफ से सहयोग मिले।

लड़ाई के साथ साथ एक बहुत बड़ी समस्या खाद्य की समस्या है। आप लोग जानते होंगे अमेरिका से हमारे यहां बहुत सा अनाज आता है। लाल बहादुर शास्त्री जी ने कहा कि हमें अकेले ही लड़ने के लिये तैयार रहना चाहिये और हर फ्रन्ट में लडेंगे, चाहे जो हो। अब तक हम लोगों ने बहुत नर्म पालिसी को अपनाया। लेकिन जब नर्मी की पालिसी से कोई मसला हल होता हुआ दिखाई नहीं देता है तब चाहे पहाड़ सी मुसीबत ही उसके सामने क्यों न हो हम उसका मुकाबला करने के लिये तैयार हो गये हैं। लोगों में अब वह मनोबल आ गया है कि वह किसी भी मुसीबत का सामना करने के लिये तैयार हैं हमें अपने आप को तैयार करना है, अनेक प्रकार का सामान तैयार करना है। खाद्य के बारे में हमें स्वयं पूरा प्रयास करना है। हमें उसका उत्पादन भी तेजी से बढ़ाना है। इसके अलावा लाल बहादुर जी ने एक बहुत बड़ी बात कह दी कि हमारे देश के जो एडल्ट हैं उनको यह फैसला करना होगा कि वे एक वक्त ही रोटी खाकर रहेंगे। हर एक एडल्ट को यह निश्चय करना होगा कि वह एक वक्त रोटी खाकर रहेगा।

इसके अलावा हमें यह भी देखना है कि चीजों के भाव न बढ़ने पायें। इस समय तो पिछले दिनों में कुछ घंटे हैं लेकिन आगे न बढ़ने पायें इसके लिये हम दूकानदारों के एसोसियेशन्स को बुलाकर यह अनुरोध करेंगे कि चीजों के दामों में तेजी न आने पाये। इंगलैंड में लड़ाई के वक्त दाम नहीं बढ़ पाये थे, हालांकि यूरोप में और स्थानों पर दाम बढ़े लेकिन इंगलैंड में नहीं बढ़े। मैं आशा करती हूं कि हमारे यहां भी भाव नहीं बढ़ेंगे और अगर ऐसा नहीं हुआ तो हमको इसके लिये भी सख्ती करनी होगी। इसके अलावा जो भी हमारे साधन हैं उनको बचाने का हमें प्रयास करना चाहिये, चाहे वह खाद्य हो अथवा कोई और दूसरे साधन हों उनको हमें बचाना है। इसी प्रकार से हम व्यक्तिगत और सामूहिक जीवन में एकानामी ला सकते हैं और जो भी साधन हैं उन को हम अन्त तक इस्तेमाल के लिये रख सकते हैं।

बाकी चीन के आक्रमण के समय आपने जिस प्रकार से चारों तरफ से मदद की थी, उसी प्रकार से अब भी करना है। इसमें हरएक को मदद करना है। कल एक सब कमेटी सब पार्टियों की बनायी जा रही है, जो कुछ उसके सुझाव होंगे उनको हम आप के सामने रखेंगे और आप लोगों से भी सुझाव लेंगे। मुझे पूरा विश्वास है कि आज जो यह भारत के सामने अग्नि परीक्षा का समय आया है उसमें हम अवश्य कामयाब होंगे। आज सुबह ही यह खबर आई है कि लाहौर के अलावा हमारी तरफ से एक नया फ्रन्ट खोला गया है यानी हम जोधपुर बाडमेर की तरफ से बढ़े हैं। इस तरह से हमारी यह लड़ाई किसी क्षेत्र विशेष तक सीमित नहीं है। मैं जब दिल्ली जा रही थी तो केवल काश्मीर की मदद के लिये ही समिति बनाने की बात दिमाग में थी लेकिन अब केवल काश्मीर का ही सवाल नहीं है बल्कि सारे भारत की मदद के लिये हम सब को मिल कर जम कर काम करना है। मुझे आशा है कि चाहे नतीजा कुछ भी हो लेकिन आज हम सब को लड़ाई के लिये डिटरमिन्ड हो जाना है और इस तरह से हम एक वातावरण देश में तैयार करेंगे और डू आर डाई, करो या मरो का नारा लेकर चलेंगे। अब मैं आप सब की ओर से यह प्रस्ताव रख रही हूं।

"भारत ने स्वतन्त्रता संग्राम के समय से ही समस्त देशों की स्वतन्त्रता एवं सार्वभौमिकता का आदर किया है और हमारे देश की सहानुभूति समस्त देशों के स्वतन्त्रता प्रयासों के साथ रही है। भारत शान्तिप्रिय तथा जनतान्त्रवादी देश है, विश्व की उन्नति के लिये, विश्वबन्धुत्व तथा समानता में हमारा सदा विश्वास रहा है। पाकिस्तान ने काश्मीर पर बर्बतापूर्ण आक्रमण करके, सभ्य संसार के, सर्वमान्य आदर्शों की अवहेलना की है और भारत की

और भारत की स्वतंत्रता और सार्वभौमिकता पर आघात किया है। भारत की स्वतंत्रता तथा अक्षुण्यता की रक्षा के लिये, भारत सरकार ने पाकिस्तानी आक्रमण के विरुद्ध देश की सुरक्षा के लिये दृढ़ निश्चय किया है और सैनिकों ने जो प्रयास किये हैं यह सदन उनका पूर्ण समर्थन करता है। भारतीय सैनिकों ने अपनी मातृभूमि की रक्षा के लिये जो अदम्य साहस, बलिदान और आत्मोत्सर्ग का परिचय दिया है, उस पर सदन गर्व करता है। भारत भूमि की रक्षा करते हुये जो योद्धा वीरगति को प्राप्त हुये हैं यह सदन उनके प्रति श्रद्धांजलि अर्पित करता है और शहीद हुये सैनिकों के परिवारों की सहायता करने का संकल्प करता है। यह विधान सभा केन्द्रीय सरकार को आश्वासन देती है कि राष्ट्र की परीक्षा की घड़ी में इस प्रदेश की जनता राजनैतिक, सामाजिक और आर्थिक भेदभाव को भुला कर तन-मन-धन से भारत सरकार के साथ है और स्वतंत्रता की रक्षा के लिये इस प्रदेश का प्रत्येक नागरिक हर प्रकार का कष्ट सहन और बलिदान के लिये कटिवद्ध है।"

श्री काशीनाथ मिश्र (जिला बलिया)---

अध्यक्ष महोदय, मैं चाहता हूं कि जहां पर केन्द्रीय सरकार को आश्वासन देने की बात है वहीं पर एक वाक्य यह जोड़ दें कि यह सदन केन्द्रीय सरकार को यह भी निर्देश करता है कि हमारी यह लड़ाई उस वक्त तक जारी रखी जायगी जब तक आजाद काश्मीर कहलाने वाली जमीन का एक एक इंच हम भारत में न मिला लेंगे।

श्री अध्यक्ष---

मैं समझता हूं कि माननीया मुख्य मंत्री जी ने सब की राय से ही यह प्रस्ताव बनाया है।

श्री यादवेन्द्रदत्त (जिला जौनपुर)---

श्रीमन्, हमने यह नहीं देखा।

सहकारिता मंत्री (श्री बनारसीदास)---

श्रीमन्, जनसंघ दल के नेता श्री माधव प्रसाद जी, श्री पीताम्बर दास जी ने स्वयं इस प्रस्ताव को देखा था तो मैं समझ नहीं पाता कि दुबे जी कैसे कहते हैं कि हमने यह नहीं देखा।

श्री यादवेन्द्रदत्त---

मैं स्ट्रांगली प्रोटेस्ट करता हूं, जो बात उधर से कही जा रही है कि प्रस्ताव दिखाया गया उसकी वर्डिग्ज में विभिन्नता है।

श्री उग्रसेन (जिला देवरिया)---

माननीय बनारसी दास जी ने यह प्रस्ताव हमें दिखाया तो हमने कहा कि हमारे नेता दौरे पर हैं, वह आयेंगे तो दिखाया जायगा और हमने उनको सुझाव दिया कि इसमें इतना जोड़ दिया जाय कि जब तक आजाद काश्मीर कहाने वाली एक इंच भी जमीन पाकिस्तान के कब्जे में है तब तक लड़ाई जारी रखेंगे। यह स्पष्ट जोड़ने के लिये हमने कहा था। मुख्य मंत्री जी ने जो भावनायें व्यक्त की हैं उस हेतु हम तो मोर्चे पर जाने को तैयार हैं। मुझे खुशी है कि हमारे लोहिया जी ने जो इशारा किया था वहां हमारी फौज पहुंची है।

श्री रामसुन्दर पांडेय (जिला आजमगढ़)---

श्रीमन्, जो संशोधन माननीय उग्रसेन जी ने प्रस्तुत किया है मैं समझता हूं यह एलान भारत सरकार का भी हो चुका है कि जब तक भारत की एक एक इंच भूमि विदेशियों के हाथ में और खासतौर से पाकिस्तान के हाथ में है तब तक युद्ध बन्द न किया जाय, तो इस संशोधन को मान लेने म क्या आपत्ति है? इससे प्रदेश का ही नहीं अपितु देश का भी गौरव बढ़ेगा।

श्री नेकराम शर्मा (जिला अलीगढ़)—

मेरी राय में इस प्रस्ताव पर कोई बहस न की जाय। जो प्रस्ताव माननीया मुख्य मंत्री ने उपस्थित किया है उसके बारे में कल बात चीत हो गयी थी। इसे सर्वसम्मति से स्वीकार कर लिया जाय।

श्री अध्यक्ष—

मेरा निवेदन यह है कि जो माननीय उग्रसेन और माननीय काशीनाथ जी ने कहा है वह कदाचित् इसमें समाविष्ट है, "भारत की स्वतंत्रता तथा अक्षुणता की रक्षा के लिये"। जो वाक्य इसमें लिखा हुआ है, उसमें कदाचित् थोड़ा सा निहित है। अगर आवश्यक होगा तो बाद में सोचेंगे। मैं निवेदन करूंगा कि इसको स्वीकार कर लें।

श्री झारखण्डेराय (जिला आजमगढ़)—

श्रीमन्, मेरा निवेदन है कि मूल प्रस्ताव में कोई भी संशोधन पेश न किया जाय बल्कि नेता लोग जो भी बोलना चाहते हैं, उनको बोलने की आप आज्ञा दे दें। उस समय बोलने के दौरान में जिनको जो कहना हो, वे कह लें।

श्री अध्यक्ष—

ठीक है।

श्री उग्रसेन—

जैसा कल आपने लेजिस्लेचर ग्रुप की मीटिंग मे मान लिया था नहीं यहां मान लिया जाय।

श्री अध्यक्ष—

जितनी भावनाएं आपकी हैं वे थोड़ी बहुत इसमें निहित हैं। तो इस समय सबको सुन लेना उचित होगा।

श्री यादवेन्द्रदत्त—

माननीया मुख्य मंत्री ने जो प्रस्ताव पेश किया है, उसका मैं हृदय से स्वागत करता हूं और उसका मैं भारतीय जनसंघ की ओर से और राष्ट्र की दृष्टि से भी समर्थन करता हूं। परन्तु फिर भी मैं यह कहना चाहता हूं कि जिस जिस बीज को माननीय बनारसी दास जी ने इस प्रस्ताव में लाने का प्रयास किया है, उसे वे न करें।

श्री बनारसी दास—

श्रीमन्, यह तो आप की (माननीय दूबे जी की) आदत है कि आप मेरे खिलाफ बोलते हैं।

श्री अध्यक्ष—

मेरी सदन से यह प्रार्थना है कि इसको उस लय में न लिया जाय।

श्री यादवेन्द्र दत्त—

श्रीमन्, मैं केवल यह कह रहा था कि इसमें और थोड़ा-सा जोड़ा जाय। तब तक माननीय बनारसी दास जी लगे कहने।

श्री बनारसीदास—

इस प्रस्ताव को माननीय माधव प्रसाद त्रिपाठी और माननीय पीताम्बर दास जी ने स्वीकार कर लिया था। मैं माननीय दूबे जी से प्रार्थना करूंगा कि वे अपने नेता से पूछ लें।

श्री यादवेन्द्रदत्त--

श्रीमन्, जो प्रस्ताव लाया गया था वह तो केवल ४-५ लाइन का था। उसमें ये सब बातें नहीं थीं। इसमें बाद में संशोधन किया गया है।

श्री बनारसीदास--

श्रीमन्, यह बिलकुल गलत है। माननीय त्रिपाठी जी ने, जैसा कि मैंने अभी कहा, इसको स्वीकार किया है।

श्रीमती सुचेता कृपालानी--

मैं, अध्यक्ष महोदय के जरिये क्या इतनी अपील कर सकती हूं कि इस मौके पर अगर बहस न हो तो बड़ा शोभनीय है, आज मुल्क के लड़के लड़ रहे हैं, कट रहे हैं।

श्री यादवेन्द्रदत्त--

मैं फिर दोहराना चाहता हूं कि इसमें दो बातें रखना चाहता हूं। एक तो यह है कि इस देश के अन्दर जो पाकिस्तानी हैं और जिनके सम्बन्ध हैं उधर उनके ऊपर कड़ी बड़ी निगाह रखने की आवश्यकता है। और दूसरे यह कि जितने हथियार के लाइसेंस हैं उन सब हथियारों को सरकार अपने पास मंगा ले और उनका जैसा भी उपयोग सरकार करना चाहे करे। मैं ज्यादा स्पष्टीकरण नहीं करूंगा, मैं समझता हूं कि मेरी इस बात के पीछे जो भाव हैं वह मुख्य मंत्री जी समझ गयीं हैं। भारत माता के नौजवानों ने इस देश को जो विजय श्री और भावना है उसमें अपने पराक्रम से चार चांद लगाये हैं, उसके प्रति मैं भारतीय जनसंघ की ओर से अपनी श्रद्धान्जलि अर्पित करता हूं और देश की रक्षा करने के लिए हम सारे काम करने के लिये तैयार हैं। मैंने आज आपके माध्यम से एक संदेश मुख्य मंत्री तक भिजवाने का प्रयास किया था। भारतीय जनसंघ ४० हजार स्वयं सेवक आपको देने के लिये तैयार हैं उनका आप जैसे चाहें तथा जिस काम के लिये चाहें उपयोग करें। आप जब चाहें वह आप के पास आने के लिये तैयार हैं। इन शब्दों के साथ मैं माननीया मुख्य मन्त्री के प्रस्ताव का हृदय से समर्थन करता हूं।

श्री रामसुन्दर पांडेय--

अध्यक्ष महोदय, नेता सदन की ओर से जो प्रस्ताव आया है मैं उसका हृदय से समर्थन करता हूं। साथ ही अगर मेरी आवाज मुख्य मंत्री के जरिये भारत सरकार के कानों तक पहुंचे..... (व्यवधान)

श्री अध्यक्ष--

यह अवसर ऐसा है जिसमें सदन में वातावरण शान्त रहना चाहिये।

श्री रामसुन्दर पांडेय--

श्रीमन्, इस प्रस्ताव पर गम्भीरतापूर्वक विचार होना चाहिये। यह सही है कि भारत सरकार ने जो नीति अपनायी है पाकिस्तान के मुकाबले में वह सही है। और यदि हमारी पार्टी के नेताओं की बात पहले मानी गयी होती तो आज यह नौबत ही न आती, इसकी आवश्यकता ही पैदा न होती कि इस प्रकार पाकिस्तान बर्बरतापूर्ण व्यवहार करने की हिम्मत करता। मैं इस प्रस्ताव में एक संशोधन करना चाहता था। हमारे सामने कोई लक्ष्य निर्धारित होना चाहिये। गांधी जी की बात याद करनी चाहिये। गांधी जी ने कहा था हिन्दुस्तान का बटवारा, पाकिस्तान और भारत के रूप में नहीं होना चाहिये। लेकिन दुर्भाग्य है कि उनकी बात को नहीं माना गया और हिन्दुस्तान और पाकिस्तान का कृत्रिम बटवारा हुआ। मैं कहना चाहता हूं कि भारत सरकार को गांधी जी की बात को दृढ़तापूर्वक मान कर चलना

[श्री रामसुन्दर पांडेय]

चाहिये और हमारी पार्टी ने भी यह नारा दिया था कि हिन्दुस्तान और पाकिस्तान का महासंघ बन सकता हो तो बने और अगर पाकिस्तान लड़ाई करना चाहता है तो उसके लिये आगे बढ़ना चाहिये लेकिन उस समय हमारी बात, डाक्टर लोहिया की बात को नहीं माना गया। इसी सदन में मैंने ३० अप्रैल को एक प्रस्ताव पर कहा था और निवेदन किया था अगर पाकिस्तान की खराब नीति को ठीक करना है और सबक सिखाना है तो पूर्वी पाकिस्तान पर हमला करना चाहिए। उस वक्त हमारे संशोधन को स्वीकार नहीं किया गया। अगर उसी समय यह नीति बरती गयी होती तो आज जो हमारे देश पर आक्रमण करने की बात सोचता है वह नहीं करता। हमको निश्चय करना चाहिए तथा केंद्रीय सरकार से कहना चाहिए कि जब तक हिन्दुस्तान की एक एक इंच भूमि पाकिस्तान के कब्जे में है तब तक हमको किसी प्रकार का समझौता करने के लिए भारत सरकार को छूट नहीं देनी चाहिए। जैसा माननीया मुख्य मंत्री ने कहा है कि माननीय लाल बहादुर शास्त्री जी ऐसा ही चाहते हैं, तो इन शब्दों का इस्तेमाल करने में क्या दिक्कत है। कुछ व्यक्ति या व्यक्ति विशेष या दल की बात को छोड़ दीजिये, लेकिन भारत की जनता चाहती है कि पाकिस्तान से एक एक इंच भूमि को ले लिया जाय और मैं समझता हूं कि ऐसे कठोर वक्त में इस तरह का प्रस्ताव पास करके हम देश के मनोबल को ऊंचा उठायेंगे और करोड़ों व्यक्ति जो पाकिस्तान से लड़ना चाहते हैं, उनकी इच्छाओं की पूर्ति करेंगे।

मैं एक और निवेदन करता हूं कि जहां हम इस प्रकार का प्रस्ताव इस हाउस में लाते हैं, वहां हम सारे देश के करोड़ों नर-नारियों से अपील करते हैं कि हम जो पाकिस्तान से मुकाबला कर रहे हैं उसमें आप हमारी तन-मन-धन से सहायता करें। श्रीमन, ३० अप्रैल की बात में फिर माननीया मुख्य मंत्री को याद दिलाना चाहता हूं जब मैंने कहा था कि इस प्रदेश में जो खराबी है, प्रशासन में जो खराबी है, लूट और भ्रष्टाचार है, उसको जब तक आप दूर नहीं करते तब तक सही माने में जनता का मनोबल ऊंचा नहीं हो सकता। एक शब्द और मैं आपसे कहना चाहता हूं कि ऐसे अवसर पर हल्ला नहीं करना चाहिए (व्यवधान)।

श्री अध्यक्ष—

यह अवसर ऐसा है जब हम गंभीरतापूर्वक अपने शब्दों को नाप तोल कर बोलें हम सभी में कुछ न कुछ कमी होती है, लेकिन जहां काम करने की बात है, मेरा निवेदन है कि हम इस पर गंभीरतापूर्वक विचार करें।

श्री रामसुन्दर पांडेय —

हमें बड़ी तकलीफ है कि यह आत्मचिंतन न करने की प्रथा चलाई जा रही है और यह बड़ा महत्वपूर्ण प्रश्न है जो सदन के सामने उपस्थित है।

श्रीमती सुचेता कृपालानी—

अध्यक्ष महोदय, क्या मैं आपके जरिए माननीय रामसुन्दर पांडेय जी से अपील कर सकती हूं कि अभी नो-कांफिडेंस मोशन इस सदन के सामने उपस्थित है, पहले मैंने सोचा था कि इसके पास होने के बाद मैं अपील करूंगी कि नो कांफीडेंस का प्रस्ताव वापस ले लिया जाय, लेकिन अब मैं चाहती हूं कि आप लोग उस प्रस्ताव पर दो दिन चाहे चार दिन तक बोलें, लेकिन मेरा निवेदन है कि इस प्रस्ताव के ऊपर आप ऐसी बातें न करें।

श्री रामसुन्दर पांडेय—

अध्यक्ष महोदय, मैं इस प्रसताव का समर्थन करता हूं और अपने दिल की बात कहना चाहता हूं कि जब तक देश के प्रशासन में भ्रष्टाचार रहेगा, लूट रहेगी और मंत्री लोग पक्षपात करते रहेंगे तब तक आप हजार प्रस्ताव पास करें उससे कुछ नहीं होगा। (व्यवधान)

श्री अध्यक्ष—

माननीय रामसुन्दर जी, आप कृपा करके बैठ जायं।

श्री रामसुन्दर पांडेय—

ऐसे अवसर पर मंत्रि-परिषद् का पुनर्गठन होना चाहिए और जब तक इसका पुनर्गठन नहीं होता है तब तक देश...

श्री अध्यक्ष—

सारे सदन की भावनाओं के प्रतिकूल आप बातें कर रहे हैं। आपसे अपील की गयी है कि जब एक अविश्वास का प्रस्ताव प्रस्तुत है तो फिर और बातें कहने का सवाल ही क्या है। आप उस समय इनको कह सकते हैं।

श्री रामसुन्दर पांडेय—

श्रीमन्, मुझे हार्दिक तकलीफ हुई कि इस प्रस्ताव के ऊपर जब मैंने कहा और आपने भी स्वयं कहा कि अपनी स्पीच के अन्दर कोई अपने भावों को कहना चाहता है तो उसे कह सकता है....

श्री अध्यक्ष—

आप अपने को उससे सम्बद्ध कर लीजिये।

श्री रामसुन्दर पांडेय—

तो फिर मेरा कहना है कि आखिर इतना होहल्ला क्यों हो रहा है? मैं साफ कहना चाहता हूं कि इस उत्तर प्रदेश के मंत्रि-परिषद् में दो ऐसे मंत्री हैं जिनके कारण प्रशासन कलंकित हो रहा है। (व्यवधान)

श्री अध्यक्ष—

तमाम ये सब बातें असम्बद्ध हैं, इस पर आप कृपा करके न बोलें। बड़े अफसोस की बात कि नो कांफिडेंस मोशन की तरह से आप इस पर विचार कर रहे हैं।

श्री यादवेन्द्रदत्त—

श्रीमन, एक निवेदन मैं इधर बैठने वाले तथा उधर बैठने वाले सभी सदस्यों से करना चाहता हूं। सबसे मैं हाथ जोड़ कर प्रार्थना करता हूं कि इस प्रस्ताव के ऊपर अविश्वास के प्रस्ताव की तरह से कुछ न कहा जाय तो बड़ा सुन्दर हो।

श्री अध्यक्ष—

मगर वे मानें तो।

श्री मैनेजर सिंह (जिला बलिया)—

(श्री केशरी प्रसाद पांडेय के रोकने पर) श्रीमन्, मैं एक विशेषाधिकार के प्रश्न का नोटिस देता हूं कि माननीय केशरी प्रसाद पांडेय, मेरी बांह पकड़ कर मुझे रोक रहे हैं। श्रीमन्, मैं भी संयुक्त सोशलिस्ट पार्टी का एक सदस्य हूं। मुझे खेद है कि इस राष्ट्रीय संकट के ऐसे समय जो प्रस्ताव आया है उस पर मेरे दल की ओर से माननीय नेता द्वारा इस प्रकार का भाषण हो रहा है। शेम, शेम। हमारे दल के माननीय सदस्य श्री काशीनाथ मिश्र जी ने यह कहा था कि आप इसमें यह वाक्य जोड़ दिया जाय कि पूरा काश्मीर है लिये बगैर हमारी फौज नहीं रुकेगी। उस भाव को जैसे भी आप उचित समझें इसमें सम्मिलित कर लें। लेकिन आज जो सरकार के विरुद्ध अविश्वास का प्रस्ताव आदरणीय सदन के सम्मुख विचाराधीन है। उस संबंध में हम सरकार की

[श्री मैनेजर सिंह]

आलोचना करने के लिये स्वतंत्र हैं जहां तक राष्ट्रीय संकट से संबंधित प्रस्ताव का सवाल है, देश हित में लड़ाई क्या हमारा योगदान हो उसी तक हमको प्रस्तुत प्रस्ताव पर सीमित रहना चाहिये और यही अच्छा होगा।

श्री अध्यक्ष---

मैं यह बतलाना चाहता हूं कि अगर माननीय रामसुन्दर पांडेय अब दूसरे विषयों पर वाद-विवाद करेंगे तो उनको नहीं बोलने दूंगा।

श्री रामसुन्दर पांडेय---

यह दल ऐसा नहीं है कि जो राष्ट्रीय हितों के संबंध में न सोचता हो। इसकी यह इच्छा रही है और सदा इसने राष्ट्रीय हित में काम किया है। आजादी की लड़ाई से अंग्रेजी हुकूमत को निकालने में यह दल कांग्रेस के साथ रहा है और कभी इसने राष्ट्रीय हित के खिलाफ बात नहीं की। अन्त में मेरा यह निवेदन है कि हमारे दल की ओर से जो सैनिक शहीद हुए हैं उनके परिवार को और परिवार वालों को संवेदना भेज दी जाय और इस दल का हर एक सदस्य देश के हित के लिये काम करने के लिये हर समय तैयार है।

*श्री नेकराम शर्मा---

अध्यक्ष महोदय, मुख्य मंत्री महोदय ने जो प्रस्ताव पेश किया है मैं मेरी पार्टी उसका हृदय से समर्थन करते हैं। मुख्य मंत्री जी ने जो एक बात कही, और जैसा सुना है कि अमेरिका ने इकोनामिक सैंक्शंस बन्द करने की धमकी दी है और ब्रिटेन ने भी कहा है कि अगर यू थाँट असफल होते हैं तो वह भी इकोनामिक सैंक्शन बन्द कर देगा जब तक यह युद्ध चलेगा। उस संबंध में मैं यह घोषणा करना चाहता हूं कि मैं एकवक्त खाना खाऊंगा और अगर जरूरत होगी तो पी०एल० ४८० का अन्न बिलकुल ग्रहण नहीं करूंगा। इसके साथ ही साथ मैं माननीय मुख्य मंत्री जी से निवेदन करना चाहता हूं कि जो उन्होंने कदम उठाये हैं उसमें मैं और मेरी पार्टी के सदस्य जो भी उनकी आज्ञा होगी, मानेंगे और जो भी कुर्बानी होगी उसे हम करेंगे।

*श्री भानुप्रतापसिंह (जिला बस्ती)---

अध्यक्ष महोदय, माननीय मुख्य मंत्री द्वारा इस युद्ध की स्थिति के विषय पर जो प्रस्ताव किया गया है मैं उसका हृदय से समर्थन करता हूं। श्रीमन्, आपको विदित है कि हमारी पार्टी के वयोवृद्ध नेता राजा जी भारत सरकार की नीतियों के कटु आलोचक रहे हैं। उन्होंने भी स्पष्ट रूप से यह कहा है कि भारत सरकार ने जो कदम उठाये हैं वे बिलकुल ठीक हैं, १६ आने सही हैं। इसलिये मैं इस बात का आश्वासन देता हूं कि हमारी स्वतंत्र पार्टी सब भेदभाव भुलाकर राष्ट्रीय संकट के समय सरकार का पूर्ण समर्थन करेगी।

जहां तक सुरक्षा संबंधी विषयों का संबंध है यहां अधिक बातें मैं नहीं करूंगा, मैं ज्यादा समय नहीं लूंगा लेकिन इतना कह देना चाहता हूं कि मैं स्वयं अपनी सेवायें भारत सरकार को या प्रदेशीय सरकार को बिना किसी तनख्वाह के अर्पित करता हूं और वे उसे जहां चाहें प्रयोग में ला सकती हैं। यदि उन्होंने हमारे लिये कोई काम नियुक्त नहीं किया तो फिर जैसा नेकराम शर्मा जी ने कहा है संभव है हमको अमेरिका से गल्ला मिलना बन्द हो जाय। इसका संकेत माननीय मुख्य मंत्री जी ने भी किया है मैं इसको एक चुनौती समझता हूं देश के लिए और ऐसा मालूम होता है कि बड़ी मुसीबत आने वाली है। लेकिन मैं समझता हूं कि यह मुसीबत देश के लिए वरदान सिद्ध होगी। हम अन्न में आत्म निर्भर हो सकते हैं, ऐसा मेरा विश्वास है और मैं वचन देता हूं कि मैं अपनी तहसील में ऐसे प्रयास करूंगा कि वहां अन्न की कमी नहीं पड़ने पायेगी तथा उत्पादन को बढ़ाने में मैं अपनी विशेष जिम्मेदारी समझूंगा।

---

*वक्ता ने भाषण का पुनर्वीक्षण नहीं किया।

श्री झारखण्डेराय—

मान्यवर, जो प्रस्ताव माननीय मुख्य मंत्री ने इस सदन में उपस्थित किया है मैं उसका अपनी पूरी पार्टी की ओर से हार्दिक स्वागत करता हूं। मैं इस मौके पर पाकिस्तान के बर्बर आक्रमण की तीव्र निन्दा करता हूं। मैं भारतीय जवानों की बहादुरी तथा शौर्य की प्रशंसा करता हूं और उनके उस त्याग और बलिदान के प्रति अपनी श्रद्धांजलि अर्पित करता हूं जो अपने राष्ट्र की सीमा की रक्षा में अपना बलिदान अर्पित कर रहे हैं।

मान्यवर, इस मौके पर मैं उस एंग्लो-अमरीकन-कांग्रेस कांसपिरेसी जिसके फलस्वरूप पाकिस्तान का निर्माण हुआ और पाकिस्तान को ४० अरब के आधुनिकतम हथियार दिये गये, जिसके कारण उसकी हिम्मत पड़ी कि उसने आज हमारी भारत माता को ललकारा है, की घोर निन्दा करता हूं। चीन की अवसर वादी और अन्ध भारत विरोधी नीति की घोर भर्त्सना करता हूं जो उसने पाकिस्तान से सिद्धांतहीन दोस्ती करके एशिया-अफ्रीका की नव स्वतंत्र सारी शक्तियों में फूट डाली है। इस मौके पर मैं स्पष्ट घोषणा करना चाहता हूं कि कम्युनिस्ट पार्टी बावजूद कांग्रेसी सरकार की नीति से मौलिक भेद होते हुये जहां तक देश की सुरक्षा का प्रश्न है, सदैव देश भक्ति शक्तियों और जनता के साथ रहेगी। मैं इस आदरणीय सदन के द्वारा इस प्रदेश की जनता से निवेदन करना चाहता हूं कि इस समय हमारा सर्व प्रमुख राष्ट्रीय कर्त्तव्य है कि हम देश में साम्प्रदायिक शांति बनाये रखें और हम अपने मतभेदों को भूल कर राष्ट्र की सुरक्षा में तन मन धन से जुट जायं। मैं इस मौके पर दो अपील करना चाहता हूं भारत सरकार से आपके जरिये और इस सदन के जरिये कि जिस बृटिश कांसपिरेसी के फलस्वरूप भारत माता का अंगच्छेद हुआ, देश का बंटवारा हुआ और पाकिस्तान की सृष्टि हुई, अब इस अवसर पर कामनवेल्थ आफ नेशन्स से संबंध विच्छेद की सविधि घोषणा होनी चाहिये और १९२९ की लाहौर में राप्ती के किनारे की प्रतिज्ञा पूरी करनी चाहिये, जिस लाहौर की ओर हमारे जवान बड़ी तेजी के साथ आगे बढ़ रहे हैं। दूसरी अपील मैं यह कहना चाहता हूं भारत सरकार से कि इस मौके पर देश में राष्ट्रीय भावना पैदा करने के लिए जितने पोलिटिकल प्रिजनर्स और नजरबन्द हिन्दुस्तान में गिरफ्तार किये गये हैं, जिनमें राष्ट्रीय नेता स्तर के हैं उनको छोड़ दें। इन शब्दों के साथ मैं इस प्रस्ताव का हार्दिक समर्थन करता हूं।

*श्री बलवानसिंह (जिला कानपुर)—

श्रीमन्, जो प्रस्ताव माननीया मुख्य मंत्री ने सदन में उपस्थित किया है उसका पूरी प्रजा सोशलिस्ट पार्टी समर्थन करती है। हमारी पार्टी के नेताओं ने दिल्ली में (व्यवधान) अगर इस तरह से राष्ट्रीय संकट के समय हम एक दूसरे के ऊपर बौछार करते रहेंगे तो इससे देश का क्या हित हो सकता है और यह कब तक होता रहेगा। आज हमारे राष्ट्र के ऊपर संकट है और हमारे इम्तहान का समय है और जमीन और जमीर पर पाकिस्तानी हमला हो रहा है उस समय क्या हमें यह सोचना चाहिये कि यह सोशलिस्ट पार्टी है, यह कांग्रेस पार्टी है। इस समय हिन्दुस्तान के जवानों के लिये खून की जरूरत है। मैं कहता हूं कि जितने भी हम लोग बैठे हैं सब लोग एक एक आदमी अपना खून देने के लिए तैयार हो, मोर्चे पर। जो हमारे जनसंघ के नेता ने कहा कि उनके ४० हजार वालंटियर तैयार हैं, मैं अपनी पार्टी की तरफ से जितने भी पार्टी के मेम्बर हैं, सब लोग तैयार हैं, किसी को भी मोर्चे पर भेज दें।

दूसरे, जब तक पाकिस्तान का युद्ध है, मैं अपनी असेम्बली की पूरी सैलरी सरकार को अर्पित करता हूं। और मेरी सरकार से अपील है कि १८ साल से पाकिस्तान हमसे छेड़-खानी कर रहा है, उसने हिन्दुस्तान की जनता को डिमारलाइज करने की कोशिश की है,

---

*वक्ता ने भाषण का पुनर्वीक्षण नहीं किया।

[श्री बलवानसिंह]

अब मौका आ गया है कि जब तक भारत की एक एक इंच जमीन वापस न हो जाय तब तक हमारी सरकार पाकिस्तान की बर्बर और गैरजिम्मेदार सरकार से किसी किस्म की बात न करें। इन शब्दों के साथ मैं प्रस्ताव का हार्दिक स्वागत करता हूं।

*श्री खेमचन्द (जिला आगरा)—

मान्यवर, मैं माननीया मुख्य मंत्री के प्रस्ताव का हृदय से स्वागत करता हूं तथा इस पर जो भावनायें देश रक्षा के प्रति व्यक्त की गयी हैं उनसे अपने को और रिपब्लिकन पार्टी को सम्बद्ध करता हूं।

राष्ट्र का प्रश्न व्यक्तियों के ऊपर होता है। राष्ट्र की रक्षा हमारा परम धर्म है। इस कर्त्तव्य के पालन में इस प्रस्ताव का आना बहुत शुभ है। हमारा मतभेद आपस में हो सकता है लेकिन हमारा आपसी मतभेद बाहर के लिए कभी भी बाधा नहीं बन सकता है। इस बात को ध्यान में रखते हुए मैं विश्वास दिलाता हूं कि हम सब नौजवानों की जहां जहां भी और जिस प्रकार से भारत की रक्षा के लिए हमारी सेवाओं की आवश्यकता हो, हमारे सहयोग की आवश्यकता हो, हमारी सेवाएं राष्ट्र के लिए अर्पित हैं। हमको कभी भी मोर्चे पर भेज दिया जाय, हम हटने वाले नहीं हैं। हमारी राष्ट्रीय कार्यकारिणी २६ जून को जब कि पकिस्तान ने कच्छ की तरफ बढ़ने की कोशिश की थी एक प्रस्ताव लिया था। राष्ट्र की रक्षा की जिम्मेदारी हम सब पर है। जब तक हमारे सम्मान पर जरा भी धब्बा रह जाय, वह मिटा नहीं लेते तब तक हम चैन नहीं लेंगे। इन भावनाओं के साथ माननीया मुख्य मंत्री जी ने जो प्रस्ताव रखा है, उसका मैं हृदय से स्वागत एवं समर्थन करता हूं।

*श्री मुमताज मुहम्मद खां (जिला बुलन्दशहर)—

माननीय अध्यक्ष महोदय, आज जब कि हमारे देश, हमारी मातृ-भूमि पर पाकिस्तान ने आक्रमण किया है, हमारा सब का फर्ज हो जाता है कि तन-मन धन से, जैसे भी हो, अपने देश की सेवा के लिए, देश की रक्षा के लिए कुर्बान कर दें। कोई भी चीज दुनिया के अन्दर मातृभूमि से बड़ी नहीं है। कोई कुर्बानी उसके लिये बड़ी नहीं। हर चीज से ज्यादा मुल्क है और उसके लिए जो कुर्बानी की जाय वह कम है। मैं विश्वास से कहता हूं कि भारतवर्ष का हर मुसलमान अपने खून का आखिरी कतरा अपने मादरेवतन पर कुर्बान कर देगा और पाकिस्तान को मुंहतोड़ जवाब देगा जिससे उसकी मजाल नहीं हो सकेगी कि देश की तरफ आंख उठा कर देखे। मैं माननीया मुख्य मंत्री जी के इस प्रस्ताव का पूर्ण रूप से हार्दिक स्वागत करता हूं। और मैं उन्हें विश्वास दिलाता हूं कि आज न सिर्फ उत्तर प्रदेश बल्कि पूरे मुल्क का बच्चा बच्चा अपने देश पर मरने के लिये तैयार है।

श्री ए० सी० ग्राइस (नाम निर्देशित आंग्ल भारतीय)—

अध्यक्ष महोदय, मैं स्पीच बहुत नहीं देता हूं और न यह इसका मौका ही है। मुझे आज स्पीच नहीं देना है। मैं यहां पर सिर्फ एंग्लो-इंडियन एसोशिएशन ने जो रिज्यूलूशन पास किया है उसका जिक्र करना चाहता हूं। जितने हम लोग हैं हम सब इस रिज्यूलूशन के साथ हैं और हम सब अपना खून देंगे देश को बचाने के लिये।

श्री अध्यक्ष—

मैंने इस आदरणीय सदन की भावनाओं को सुना। चाहे हिन्दू हो, चाहे मुसलमान, चाहे ईसाई, कोई भी धर्मावलम्बी हो, किसी भी पार्टी का हो—चाहे जनसंघ का, चाहे पी०एस० पी०

---

*वक्ता ने भाषण का पुनर्वीक्षण नहीं किया।

या किसी भी दल का हो–प्रत्येक भारतीय शरीर में भारतीय रक्त बह रहा है तथा वह रक्त आज पुकार पुकार कर कह रहा है कि हम भारत माता के संरक्षण के लिये अपने आप को समर्पित करते हैं। इस भावना को हृदय में रखते हुए यह प्रस्ताव आपके सामने प्रस्तुत है, मैं आशा करता हूं सब एक मत होकर इसका खड़े होकर समर्थन करेंगे।

(सदन के प्रत्येक सदस्यों ने अपने अपने स्थान पर खड़े होकर प्रस्ताव का समर्थन किया और प्रस्ताव स्वीकृत किया गया।)

मंत्रि-परिषद् के विरुद्ध अविश्वास के प्रस्ताव को वापस लेने का सुझाव

श्री लखपतराम शर्मा (जिला झांसी)—

मैं अब दो शब्द आपसे कहना चाहता हूं, जो बहुत आवश्यक हैं। मैं कोई ऐसी चीज नहीं कहूंगा जिससे आदरणीय सदन को कोई ठेस पहुंचे। मैं केवल संक्षेप में अपनी बात कहना चाहता हूं।

(व्यवधान)

इस आदरणीय सदन में एक अविश्वास का प्रस्ताव चल रहा है, इस पर लोग अपने अपने विचार प्रकट करेंगे ही, किन्तु मैं आपसे एक नम्र अपील करना चाहता हूं कि जब इस प्रकार का देश में वातावरण हो चुका है, देश संकटापन्न स्थितियों से गुजर रहा है, शहरों के अन्दर लड़ाई बढ़ती आ रही है....

श्री अध्यक्ष—

आखिर आप कहना क्या चाहते हैं?

श्री लखपतराम शर्मा—

यह अविश्वास का प्रस्ताव वापस किया जाना चाहिये, इसका वापस होना देश के लिये आवश्यक है।

श्री अध्यक्ष—

यह तो आपस में तय कर लीजिये, यह यहां सदन में कहने वाली बात नहीं है। आदरणीय मुख्य मंत्री ने यह कहा था कि आज और कल किसी समय हम बैठकर कुछ अपना कार्य निर्धारण कर लेंगे ताकि हमारे मस्तिष्क में यह साफ हो जाये कि हम क्या कार्यक्रम चाहते हैं। यह भी ठीक होगा कि हम अलग अलग बैठकर विचार कर लें तो अपने लिये, प्रदेश के लिए और कान्स्टीट्यूएन्सी के लिये कार्यक्रम निर्धारित कर सकें।

भीषण वर्षा से गोवर्धन बांध में दरार पड़ने से क्षति के संबंध में नियम ५२ के अन्तर्गत सूचना

श्री अध्यक्ष—

माननीय उग्रसेन ने एक गोवर्धन बांध के सम्बन्ध में बाढ़ की सूचना भेजी है, जो इस प्रकार है, "भीषण वर्षा के कारण गोवर्धन बांध में परसों दिनांक ६–९–६५ को दरार पड़ गयी जिसके कारण आगरा, मथुरा और भरतपुर के उत्तर प्रदेश के हिस्से के लगभग ५०० गांव बाढ़ से डूब गये हैं। ५००० से अधिक लोग गांवों में पानी से घिरे पड़े हैं आदि।" यह मैं माननीय राजस्व मंत्री के पास भेज रहा हूं, जब वह बाढ के संबंध में वक्तव्य देंगे तब इस पर भी बता देंगे।

श्री उग्रसेन (जिला देवरिया)--

नियम ५२ के अन्तर्गत लीजिये, जिससे हम प्रश्न भी पूंछ सकें।

श्री अध्यक्ष--

प्रश्न पूछ लीजियेगा।

श्री जगदम्बा प्रसाद (जिला फैजाबाद)--

मैंने आपके लिए एक सूचना भेजी थी जिसका जिक्र आपने नहीं किया। एक सूचना कि फैजाबाद जिले में तहसील के अधिकारिगण चन्दा वसूल कर रहे हैं और उसकी कोई रसीद जनता को नहीं दे रहे हैं।

श्री अध्यक्ष--

अब एक तो स्वीकार कर दिया, दूसरा स्वीकार नहीं हो सकता।

श्री जगदम्बा प्रसाद--

अच्छा आप उसे राजस्व मंत्री के पास तो भेज दीजिये।

श्री अध्यक्ष--

वह तो चला ही जायगा।

हाई स्कूल एवं इन्टरमीडियेट कालेजों के विज्ञान अध्यापकों के वेतन-क्रम में बढ़ोत्तरी के अनुरूप शासन द्वारा अनुदान न देने के संबंध में वक्तव्य

शिक्षा उपमंत्री (डाक्टर रामनारायण पांडेय)--

इस सम्बन्ध में निवेदन है कि शासन को यह ज्ञात हुआ है कि माध्यमिक शिक्षा संस्थायों में विज्ञान अध्यापक मिलने में कठिनाई उत्पन्न हो गई है। इसका कारण यह है कि विज्ञान स्नातक तथा स्नातकोत्तर दूसरे विभागों में बड़ी संख्या में जा रहे हैं क्योंकि वहां उनको अधिक वेतन मिल रहा है। इस कठिनाई को दूर करने के लिये शासन ने १९ मार्च, १९६४ को यह आदेश दिया कि १९६३-६४ अथवा उसके पश्चात् नियुक्त होने वाले विज्ञान अध्यापकों को एल० टी० ग्रेड में ८ अग्रिम वेतन वृद्धि तक तथा इन्टर कक्षाओं के लेक्चरार वेतन क्रम में ५ अग्रिम वेतन वृद्धि तक, शिक्षा निदेशक की स्वीकृति से देकर नियुक्त किया जा सकता है। शिक्षा निदेशक ने संस्थावार एक निर्धारित प्रपत्र पर ३१ अगस्त, १९६४ तक सूचना मांगी है जिसमें उसके अनुसार अगणन कर विद्यालयों को उचित अनुदान दिया जा सके। देखा गया कि यह सूचना सभी विद्यालयों से समय पर या सही रूप में प्राप्त होने में बिलम्ब हुआ। अब तक ६२५ विद्यालयों से विज्ञान अध्यापकों को अग्रिम वेतन वृद्धि देने के लिये मांग निदेशालय में प्राप्त हुई, जिनमें से ५३६ विद्यालयों को ५,३६,९०९ रुपये का अनुदान स्वीकृत किया जा चुका है। शेष ९९ विद्यालयों की मांगों की जांच हो रही है और उन पर भी शीघ्र निर्णय हो जायगा।

द्वितीय वर्ष १९६५-६६ में जो विज्ञान अध्यापक नियुक्त किये जायेंगे उनके बारे में भी निर्धारित प्रपत्र पर विद्यालय के प्रबन्धकों को सूचना ३१ अगस्त, १९६५ तक भेजनी है और प्राप्त होने पर उन्हें भी अनुदान दिया जायगा।

एक बार किसी विज्ञान अध्यापक को अग्रिम वेतन वृद्धि स्वीकार हो जाने के बाद अगले वर्ष में उनके वेतन पर अनुदान विद्यालय के अनुपालन अनुदान में ही सम्मिलित कर दिया जायगा।

(श्री राम सुन्दर पांडेय के खड़े होने पर)

श्री अध्यक्ष---

यह तो केवल बक्तव्य के लिये था ।

श्री रामसुन्दर पांडेय (जिला आजमगढ़)---

हमारे नियम ५२ की सूचना में यह था कि अनुदान अब तक नहीं मिला है, इसको सरकार ने स्वीकार भी किया है तो फिर ६४-६५ का अनुदान अभी तक नहीं दिया गया, ६५-६६ की बात तो अलग है । तो मैं यह जानना चाहता हूं कि ५३६ विद्यालयों को यह अनुदान कब मिला है ?

डाक्टर राम नारायण पांडेय---

श्रीमन्.....

श्री अध्यक्ष---

बहुत विस्तार की आवश्यकता नहीं है ।

डाक्टर राम नारायण पांडेय---

श्रीमन्, इसमें जिनकी सूचना आयी है उनमें से जिनको बेरी हाई नहीं किया जा सका है, उनको नहीं दिया गया और जिनका एक बार शुरू हुआ उनको बराबर मिलता रहेगा। जिनको नहीं मिला है उनके लिये सूचना मंगाकर शीघ्र निपटाया जायगा ।

मंत्रि-परिषद् के विरुद्ध अविश्वास का प्रस्ताव (क्रमागत)*

*श्री बद्रीप्रसाद पालीवाल (जिला इटावा)---

श्रीमन्, मैं आपके माध्यम से माननीय विरोधी दल के नेता और सदस्यों से बड़ी नम्रता-पूर्वक निवेदन करना चाहता हूं कि अभी हाल ही में हमने एक प्रस्ताव यहां पर पास किया है। परिस्थिति की गम्भीरता को देखते हुये, जनहित में यह आवश्यक है कि हम प्रत्येक हृदय में यह भावना उत्पन्न करें कि हम एक होकर राष्ट्र की रक्षा करने के लिये कटिबद्ध हो गये हैं और सदन स्थगित हो जाय और हम अपने अपने क्षेत्रों में जाकर लोगों का मनोबल बढ़ावें। इसलिये मैं माननीया मुख्य मंत्री जी से निवेदन करूंगा कि वे सदन को अभी स्थगित कर दें और माननीय सदस्यों से भी निवेदन करना चाहता हूं कि अविश्वास और विश्वास के समय तो फिर आयेंगे, आते रहेंगे लेकिन ऐसी विकट बेला राष्ट्र पर नहीं आवेगी, इसलिये इस प्रस्ताव को आप वापस ले लें ।

श्री अध्यक्ष---

यह प्रश्न पहले आ चुका है और माननीय बनारसीदास जी ने कहा है कि इस विषय में परामर्श करके बाद में निश्चित होगा ।

*श्री कृष्णानन्द राय (जिला गाजीपुर)---

अध्यक्ष महोदय, मुझे ऐसा प्रतीत हो रहा था कि माननीया मुख्य मंत्री जी के आज इस सदन में आते ही एक, ऐसा प्रस्ताव रखने पर, जिसमें विरोधीदल के नेताओं की भावनायें भी निहित हैं, और जिस तरह की परिस्थिति आज देश में खड़ी है, यह अविश्वास का प्रस्ताव वापस हो जायगा लेकिन मुझे दुख ह कि यह प्रस्ताव वापस नहीं हो सका । इसके ऊपर मुझे

---

*७ सितम्बर, १९६५ की कार्यवाही से ।

*वक्ता ने भाषण का पुनर्वीक्षण नहीं किया ।

[श्री कृष्णानन्द राय]

अपने विचार प्रकट करने पड़ रहे हैं। जिस समय विरोधी दल के नताओं ने इस प्रस्ताव की अनुज्ञा इस सदन में मांगी थी उस समय हिन्दुस्तान और पाकिस्तान की फौजे इतने निर्णायक युद्ध में नहीं टकरा रही थीं। इस समय जबकि यह प्रस्ताव पेश हुआ है उस समय यह युद्ध बहुत निर्णायक स्थिति म पहुंच गया है . . .

श्री अध्यक्ष—

यह हो सकता है कि यह प्रस्ताव बाद में वापस हो जाय इस पर आलोचना न हो तो अच्छा है।

(इस समय १२ बजकर ५७ मिनट पर अधिष्ठाता, श्री रामायण राय पीठासीन हुये।)

श्री कृष्णानन्दराय—

मैं आलोचना नहीं कर रहा हूं। मेरी यह निश्चित धारणा है कि यह एक अजीब प्रस्ताव सदन के सम्मुख रहा है। अब इसको माननीय विरोधीदल ने एक प्रतिष्ठा का इशु बना लिया है और अब इससे किसी तरह वह निकल नहीं रहे हैं। इस सम्बन्ध में अभी तक विरोधी दल के नेताओं की ओर से जो भाषण हुये हैं उससे यह स्पष्ट जाहिर हो गया है कि न तो उनकी आत्मा, न उनका हृदय और न उनका मन इस अविश्वास के प्रस्ताव के समर्थन में है। कल यहां पर कुछ ब्रिटिश हिस्ट्री का चर्चा किया गया। लड़ाई के जमाने में लायड जार्ज ने चैम्बरलेन से यह कहा था कि आप यहां से हट जाइये। मैं अपने विरोधी दल के भाइयों से निवेदन करना चाहता हूं कि यदि उस ब्रिटिश हिस्ट्री को देखा जाय तो यह पता चलेगा कि इस समय जो हमारे देश की स्थिति है वह बिलकुल भिन्न है। चैम्बरलेन ने ५, ६ महीने बीतने के बाद म्युनिक में उसी स्थान पर जाकर हिटलर से समझौते का प्रयास किया था...

श्री केशरी प्रसाद पांडेय (जिला जौनपुर)—

इसका जवाब नायर जी दे चुके हैं।

श्री कृष्णानन्दराय—

मैं यह निवेदन कर रहा था कि २९, ३० अप्रैल की बात है कि चैम्बरलेन ने ब्रिटिश पार्लियामेंट में यह भाषण दिया था कि मैं अब भी यह समझता हूं कि हिटलर का दिमाग बदल सकता है। लेकिन उनके भाषण के बाद ब्रिटिश समुद्र में मेरी फ्लीट पर हिटलर ने अटैक किया था। इस ब्रिटिश फ्लीट पर अटैक से उनको बहुत धक्का लगा। बाद में उनको हटना पड़ा। इस तरह की स्थिति इंगलैण्ड में उत्पन्न हुई कि पार्लियामेंट में उनके प्रति अविश्वास प्रकट किया गया। हिटलर के बंबार्डमेंट से ब्रिटिश नेवी को काफी नुकसान उठाना पड़ा और तीन मई को एक रेजोल्यूशन आया पार्लियामेंट में और ६८ टोरी दल के सदस्य अधिक थे लेकिन ३८ टोरी दल के सदस्यों ने इस मोशन पर विरोधी दल का साथ दिया और चर्चिल जो उस समय गवर्नमेंट में एक मंत्री थे उन्होंने इस बात को स्वीकार किया कि यह खेदजनक परिस्थिति है और इस पार्लियामेंट का सरकार में विश्वास नहीं रह गया है। ऐसी परिस्थिति में ही सर लायड जार्ज ने चैम्बरलेन से अनुरोध किया था कि ईश्वर के लिये आप यहां से चले जायं। यदि विरोधी दल के नेता उस हिस्ट्री के आगे भी एक पृष्ठ पढ़े होते तो उन्हें पता चलता कि सर लायड जार्ज ने ब्रिटिश गवर्नमेंट से भी कहा था कि 'आई वान्ट नथिंग फ्राम यू। गो ऐ हेड विद वार एफर्टस। 'तो देश में जितनी डेमाक्रेटिक संस्थाएं हैं वे केवल विरोध और आलोचना की जगह न रह कर नेशनल एक्जीक्यूटिव इन ऐक्शन न बन जाय, यह म चाहता हूं। (व्यवधान)

श्री अधिष्ठाता—

सदन में बातें बहुत हो रही हैं। आप लोग शान्त रहें।

श्री कृष्णानन्द राय—

अभी इस सदन में एक सदस्य द्वारा मांग की गयी कि इस सदन को स्थगित कर दिया जाय। श्रीमन्, यह पार्लियामेंट की ग्लोरी है, डेमोक्रेटिक इंस्टीटयूशन्स की ग्लोरी है कि १९३९ से १९४५ तक इंगलैण्ड भयंकर युद्ध में फंसा रहा लेकिन उसके साथ-साथ पार्लियामेंट में सरकारी दल और विरोधी दल में इस बात की होड़ लगी रही कि वार एफर्ट के लिये कितना ज्यादा से ज्यादा पैसा दिया जाय। आज देश के सभी डेमोक्रेटिक इंस्टीटयूशन्स के सामने यही एक बात होनी चाहिये कि वे विरोध की साधारण मान्यताओं को भुना कर इस तरह के प्रयास कर जिससे हम युद्ध में सफलता प्राप्त कर सकें। मुझे दुख के साथ कहना पड़ता है कि हमारे विरोधी दल के नेता माधव प्रसाद त्रिपाठी जी ने कल एक बड़ी शर्मनाक मांग की थी। उन्होंने कहा था कि राष्ट्रपति इस उत्तर प्रदेश के शासन को अपने हाथ में ले लें। इस मांग के पीछे क्या उनका यह मंशा है कि यहां भी पाकिस्तान की तरह डिक्टेटरशिप कायम हो जाय ? या यह इसलिये है कि हम भी अयूब खां के चरणों का अनुसरण करें ? या वह यह चाहते हैं कि हम भी वहां की तरह मिलिटरी डिक्टेटरशिप हो जाय ? यह एक शर्मनाक मांग है और हिन्दुस्तान की किसी भी असेम्बली या पार्लियामेंट को यदि प्रेसीडेंट अपने अधिकार में लेना चाहते हैं तो हम उसका सख्ती से विरोध करेंगे। मैं यह निवेदन कर रहा था कि कल जनसंघ के नेता माधव प्रसाद जी ने एक विचित्र बात कही। उन्होंने कहा कि हम केन्द्रीय सरकार का समर्थन करते हैं, सीमा पर लड़ने वाले जवानों का समर्थन करते हैं, लेकिन वह इस उत्तर प्रदेश सरकार का समर्थन नहीं करते। वह यह समझते हैं कि उत्तर प्रदेश सरकार का युद्ध प्रयासों में कोई हाथ नहीं है। मैं उनको बताना चाहता हूं कि यह सही है कि केन्द्रीय सरकार ने जो कदम उठाये हैं वे काबिले तारीफ हैं, जो जवानों ने बहादुरी दिखायी है वह भी काबिले तारीफ है लेकिन यह लड़ाई केवल केन्द्रीय सरकार या वे जवान ही नहीं लड़ सकते। इस लड़ाई को हमारे उत्तर प्रदेश के हर गांव के हर व्यक्ति को लड़ना होगा। जनता का जितना मारेल ऊंचा होगा, जितना त्याग वह कर पायेगी, उतनी ही हम सफलता प्राप्त कर सकेंगे। यह तो टोटल वार होती है। इसके बिना हम सफलता प्राप्त नहीं कर सकते। मैं जनसंघ के नेताओं से पूछना चाहता हूं कि उत्तर प्रदेश की साढ़े सात करोड़ जनता के सामने क्या वे यही राग अलापना चाहते हैं कि उत्तर प्रदेश की सरकार अक्षम है, बेईमान है। और यह कहना चाहते हैं कि जब तक यह सरकार एक्जिस्ट करती है तब तक आप कुछ नहीं कर सकते ? यदि इस प्रदेश के साढ़े सात करोड़ जनता को हमारा विरोधी पक्ष इस तरह की शिक्षा दे तो क्या यह बात वार एफर्ट में सहयोग के रूप में होगी। आज की यह मांग थी कि जितने विरोधी दल के नेता इकट्ठे हुए हैं वह शासन से मांग करते कि जितनी भी पेचीदगियां हैं इस शासन की जो कि खाद्य से या इंटरनल डिसआर्डर से संबंधित हैं, उनमें राष्ट्रीय कार्यक्रम बनाकर हम आपको सहयोग देना चाहते हैं।

एक मांग जरूर की विरोधीदल के नेता ने, मैं उसके समर्थन में हूं, लेकिन मुख्य मंत्री ने उसे पूरा कर दिया है। उन्होंने मांग की थी कि जिस प्रकार से हमारे प्रधान मंत्री विरोधी दल के नताओं को बुला कर के युद्ध के संबंध में नीति पर परामर्श और सहयोग लेते हैं उसी प्रकार से मुख्य मंत्री को करना चाहिये था। आज मुख्य मंत्री ने उसको पूर्ण कर दिया और बैठक की भी उन्होंने घोषणा की है कि वह विरोधी दल के नेताओं को बुला कर आपस में परामर्श करना चाहती हैं और एक प्रस्ताव भी इसीलिये लायीं कि उसमें सभी का हक हो। मैं विश्वास करता हूं कि लड़ाई का भार सारे देश के लेना है। अगर ट्रेजरी बेंच के बैठने वाले समझें कि हम ही चलायेंगे तो यह उचित नहीं है। विरोधी दल के नेताओं को कम से कम इतनी इम्पार्टेंस देनी चाहिये, इस परिस्थिति में रखना चाहिये कि वह अनुभव कर सकें कि उनकी आवश्यकता इस नेशनल क्राइसिस में सरकार महसूस करती है, उनको बुला कर परामर्श करती है। तब राष्ट्र में उनका एक महत्वपूर्ण स्थान होगा, महत्वपूर्ण भूमिका होगी। सरकार इसके लिये तैयार भी है और उसके लिये उन्हें दुखित नहीं होना चाहिये।

[श्री कृष्णानन्द राय]

अन्त में मैं अनुरोध करूंगा कि आज विधान सभा में ऐसी परिस्थिति पैदा हो गयी है कि समस्त विरोधी दल के नेता मिल कर परामर्श करें और सहयोग दें और प्रदेश में ऐसा वातावरण उत्पन्न करें जिससे वार एफर्ट्स सफल हो सकें।

श्री यादवेन्द्रदत्त (जिला जौनपुर)---

अधिष्ठाता महोदय, आज जो अविश्वास का प्रस्ताव आया है, मैं सोच रहा था कि बोलना चाहिए या नहीं। मेरे मन में कल से इस विषय में दुविधा थी। परन्तु मेरा दुर्भाग्य है कि आज जिस प्रकार से तानाशाही वृत्ति और असहयोग की वृत्ति इस सदन में उधर से देखने को मिली उसने मुझे बोलने को बाध्य कर दिया।

अभी कृष्णानन्द राय ने ढिंढोरा पीटा सहयोग का। मैं पूछता हूं क्या सहयोग? हमसे कभी पूछा गया सहयोग के लिए, या हम सहयोग की रस्सी लगा कर घूमेंगे? आप तो अपनी अकर्मण्यता और अपात्रता राष्ट्रीय संकट में छिपाना चाहते हैं, जैसे सरकार और राष्ट्र एक हो। गलत बात है। सरकारें आयेंगी और जायेंगी---राष्ट्र अजर-अमर और अक्षुण्ण है और आवश्यकता हुई तो सरकारों को हटाना पड़ेगा।

जिस चैम्बरलेन का उदाहरण दिया है, नार्वे की पराजय के बाद हाउस आफ कामन्स में घटना हुई है। अभी हमारी पराजय नहीं हुई है, और वह उस समय हुआ, अगर आप प्रोसीडिंग्स पढ़ेंगे तो शायद आपको जानकारी अधिक हो, कि जब ब्रिटेन के लिए जीवन और मरण का प्रश्न था उस समय चैम्बरलेन को हटाया गया। हमारी गांठ भी इस सरकार से नहीं बनेगी जिस सरकार में इतनी तावबाजी है कि वह हमारी बात भी सुनने को तैयार नहीं है। राष्ट्र के लिये सहयोग देने के लिये हम तैयार हैं और हम सदा देंगे, सहयोग देने में हम आपसे पीछे नहीं रहेंगे। मुझे दुख है कि इस समय माननीया मुख्य मंत्री यहां नहीं हैं। वे होतीं तो मैं उनसे ही पूछता। एक बार मैं और माधव बाबू उनसे मिलना चाहते थे। उस समय मिलना चाहते थे जब चीन की सेनाओं का जमाव था आसाम के सूबे की सरहद पर। जून का शायद महीना था। मैंने माननीया मुख्य मंत्री को एक पत्र लिखा और तार भी भेजा कि मैं और माधव बाबू दोनों आना चाहते हैं, आप हमारे लिये सुविधा दें। माननीया मुख्य मंत्री जी का उत्तर आया कि आपके आने की आवश्यकता नहीं है। जब हमारे आने की आवश्यकता नहीं है तो आप किस मुंह से हमसे सहयोग मांगते हैं? आप हमसे सहयोग मांगें, और जब हम सहयोग लेकर आयें तो आप हमें उस तरह से दुतकार दें जिस तरह से कुत्ते को दुतकारा जाता है। आज इस सरकार को होश आया है कि युद्ध हो रहा है।

हमने चिल्ला चिल्ला कर कहा और इसी सदन में कहा कि कीट्स इंजीनियरिंग वाले नाजायज हथियार बना रहे हैं, इनको रोकिये। उनका उद्देश्य यही है कि प्रदेश में गड़बड़ी पैदा करें जब भी आवश्यकता हो। यह उसी योजना का एक अंग है कि आज पैराशूट्स उतारे जा रहे हैं। उनका कोई और लक्ष्य नहीं है, केवल यही कम्युनल रायट्स हों और सैबोटाज किया जाय। कीट्स इंजीनियरिंग वाले मामले में आपने क्या किया? क्या मुकदमा चलाया? उनको पकड़ा? जेल में बन्द किया? कुछ नहीं हो रहा है। अभी हमारी तरफ से कुंवर श्रीपाल सिंह ने बताया था कि कितने ट्रान्समीटर्स यहां पर हैं। माननीया मुख्य मंत्री ने कहा था कि उनको उसकी जानकारी करायी जाये, वे जांच करवायेंगी? एक लिस्ट भी उसकी उनको दी गयी। हम सूचना देते हैं, आप उनको पकड़ते नहीं। बलिया में एक जासूस पकड़ा गया, बहादुर खां, जिसकी जेब से कुछ नक्शे वगैरह भी निकले थे। एक डायरी भी निकली थी जिसमें लिखा था कि किस किस से मिलना है, क्या करना है। माननीया मुख्य मंत्री इस समय नहीं हैं, मैं चाहता हूं, डाक्टर सीताराम हैं, वे मेरी बात को उन तक पहुंचाने की कृपा करें। जिस समय मैंने उनसे यह पूछा कि इस नाम का आदमी बलिया में पकड़ा गया या नहीं, ये चीजें उसके पास से निकलीं

या नहीं, मुख्य मंत्री ने गोल उत्तर दिया कि ये सब बातें पब्लिक इंटेरेस्ट में नहीं करनी चाहिये । क्या किया आपने उस आदमी की डायरी के बारे में ? कितने आपने राउन्ड अप किये ?

श्रीमन्, आपको चिल्ला २ कर कहा गया कि आज स्पाइंग बड़े जोरों में हो रहा है। यह भी कहा गया कि हजारों पाकिस्तानी मौजूद हैं जो बिना वीसा के हैं, बिना परमिट के हैं। क्या उनको आपने वावत करने के लिये रख रक्खा है। क्यों रोक रक्खा है आपने उनको ? आपकी पुलिस क्या कर रही है ? वाह रे प्रशासन, इस संकट की घड़ी में भी जो देश सुरक्षा के लिये देश के दुश्मनों को पकड़ने में असमर्थ है। किसके साथ में हम सहयोग करें कहा जाता है कि गवर्नमेंट के साथ। किस गवर्नमेंट के साथ। इस असमर्थ गवर्नमेंट के साथ, आपके सदन में दो लोग ऐसे मौजूद हैं, नाम नहीं लेना चाहता, जिनके ऊपर जिला अधिकारियों की रिपोर्ट हैं। कि इनका सम्बन्ध पाकिस्तान से है। आपने दो सांप अपनी आस्तीन में पाल कर रक्खे हैं। दूध पिलाया है। आपने क्या उन लोगों को पकड़ा है ? क्या सुरक्षा होगी इस प्रदेश की श्रीमन्, जब उधर सारे ट्रान्समीटर्स काम कर रहे हैं, जब इस प्रकार के जासूस, इस प्रकार के हथियार बनाने वाले कारखानों के लोग स्वच्छन्द और आनन्द से घूम रहे हैं अपनी पुलिस गोली चलाती है, किन पर ? भागते हुए प्रदर्शनकारियों पर जो रोटी मांगते हैं, गोरखपुर में उनकी पीठ पर छर्रे लगते हैं। हमारी पुलिस दुश्मनों को पकड़ने में तेज नहीं है। मैं एक पूर्वी कहावत कहता हूं मैं नहीं जानता कि वह संसदीय है या नहीं "तबेले में लतियाहुज"। मैं कहना नहीं चाहता कि सहयोग किससे हम करें जो एक दूसर के प्रति आज इस प्रकार कटकटाकर बैठे हुए हैं और कैसे कैसे गन्दे आरोप एक दूसरे पर लगा रहे हैं। कन्जरवेटिव का शासन गया, चेम्बरलेन गया, चर्चिल आया। यहां लाइये उन लोगों को जिनके अन्दर युद्ध में अनुशासन करने की पात्रता हो। आप यह सोचकर बैठें कि ऐसे पात्र लोग नहीं हैं २८८ में मैं इसको मानने के लिये तैयार नहीं हूं। राष्ट्र में पर्सनालिटी का सवाल नहीं हुआ करता। मैं श्रीमन्, आपकी आज्ञा से पढ़ देना चाहता हूं। वह उस समय के हाउस आफ कामन्स में वार लीडर शिप के ऊपर बोलते हुए कहा गया था—"फैसिलिटी इन डिबेट, एबिलिटी टू स्टेट"—भाषण आदि में दक्षता आदि यह शान्ति का काल नहीं है—वार लीडरशिप के लिये मैं पढ़कर सुना देता हूं :

"There are fatal calamities involved ; the war leadership demands vision. daring swiftness. consistency of precision and the very cons ciousness of victory."

हमें वह नेतृत्व चाहिये जिसके अन्दर विजन हो, दूर देखने की दृष्टि हो, आज वह नेतृत्व चाहिये जिसके अन्दर दृढ़ता हो , आज वह नेतृत्व चाहिये जिसके अन्दर सारे प्रदेश का विश्वास हो और विश्वास इस दृष्टि से हो कि यह जो नेतृत्व हो वह हमको विजय दिलाये। मैं नाम नहीं लेना चाहता लेकिन आपके ही मंत्रिमंडल में माननीय मंत्रि महोदय हैं जिनके अन्दर यह साहस था कि इसी सदन में वे यह कह सके कि उनके पास कोई माननीय सदस्य किसी अधिकारी की जायज शिकायत ले कर आयेगा मैं निश्चित उनको निकाल कर बाहर कर दूंगा। हैं आपके मंत्रियों में यह साहस कि आप इस युद्ध काल में यह कह सकें कि अगर विरोधी पक्ष का कोई भी माननीय सदस्य हमसे कह देगा कि हमें तुम्हारे ऊपर अविश्वास है तो मैं कुर्सी छोड़ कर चला जाऊंगा। आज इस प्रकार का दृढविश्वासी , महत्प्रयासी नेतृत्व चाहिये। आप कहते हैं अविश्वास का प्रस्ताव क्यों लाया गया ? अविश्वास का प्रस्ताव इसीलिये लाया गया। आज जो आपका पीस टाइम का नेतृत्व है, उस नेतृत्व के द्वारा इस युद्ध के समय में सफलता नहीं प्राप्त की जा सकती। जिस नेतृत्व के द्वारा इस युद्ध में सारे प्रदेश के रिसोर्सेज, उसकी सारी शक्ति, उसकी सामर्थ्य विजय की दृष्टि से एक स्थान पर पिनप्वाइंट की जा सके, उस प्रकार का नेतृत्व देने में मुझे दुख के साथ कहना पड़ता है कि आज का नेतृत्व असफल है। और उसके कारण हैं। अभी मैंने एक कारण आपको बताया कि इस प्रकार की कार्यवाहियां करने वालों को पकड़ने में आप असमर्थ रहे। दूसरी ओर आप देखिये, युद्ध काल में प्रशासन का जो ढांचा है उसमें शान्ति चाहिये, एकता चाहिये। लेकिन आपके ही कारण यह पे कमेटी की रिपोर्ट जो निकली है

[श्री यादवेन्द्रदत्त]

इस पे कमेटी की रिपोर्ट ने आपके प्रशासन के ढांचे में आग लगा दी है। केवल आई० सी० एस० और आई०ए०एस० के माध्यम से यह कमेटी बनी और उनके ही हित में बनी और बाकी जितना भी आपका प्रशासन का ढांचा है उसका अहित किया गया। नतीजा यह है कि आज जब युद्ध की अग्नि में हमको जाना है तो प्रशासन का ढांचा जो दृढ़ होना चाहिये था वह चरमराकर हिल रहा है और उनके अन्दर असंतोष घर कर गया है। अगर आपको युद्ध कालीन स्थिति का वास्तविक अनुभव है तो आप पहला कदम उठाएं कि इस पे कमेटी कि रिपोर्ट को समाप्त करें जिसके कारण आपके प्रशासन के ढाँचे के अन्दर वैमनस्य, विद्वेष और असंतोष फैल रहा है क्योंकि उनके अन्दर शान्ति, एकता और असंतोष की आवश्यकता है। जो सरकार इस प्रकार का नेतृत्व अपने प्रशासन के ढांचे को नहीं दे सकती वह प्रदेश को क्या देगी ?

मुझे बड़ा आश्चर्य हुआ कल माननीय नवल किशोर जी के भाषण को सुनकर, बड़ा उन्होंने सर्मन आन दि माउंट जिसे मैं कहूं, उस प्रकार से समर्थन दिया। परन्तु कुछ समय पहले का उन्हीं का एक भाषण है। कांग्रेस माइट स्लिप इनटू दि हैंड्स आफ कैपिटलिस्ट्स, वार्न्स नवल किशोर। श्रीमन्, अगर यह इस सरकार की पात्रता है कि वह किसी एक वर्ग के हाथ का खिलौना बन रही है तो सम्पूर्ण देश का नेतृत्व वह कैसे करेगी ? मैं अपनी जबान से कुछ नहीं कह रहा हूं। यह शायद सेक्रेटरी हैं कांग्रेस दल के, उनको भय है कि उनका दल जो कि सरकार का माध्यम है, पूंजीपतियों के हाथ में जा रहा है और उसका प्रमाण भी दिख रहा है कि खाने की सामग्री और जीवन की हरएक सामग्री के भाव आसमान छूते जा रहे हैं। अभी माननीया मुख्य मंत्री जी ने भाव के बारे में अपील की थी। मुझे बड़ा आनन्द हुआ। मैं तो यह मांग करूंगा और सरकार की पात्रता अपात्रता की कसौटी यही होगी, व्यापारी चाहें न चाहें डी० आई० आर० इनके पास है, बलपूर्वक यह भाव गिरवायें और गिरवाकर दिखा दें तो आशा हो सकती है कि यह जर्जर सरकार शायद नेतृत्व देने में कुछ सफल हो सके। परन्तु आशा नहीं है क्योंकि आप दूसरे के हाथ के खिलौने हो गये हैं। मैंने कहा, आज व्यक्तियों का कोई प्रश्न नहीं है। वंशीधर जी वहां बैठें या हम बैठें इसका प्रश्न नहीं है। आज तो प्रश्न यह है कि नेतृत्व वह आये जो कि सम्पूर्ण प्रदेश को विश्वास के साथ दृढता के साथ विजय की ओर ले जा सके।

श्री अधिष्ठाता—

आप कितना समय और चाहेंगे ?

श्री यादवेन्द्रदत्त—

१० मिनट।

श्री अधिष्ठाता—

अच्छा आप पांच मिनट में समाप्त कर दीजिये।

श्री यादवेन्द्रदत्त—

श्रीमन्, रक्षा की दृष्टि से मैं प्रश्न पूछता हूं, इस देश की रक्षा के लिये आपने अब तक क्या-क्या प्रयत्न किये ? आज आपका युद्ध का क्या अनुभव है ? ब्रिटेन में क्या हुआ ? १२ बजे युद्ध की घोषणा हुई और सारे डिफेंस के कानून १२.५ पर पास कर दिये गये और काम में आने लगे। लेकिन आपने क्या किया ? आपकी तो वही लेथार्जिक गति है। आपने सिविल डिफेन्स की दृष्टि से क्या किया है ? दिल्ली में खाइयां खोदी जा रही हैं लेकिन यहां सेक्रेटेरियट के बाहर चाय के प्यालों में अपने प्रदेश का गम गलत किया जा रहा है। यह आपकी कांशसनेस का उदाहरण है। आप तो यह मान कर बैठे हैं कि इसी सदन में सारी बुद्धि इकट्ठी हो गयी है। बुद्धि इस सदन के बाहर भी है, क्या आपने उससे सहयोग प्राप्त करने का प्रयत्न किया, क्या उनको आपने बुलाया ?

आपके प्रचारतंत्र का तो कहना ही क्या है। कल मैं हजरतगंज गया और आपके प्रचारतंत्र को देख कर मुझे लौट आना पड़ा। हजरतगंज में हनुमान जी का जो मंदिर है उसके पास नता जी का सिनेमा हो रहा था। जब कि उसमें नेता जी के चरित्र का सही चित्रण होना चाहिये, लेकिन यह जो चल-चित्र दिखाया जा रहा था उसको देख कर पोपे के कारटून की याद आ रही थी। जो सैनिक उसमें मार्च कर रहे थे 'वे' ऐसे मालूम होते थे जैसे ऊंट पर बैठ कर चल रहे हों। युद्ध काल में आज नेता जी की गौरव गाथा गाया जाना चाहिये था, देश के उज्वलमय इतिहास को चलचित्रों में दिखाया जाना चाहिये था। लेकिन यहां पोपे का कारटून दिखाया जा रहा था। यह इसलिये हो रहा है कि आज आई० सी० एस० और आई० ए० एस० को बुद्धि की पुड़िया माना जाता है। जो प्रोपेगेन्डा उनके द्वारा किया जाता है वह बिलकुल गलत होता है, वे उसके कार्यकलापों से बिलकुल अनभिज्ञ हैं। नतीजा यह होता है कि जो प्रोपेगैन्डा होता है वह क्रूड और वल्गर होता है। लेकिन इंगलैंड में जो जिस चीज का एक्सपर्ट था उसको ही उस स्थान पर रखा गया, वहां का अध्यक्ष बनाया गया। लार्ड बीवरब्रुक मिनिस्ट्री आफ आर्म्स एन्ड एम्युनीशन का अध्यक्ष बनाया गया और सेक्रेटरी को कोई अधिकार नहीं था कि वह उसके कार्यकलापों में कोई अड़ंगा लगावे। लेकिन यह सरकार तो मानती है कि बाहर बुद्धि है ही नहीं। आपने तो सेक्रेटरीज से गठबंधन कर रखा है। वे आपके आदमियो को नौकरियां दिलाते हैं और उसके बदले में वे करप्शन करते हैं।

सूबे के अन्दर इतना तमाशा हुआ लेकिन क्या आपने सूबे के गांव-गांव में सभायें कीं? क्या उनको बताया गया कि उनको किस बात के लिये लड़ना है? आदमी रोटी के लिये अपनी जान निछावर नहीं करता है। मैं पूछता हूं कि भगत सिंह क्या रोटी के लिये फांसी पर लटका था? बलिदान होता है देश के लिये, भावना के लिये, मातृभूमि के लिये बलिदान होता है। क्या आपने देश के नौजवानों को मातृभूमि के लिये बलिदान करने को जगाया? हमको किसलिये लड़ना है, क्या इसकी जानकारी आपने गांवों के कोने-कोने में लोगो को कराई है? आपने जनता के मनोबल को बढ़ाने के लिए क्या किया, कौन से कदम उठाये? कोई कदम अभी तक आपने नहीं उठाया। मैं एक बात का और आग्रह करूंगा, हालांकि वह विषय इस सरकार का नहीं है लेकिन मैं जानबूझ कर यह कह रहा हू और इसलिये कह रहा हूं कि हमारी यह सरकार भारत सरकार तक मेरी बात को पहुंचा दे। यह पाकिस्तान के जो टैकटिक्स हैं वह दो टैकटिक्स बहुत खतरनाक हैं और इन पर हमारी सरकार को ध्यान देने की आवश्यकता है। एक तो यह पैराशूट्स से जो आदमी उतारे जा रहे हैं उनसे हमें सतर्क होना है और इस सूबे के अन्दर जो पाकिस्तान के अड्डे हैं जैसे बरेली डिवीजन है या कुमायूं डिवीजन है जहां पर सेबोटेज करने वाले और पंचमागी लोग होने का जिन पर शक है उनको बन्द किया जाय और इसके लिये हमें कानून के ऊपर जाना होगा, कोई कानूनी अड़चन उनको बन्द करने में न होना चाहिये। इसके साथ ही एक दूसरा टेकटिक्स और चल रहा है और वह है कि आपने रेडियो पर सुना होगा कि पाकिस्तान के सैनिक त्रिपुरा में आये। इसका सीधा मतलब यह है कि वहां से आसाम को काटकर चीन से हाथ मिलाया जाय और चीन और पाकिस्तान के माध्यम से इस क्षेत्र को भारत से काटकर एक अलग स्वतंत्र क्षेत्र यायान की तरह स्थापित किया जाय। इस से आपको आगाह करता हूं। आप इस से जागृत रहिये, सजग रहिये और इसके लिये मजबत कदम उठाइये और जिन पर राष्ट्र द्रोही होने का जरा भी सन्देह हो उनको छोड़ने की आवश्यकता नहीं है। व्यक्तियों से और तमाम कानूनी कठिनाइयों से राष्ट्र महान है और राष्ट्र के लिये उसको बचाने के लिये जो भी कदम यह सरकार उठायेगी उसमें हम उसके साथ हैं। आप उठें और आगे चलें। मैं जनसंघ की ओर से मांग करता हूं कि ग्रामों में आप फौरन ग्राम सभाओं का संगठन करें, जनता का मनोबल ऊंचा करें, देश की सुरक्षा के लिये स्थान-स्थान पर जनता को संगठित करें, नौजवानों को सेना में भरती होने के लिये प्रेरित करें, सेना में भरती हुए सैनिकों के परिवारों की देखभाल एवं सब प्रकार की सहायता की जाय और पंचमांगियों की गतिविधियों पर निगरानी रखी जाय, उनकी कार्यवाहियों की रिपोर्ट सरकारी अधिकारियों तक पहुंचाई जाय।

[श्री यादवेन्द्रदत्त]

जनसंघ तो यह सब करेगा ही लेकिन मैं आप से प्रार्थना करता हूं कि यह सब आप भी करें। ऐसे समय पर ही गीता में श्री कृष्ण ने कहा था कि—

"क्लेव्यं मा स्म गमः पार्थ नैतत्त्वयि प्रपद्यते ।

क्षुद्रं हृदय दौर्बल्यं त्यक्तोत्तिष्ट परंतपः ।।

इसी तरह से आप भी उठें, जागें, पराक्रम करें, हम आपके साथ हैं लेकिन यदि आप कायरता दिखायेंगे तो हम विरोध में रहेंगे और अविश्वास निश्चय ही प्रकट करेंगे।

डाक्टर राजेन्द्रकुमारी बाजपेयी (जिला इलाहाबाद)—

माननीय अधिष्ठाता महोदय, कल जब माननीय नेता विरोधी दल ने अविश्वास का प्रस्ताव सदन में पेश किया तो मैं गम्भीरता पूर्वक यह सोच रही थी कि क्या आज की मौजूदा परिस्थिति में यह उचित था कि जिस समय राष्ट्र एक संकट से गुजर रहा है ऐसा प्रस्ताव लाया जाय ? लेकिन माननीय नेता विरोधी दल ने अपने भाषण को समाप्त करते हुये यह कहा कि हमारी देशभक्ति का यह तकाजा है कि हम ऐसे समय में ऐसा प्रस्ताव लायें। यह सुनकर मुझे हैरत हुई। अगर वह यह समझते हैं कि जिस समय देश दुश्मन से लड़ रहा है और इस देश के अन्दर जो यह प्रदेश की सरकार है उसके विरुद्ध अविश्वास का प्रस्ताव लाकर वह अपनी देशभक्ति के कर्तव्य को पूरा करते हैं तो इससे उनको स्वयं को ही सन्तोष हो सकता है, मैं कुछ कहना नहीं चाहती। श्री माधव प्रसाद त्रिपाठी ने अपने भाषण को दो तीन बातों तक ही केंद्रित रखा। एक बात जो उन्होंने कही वह यह है कि वे राष्ट्रपति से यह मांग करने जा रहे हैं कि यहां पर राष्ट्रपति का शासन लागू हो और इस सरकार को समाप्त किया जाय। साथ ही साथ दूसरी ही सांस में उन्होंने यह भी कहा कि यहां पर अफसरशाही है, ब्यूरोक्रेसी का राज्य है और उसके कारण यहां की जनता हर प्रकार से तकलीफ उठा रही है। मैं पूछना चाहती हूं, श्री त्रिपाठी जी से, कि जब राज्य में राष्ट्रपति का शासन होगा तो उसमें जनता के प्रतिनिधि कहां पर होंगे ? उस समय क्या आप पूरी जनता को ब्यूरोक्रेसी के हाथ में नहीं देंगे ? प्रजातांत्रिक शासन में जो हम इस समय बात कहते हैं क्या उस समय जबकि हमारे प्रदेश में राष्ट्रपति का शासन होगा, हम कुछ कह सकेंगे ? आज अफसरों के भ्रष्टाचार की बात को लेकर आप षड़यंत्र की बात नहीं करते हैं तो एक ही सांस में आप दो विरोधी बात कहते हैं, यह कहां तक तर्क-संगत है।

माननीय त्रिपाठी जी ने यह बात भी कही कि यह सरकार इस तरह से युद्ध का मुकाबला भी करने के लिये सक्षम नहीं है, इसलिये इसे हटना चाहिये। मैं जानना चाहती हूं कि उस समय जब कि देश में राष्ट्रीय संकट हो क्या यह उचित होगा कि इस तरह की बातें कही जायं ? अभी माननीय दुबे जी ने कहा कि उन्हें इस प्रदेश की सरकार की पात्रता में सन्देह है। इसलिये यह जरूरी है कि वे इस सरकार को बदल दें। मुझे अफसोस है कि वे इस सरकार को बदलने की बात करते हैं, लेकिन मैं पूछना चाहती हूं कि क्या वे एक स्टेबिल गवर्नमेंट प्रजातांत्रिक सिद्धान्त के आधार पर चला सकते हैं और नेतृत्व प्रदान कर सकते हैं ? यदि नहीं तो फिर आपको जिमेदारी के साथ बातें करनी चाहिये। इस समय यह अवसर नहीं है कि हम एक दूसरे पर किसी प्रकार का कीचड़ उछालें। आपको स्मरण होना चाहिये कि आज प्रदेश का शासन हमारी जिस महिला के हाथ में है, जो हमारे प्रदेश का नेतृत्व कर रही हैं, वे महिला हमारी झांसी वाली रानी से कम नहीं हैं, इन्टेगरिटी में, चरित्र में और सेवा में। तो ऐसी हालत में शासन को बदलने का नेतृत्व को बदलने का, सुझाव देना कोई शोभा नहीं देता है।

माननीय नेता विरोधी दल ने और उधर के कई भाइयों ने यह भी कहा कि हम तो सरकार को बार बार यह चेतावनी देते थे सरकार को तैयार रहने के लिये लेकिन सरकार ने इस ओर कोई तैयारी नहीं की। मैं आपसे पूछना चाहती हूं कि क्या आपके नेताओं ने दिल्ली की पार्लियामेंट में बार-बार यह प्रश्न नहीं उठाया कि इमरजेन्सी को खत्म किया जाय ? लेकिन हमारी सरकार

की ओर से यह कहा गया कि एमरजेन्सी को खत्म नहीं किया जा सकता है क्योंकि हमारे देश में अभी संकट है। हो सकता है कि इस समय युद्ध विराम हो जाय लेकिन हमें २-३ साल के अन्दर ही शायद लड़ना पड़े। तो इसलिये हमने पूरे तौर पर विचार करने के उपरान्त यह संकल्प किया था कि देश में एमरजेन्सी रहे। आपने जलूस निकाले, जनसंघ की ओर से एक जलूस कच्छ के बारे में निकाला गया लेकिन इन जलूसों से, इन नारों से हमारी नीति नहीं बदलती है। हमारी तो एक निश्चित नीति है जिससे हम देश का शासन चला रहे हैं और जिससे हमने प्रजातंत्र की नींव डाली है। इसकी भी जरूरत नहीं है कि हम सभायें करके यहां पर रहने वाली जनता से कहें कि आज हमारे देश पर संकट है। आज हमने वह लीडरशिप पंचायतों द्वारा जनता पर डाली है।

वह अपनी जिम्मेदारी समझते हैं, किसी को यह कहने की जरूरत नहीं थी। जिस समय चीन का हमला हुआ था उस समय सब ने अपनी गाढ़ी कमाई को अर्पित किया था, सेवायें आर्पित की थीं। आप कहते हैं कि पे कमीशन की रिपोर्ट पर सरकारी कर्मचारी को असंतोष है लेकिन उन्होंने आपको मुहतोड़ जवाब दिया है जब उन्होंने कहा कि अनकंडीशनली हम अपनी सेवायें अर्पित करने के लिये तैयार हैं। आप उनमें असंतोष उभाड़ना चाहते हैं।

आज जो समाचार पत्रों में खबरें छपी हैं उनसे स्पष्ट है कि अमरीका, पाकिस्तान तथा हिन्दुस्तान को फिलहाल हथियारों की मदद नहीं करेगा। हो सकता है कि यू० थान्ट जो आ रहे हैं उनकी कोशिश बेकार जायं, तो हो सकता है कि जो अन्य प्रकार की आर्थिक सहायता दी जा रही है वह रुक जाय। इस बात को समझते हुए ही हमारे प्रधान मंत्री ने कहा था कि हमें दूसरे के ऊपर निर्भर नहीं करना है। पिछले १७,१८ वर्षों में देश की आर्थिक अवस्था बढ़ाने की कोशिश की है, लोहे के कारखाने, डैम्स तथा अन्य बड़े बड़े कारखाने खोले गये हैं जिससे अगर अमरीका हथियार न भी दे तब भी हम अपने कारखानों में हथियार वगैरह बना कर लड़ सकते हैं। हमारे बंगलौर के बने हुये जहाजों ने लड़ाई में कमाल दिखाया है। हमने इंजीनियर्स तैयार किये हैं, हर क्षेत्र में उन्नति की है। इन सब आधारों पर हम हिम्मत करते हैं और हमारे प्रधान मंत्री कहते हैं कि अगर अकेले भी लड़ना पड़े तो लड़ेंगे। कोई हवा की बात नहीं वह कहते हैं, देश को चलाने के लिये और लड़ाई लड़ने के लिये पूरी तैयारी करनी पड़ती है। इसके लिये हमने पिछले १७,१८ सालों को बेकार नहीं जाने दिया है, बल्कि वह चीजें तैयार की हैं कि अगर बुनिया के देश हमारी मदद न भी करें तब भी हम अकेले पाकिस्तान और चीन का मुकाबला कर सकते हैं।

विरोधी दल वालों ने सदा हमारी नान एलाइन्ड पालिसी की निन्दा की है। लेकिन हम समझते हैं कि नान-एलाइन्ड के कारण ही हम देश की रक्षा कर रहे हैं और आज पाकिस्तान को जो कि सीटो और सेन्टो का सदस्य था, कोई भी मदद देने के लिये तैयार नहीं है। आज इंगलैन्ड, ईरान और टर्की ने साफ कह दिया कि हम आपकी नैतिक मदद तो कर सकते हैं लेकिन किसी और रूप में मदद नहीं कर सकते हैं। इतिहास ने साबित कर दिया कि कांग्रेस पार्टी की तरफ से जो विदेशी नीति रही, आर्थिक नीति रही, शिक्षा संबंधी तथा सामाजिक नीतियां रहीं, पंचायती राज की नीति रही, सामुदायिक विकास की नीति रही सब अपनी जगह पर सही हैं और उनसे प्रजातंत्र की नींव मजबूत पड़ी है। एक स्वर में आप कहते हैं कि केन्द्रीय सरकार पर हमारा विश्वास है लेकिन उत्तर प्रदेश सरकार पर नहीं है। मैं पूछती हूं कि क्या हम दोनों की नीतियों में कोई अन्तर है? हम एक दूसरे के सहयोगी हैं और जुटकर काम करने वाले लोग हैं। तो अगर आप सच्चाई के साथ केन्द्रीय सरकार की नीति में विश्वास करते हैं और अगर आप यह समझते हैं कि वह सरकार ठीक है, तो हमारे इस प्रदेश की सरकार भी उसी के कदम पर चल रही है जो नीति कि केन्द्रीय सरकार ने निर्धारित की है। फिर कोई वजह नहीं होनी चाहिये कि आप एक तरफ एक स्वर में तो यह कहें कि केन्द्रीय सरकार ठीक है, उसमें अपनी आस्था प्रकट करें और दूसरी तरफ प्रादेशिक सरकार को निकम्मा साबित करने की कोशिश करें।

मैं विरोधी दल के भाइयों से अन्त में यह निवेदन करना चाहती हूं कि इस समय जब कि हमें संकट का सामना करना है आप अपने सभी मतभेदों को भूल जाइये। सभी श्रेणी के

[डाक्टर राजेन्द्र कुमारी बाजपेयी]

लोगों को चाहे वे आफिसर क्लास के हों, चाहे पुलिस के हों, चाहे सप्लाई दफ्तर के अन्दर लगे हों, चाहे जिस जगह हों, सब को मिल कर ही इस भार को उठाना है। ऐसी हालत में आज किसी भी व्यक्ति की निन्दा करके, किसी को कंडेम करके, किसी को यह कह कर कि वह तो निकम्मे हैं, उससे काम चलने वाला नहीं है। इन शब्दों के साथ में चाहती हूं कि अब भी माननीय नेता बिरोधी दल को समझ आयेगी जब कि हमारे उत्तर प्रदेश में पैराट्रूप्स उतरे हैं और सम्भव है कि हम यहां बैठे हुए हैं और वे लखनऊ में भी उतर रहे हों। तो ऐसी हालत में हमारी देशभक्ति का कम से कम तकाजा तो यह होना चाहिये कि हम ऐसी बातों की बहस में न पड़ कर उन बातों पर बहस करें, बात चीत करें कि जिससे इस प्रदेश की रक्षा हो सकती है और देश की रक्षा हो सकती है। उत्तर प्रदेश की आबादी करीब ७ करोड़ की है और मेरा खयाल है कि अगर हम इस प्रदेश की ७ करोड़ जनता के मनोबल को ऊंचा करने में ही जुट जायं तो केवल हमारा उत्तर प्रदेश ही पूरे भारतवर्ष की तरफ से लड़ाई लड़ कर पाकिस्तान को हरा सकता है। आखिर पाकिस्तान की आबादी भी तो ९–१० करोड़ की ही है। आज हमारे ऊपर बहुत बड़ी जिम्मेदारी है और मैं उम्मीद करती हूं कि कल तक यह प्रस्ताव वापस ले लिया जायगा। इन शब्दों के साथ मैं इस प्रस्ताव का विरोध करती हूं।

*श्री बलवानसिंह (जिला कानपुर)—

श्रीमन्, विरोधी दल की तरफ से जो प्रस्ताव आया है उसका समर्थन करने के लिये मैं खड़ा हुआ हूं। हालांकि जिस तरीके से सरकार ने इस अविश्वास के प्रस्ताव को लिया, मुझे यह उम्मीद थी कि इस सरकार का कोई जिम्मेदार आदमी खड़े होकर इस के अन्दर अपील करेगा कि यह मौका राष्ट्र के लिये खतरनाक है और इस खतरनाक मौके पर इस प्रस्ताव की जरूरत नहीं है।

एक सदस्य—

अभी मौका कहां आया है ?

श्री बलवानसिंह—

मौका तो था लेकिन उसका फायदा नहीं उठाया गया। हमारा विरोधी दल अच्छी तरह से इस स्थिति से सजग है और हिन्दुस्तान पर इस समय जो संकट है उसका एहसास विरोधी दल को है। जैसा कि माननीया मुख्य मंत्री ने कहा कि यह हो सकता है कि विरोधी दल आज या कल इस नो कांफिडेंस मोशन को वापस लेने के लिये तैयार हो जाय या वोट न करे। लेकिन मैं पूछता हूं कि क्या सरकार की तरफ से इस किस्म की कोई अपील आयी ? नहीं आयी। क्या यह सरकार आज यह अहसास करती है कि अगर विरोधी दल कोई सुझाव अपना दे तो उसे मान लेना चाहिये ? आज हिन्दुस्तान की तसवीर ऐसी है जिस तसवीर को बनाने की जरूरत है। आज हमारे हिन्दुस्तान की जो कमजोरी है वह कमजोरी कितनी है और कहां कहां है उन सब को जान कर ही हमें आगे कदम उठाने की जरूरत है। आज विरोधी दल जो रोशनी देता है उस रोशनी को प्राप्त करके, उन बातों को मान कर ही हम आगे कदम बढ़ायें तो आप इस मुल्क की सबसे बड़ी मदद कर सकेंगे। मैं जानता हूं कि पंजाब के बोर्डर के पास हमारे हिन्दुस्तान की सबसे बड़ी फौजी ताकत लगी हुई है। लाखों नौजवान अपनी हथेली पर जान लिये हुए पाकिस्तान की सरहद को पार कर गये हैं। उन्होंने उस समय अहसास किया कि उनकी जिन्दगी खतरे में है, उम्मीद नहीं कि वे लौट कर आयें। लेकिन हिन्दुस्तान को बचाने के लिये, आपको ही बचाने के लिये, हिन्दुस्तान की जम्हूरियत को बचाने के लिये वे पाकिस्तान की सरहद के अन्दर हैं। ऐसी हालत में यू० पी० का विरोधी दल कोई ऐसी हरकत नहीं करेगा जिससे दुश्मन के किसी काम में मदद पहुंचे। लेकिन विरोधी दल सरकार के पिछले १८ वर्ष के रवैये

*वक्ता ने भाषण का पुनर्वीक्षण नहीं किया।

पर रोशनी डालना चाहता है तो इसमें एतराज की क्या बात है। विरोधी दल का एक-एक सदस्य हर कुर्बानी देने को तैयार है और इस बात के लिये भी तैयार है कि इस असेम्बली के चलने की जरूरत नहीं है। असेम्बली के सदस्य अपनी कांस्टीट्युऐंसी में जायं, एक-एक गांव के अन्दर वे जांय और जो अफवाहें उड़ती हैं, जिनसे मुल्क को धक्का पहुंचता है उनको खत्म करने में मदद दें। विरोधी दल के सदस्य इस सरकार को हर कीमत पर मदद देंगे लेकिन उसके पाने के लिये आपकी तरफ से प्रयास भी होना चाहिये।

अभी मुख्य मंत्री ने बतलाया कि छतरीबाज गाजियाबाद आ कर उतरे हैं। दुश्मन के पास हवाई बेड़ा है, वह काफी मजबूत है। अमेरिका द्वारा दी गयी हवाई ताकत और बड़े टैंक उसके पास हैं। अब कोई हवाई छतरीबाज किसी जंगल में किसी वक्त भी उतर सकता है। ७ लाख गांव के पास, इसके लिये क्या शक्ति है? इस वक्त आर्म्स ऐक्ट को बदलने की जरूरत है। जितने भी नौजवान लोग हैं, जिम्मेदार लोग हैं, वे आज निहत्थे हैं। गांव में रहने वाला नौजवान, झोपड़ी में रहने वाला और भैंस चराने वाला नौजवान देखता है कि पाकिस्तान के छतरीबाज बन्दूक ले कर आते हैं। सिवा इसके कि वह थाने की तरफ भागे उसके पास हिफाजत के लिये कोई इन्तजाम नहीं है। हालत यह है कि गांव के अन्दर ५ डकैत इकट्ठा हो कर दो दो हजार की आबादी को लूट कर चले जाते हैं। दो डकैत पूरी ट्रेन को लूट लेते हैं। फिर उस सूरत में चाइना जिसके पास दो करोड़ आदमियों की फौज हो, चार लाख की फौज पाकिस्तान के पास हो और उनका मुकाबला करने की हम बात करते हैं तो ऐसे समय पर याद आती है स्टालिनग्रेड की, जिस वक्त नाजी फौजें रूस के अन्दर घुसी थीं तो उनके मुकाबले के लिये कोई रूस की फौज नहीं थी, नाजियों की उस फौज का मुकाबला हुआ जनता से जो खेत में थी, कारखाने में, होटल में, घर में थी, गली के कोने कोने में थी और उस जनता ने बन्दूक का मुकाबला बन्दूक से किया। यही फिजा आज हिन्दुस्तान के सामने है।

आज मैं खास तौर से मुसलमान भाइयों को दाद देता हूं। पाकिस्तान को उम्मीद थी कि जब उसके घुसपैठ सिपाही काश्मीर के पेट से निकल कर गांव में आयेंगे तो वहां का ७० फीसदी मुसलमान जिसकी रहनुमाई की बात हिन्दुस्तान करता है वह उसके साथ होगा लेकिन हिन्दुस्तान के एक एक मुसलमान ने हिन्दुस्तान का साथ दिया और उसने अयूब के मुंह पर तमाचा मारा और यह साबित कर दिया कि हिन्दुस्तान में कोई फिरकापरस्त हुकूमत नहीं हो सकती। हिन्दुस्तान में सैकूलरिज्म होगा और हिन्दुस्तान के समाज वाद के साथ आज हिन्दुस्तान के मुसलमान हैं। ऐसे वातावरण में एक भाई ने जो कहा उससे मुझे बड़ा दुख हुआ। उन्होंने कहा कि आज इस बात की जरूरत है कि उन लोगों से सरकार हथियार वापस ले ले। इसकी जरूरत बिलकुल नहीं है बल्कि जरूरत इस बात की है कि आज हिन्दुस्तान में जो बालिग लोग हैं, जो अपनी जिन्दगी को देश के ऊपर न्योछावर करना चाहते हैं उनको सरकार हथियार दे। आज आर्म्स एक्ट को रिपील करने की जरूरत है। इसमें से यह धारा निकाल दी जाय कि बिना थानेदार, बिना तहसीलदार की जांच के लाइसेंस नहीं दिया जायगा। इसकी जरूरत नहीं है। मैं खास तौर से कहना चाहता हूं कि क्या इससे भी ज्यादा नाजुक मौका देश के सामने आयेगा? क्या आप चाहते हैं कि हमारा सिपाही जो पाकिस्तान के बोर्डर पर है उसी की देश की सुरक्षा की सारी जिम्मेदारी है? अब तो देश की ४० करोड़ जनता की जिम्मेदारी है। वे जमाने लद गये जब ५ परसेंट लोगों की जिम्मेदारी होती थी। लेकिन आज चाहे अछूत हो, मुसलमान हो, सिख हो या ईसाई तथा कोई भी हो सबकी जिम्मेदारी है और सब के हाथ में हथियार होने चाहिये। मुझे उम्मीद है कि सरकार मेरी इस बात पर सोचेगी।

दूसरे एक वक्त खाने की बात कही गई और इंगलिस्तान की मिसाल दी गई कि १९४२ में चर्चिल एक अंडा रोज खाता था जो गरीब मजदूर को भी मिलता था। इंगलिस्तान में ५ फीसदी भी खेती के लिये जमीन नहीं है। दुनिया में १२ फीसदी से ज्यादा रकबा खेती के लिये किसी भी मुल्क में नहीं है। लेकिन हिन्दुस्तान में ४५ फीसदी है। हिन्दुस्तान में इतना बड़ा रकबा खेती का है, इतनी बड़ी पोटेंशियेलिटी पानी की है और ७० परसेंट आबादी खेती

[श्री बलवान सिंह—]

के ऊपर है। फिर भी आज हिन्दुस्तान अमरीका से अनाज मंगाता है। इस से ज्यादा बेशर्मी की बात और क्या हो सकती है। अगर आज अमरीका हिन्दुस्तान को अनाज देना बंद कर दे तो यह नौबत आयेगी कि हम एक वक्त खाना बंद कर दें। आप अगर इमर्जेन्सी महसूस करते हैं तो यह नारा आपका होगा कि हिन्दुस्तान की जो शक्ति गढ़े मे छिपी हुई है उसको बाहर निकालिये जिस से हिन्दुस्तान की शक्ति दुनिया की शक्ति के मुकाबले में खड़ी हो सके। आज अगर हिन्दुस्तान को चीन घेरता है, पाकिस्तान घेरता है या कोई और मुल्क घेरता है और अमरीका अनाज देना बन्द कर देता है तो क्या हमारी जमीन जो दुनिया के सब मुल्कों से ज्यादा है और जिसमें सब से कम पैदावार होती है उसकी शक्ति नहीं बढ़ सकती है? जरूर बढ़ सकती है। मैं कहता हूं कि जिन चीजों पर सरकार शान्त रही है आज उनको करने की जरूरत है। जनतंत्र में जवाहरलाल जी के साथ जनता रही तब भी हम इस समस्या को हल नहीं कर सके तब विरोधी दल कहता है कि आपकी यह खामियां थीं और ये चीजें ब्यूरोक्रेसी ने कीं जिससे हिन्दुस्तान पीछे रहा तो आज वह उम्मीद क्यों करते हैं कि हम यह कहे कि उनका राज्य बड़ा अच्छा है। मुल्क और सरकार दो अलग अलग चीजें हैं। इस मुल्क की खातिर विरोधी दल सारे तफर्रकात को भुलाने के लिये तैयार है लेकिन यह कहें कांग्रेस पार्टी के हाथ को मजबूत करने के लिये, तो नहीं। इस मुल्क के लिये जब भी जरूरत आयेगी, चाहे यह सरकार अपनी तरफ से प्रस्ताव रखे या न रखे, बंशीधर जी मांग करें या न करें कि नो कांफीडेंस मोशन वापस लें, हम लोग स्वयं बैठ कर सोच सकते हैं और वापस ले सकते हैं मुल्क के लिये।

अभी मेरी बहन कह रही थीं कि ऐसी सूरत में भी जबकि छतरीबाज आ रहे हैं, ऐसे समय में भी विरोधी दल नहीं चेतता। विरोधी दल ने बैठ कर, जन संघ, कम्युनिस्ट पार्टी, पी० एस० पी०, रिपब्लिकन पार्टी, एस० एस० पी०, तमाम देश की राजनीतिक पार्टियों ने माननीय लालबहादुर शास्त्री से कहा कि जो कुर्बानी आप देश की पार्टीज से मांगना चाहें, हम लोग आपके साथ हैं। ऐसी सूरत में अगर विरोधी दल की तरफ से अविश्वास का प्रस्ताव आता है तो वह इसलिये आ रहा है कि हम इस मुल्क के लिये सरकार का हर कदम मजबूत करना चाहते हैं लेकिन साथ-साथ सरकार भी अपनी जिम्मेदारियों को समझे। जिम्मेदारियों को समझाने के लिये हमारा इशारा है ताकि सरकार समझदार हो। १९६५ में जो पाकिस्तान का हमला हुआ, उसके लिये १९६४ में यह सरकार नहीं चेत पायी। १९६२ में जो चीन का हमला हुआ उस वक्त भी सरकार बेखबर थी। वह भी हमला हमारी जमीन पर था। आज वही शक्तियां जो नहीं चाहतीं कि एशिया में जनतन्त्र की हुकूमत हो, हिन्दुस्तान को खत्म करने के लिये कोशिश कर रही हैं। क्या आज यह अकूपाइड कश्मीर, और कश्मीर का झगड़ा है? आज पाकिस्तान हिन्दू मुसलमान का झगड़ा लाना चाहता है। उस वक्त चीन की हुकूमत ने कहा कि हिन्दुस्तान की हुकूमत पूंजीवादि हुकूमत है। उस प्रचार को दूर करने के लिये सरकार ने क्या किया? आज इस सरकार को टाटा बिड़ला की सरकार कहा जाता है। आज अगर किसी काश्तकार पर दो रुपये बाकी रह जाते हैं तो वहां का तहसीलदार उसको मुर्गा बना देता है। लेकिन क्या इस सरकार ने पद्मपत सिंहानिया को मुर्गा बनाया जिन पर लाखों रुपया बकाया है, जिनके पास चार सौ करोड़ रुपये की दौलत है?

हिन्दुस्तान में एक जन्तन्त्र समाज है। तो श्रीमन्, आज जो हमारे श्री कृष्णानन्दराय जीने कहा कि जिन उसूलों की आपने घोषणा की है, चाहे वह बंगलौर में घोषणा की गयी हो या अन्य कहीं की गयी हो, सरकार अपने दिल के ऊपर हाथ धर कर क्या कह सकती है कि उसने कोई भी अपनी घोषणाएं पूरी की हैं? क्या आपने किसी भी पूंजीपति पर टैक्स वसूल करनेमें सख्ती की है? क्या आपने किसी ब्लैक मार्केटियर को जेल में डाला है? क्या आपने किसी जखीरेबाज को जेल में डाला है? क्या आपने देखा है कि उत्तर प्रदेश की पुलिस किस तरह स्त्रियों और पुरुषों पर बर्बर अत्याचार कर रही है? मैं माननीय हरगोविन्द सिंह जी से पूछना चाहता हूं, उनके राज्य में पुलिस तानाशाह बनकर निरीह जनता पर अत्याचार

और जुल्म कर रही है। क्या आपने कभी पुलिस की इस डिक्टेटरशिप की जांच की है, कभी इस ओर ध्यान दिया है ? क्या आपने यह जाना है कि आज एक एक जिले का कलेक्टर, डिप्टी कलेक्टर अपने-अपने दफ्तरों में बैठकर ग्रुपिज्म की बात करते हैं ? क्या आपने यह भी जाना है कि पी० सी० एस० और आई० सी० एस० आफिसर आपके राज्य में स्वच्छन्द हो गये हैं, वह मिनिस्टरों की कोई परवाह नहीं करते हैं ? किस तरह से देश को आप धरातल की तरफ ले गये हैं, यदि इस तरफ से विरोधीदल के सदस्य सतर्क रहकर आपको आगाह करते हैं तो क्या यह बुरा है ? क्या यह देश की शक्ति और मनोबल को बढ़ाने वाला नहीं है ? आज आपका ऐडमिनिस्ट्रेशन बिलकुल निकम्मा हो चुका है। आज हमारे हर कदम में इस तरीके की मजबूती आये और चाहे पुलिस विभाग हो, चाहे वह मेडिकल हो, चाहे वह कृषि हो, चाहे वह फूड का हो, चाहे वह हमारी प्लानिंग का हो, आज हमारे देश की रक्षा के लिये तैयार हो। माननीय नवलकिशोर जी ने जिस तरह से जवाब दिया, अब तो उसका शो ही बदल गया। उन्होंने खुद कहा था कि इस प्रदेश में पूंजीपति सहयोग नहीं कररहे हैं, उनसे टैक्स वसूल नहीं हो रहा है, और आपका ही कहना है कि ब्यूरोक्रेसी पनप रही है, किन्तु आज आप और ही कुछ कहते हैं ।

श्री नवलकिशोर (जिला बरेली)—

अधिष्ठाता महोदय, वक्त बदल गया, जमाना बदल गया, हर बात बदल गयी, किन्तु माननीय बलवानसिंह नहीं बदले ।

श्री बलवानसिंह—

श्रीमन्, मैं तो वही चीज कहता आ रहा हूं, और वही कह रहा हूं लेकिन आपने जो चीज कही थी, उसको आप २४ घंटे में बदल गये, उसी को कह रहा हूं। यह आपकी ब्यूरोक्रेसी तो बहुत देखी गयी और सुनी गयी, ब्यूरोक्रेसी जो कर रही है , उससे जो देश का अहित हो रहा है यह सारी जनता जानती है। लेकिन अब एक चीज टेक्नोक्रेसी भी बढ़ रही है। टेकनोक्रेसी क्या चीज है, उसे भी आप देखें। प्लानिंग के अन्दर जितने भी टेक्निकल हैंड्स हैं, जहां पर एक बटा तीन सीमेंट की जरूरत है, वहां पर यह लोग, वहां के इंजीनियर अपने उस ठेकेदार से मिलकर १:१० सीमेंट लगाते हैं और लाखों बोरे सीमेंट ब्लैक में जाती है और उस ब्लैक मनी से यह इंजीनियर्स लोग मौज उड़ाते हैं, ठेकेदार भी मजा करते हैं। क्या आपने उसके लिये प्लानिंग के ऊपर कोई नियन्त्रण किया है कि वह ठीक काम करें ? मैं आज इस सरकार से कहना चाहता हूं कि और खासकर श्री नवलकिशोर और राममूर्ति जी से कहना चाहता हूं कि यदि आप इस सूबे में एमरजेन्सी महसूस करते हैं, अगर आप वाकई देखते हैं कि पड़ोसी दुश्मनों से हमारे देश को खतरा है, तो आप सरकार के लोग और अपोजीशन के लोग दोनों एक साथ बैठें और बैठकर एक ऐसे कन्ट्रोल बोर्ड का संघटन करें, जिसमें हम और आप सभी लोग हों, और जहां भी करप्शन हो, जहां भी हमारी टेक्नोक्रेसी हो, या जहां कहीं भी इस तरह की गिरावट हो, उसको यह कन्ट्रोल बोर्ड दूर करने का काम करे। यदि इस तरह से एक संघटित कन्ट्रोल बोर्ड के द्वारा प्रदेश का प्रशासन चलायें तो एक नहीं १० पाकिस्तान भी यदि हमारे ऊपर आक्रमण करें तो हम उनका सफलतापूर्वक सामना कर सकेंगे।

श्री नरसिंहनारायण पाण्डेय (जिला गोरखपुर)—

माननीय अधिष्ठाता महोदय, जो अविश्वास का प्रस्ताव माननीय नेता विरोधी दल ने पेश किया है, मान्यवर, मैं हालात को देखकर, आज हिन्दुस्तान पर जिस तरह से एक बर्बर मुल्क पाकिस्तान ने हमला किया है, उसको देखते हुये यह मैं समझता हूं कि यह सामयिक नहीं है और माननीय नेता विरोधी दल से और समस्त नेताओं से जो उधर बैठे हुये हैं आर ते से निवेदन करना चाहता हूं कि समय की गम्भीरता को देखते हुये, अपने फर्ज को देखजू हुये राष्ट्रीयता के नाम पर, एक बार नहीं अनेक बार इस पर विचार करें और विचार करके देश की सुरक्षा के लिये, देश में ऐसी नैतिक अवस्था पैदा करने के लिये जिस से कि हम अपने दुश्मन

[श्री नरसिंहनारायण पाण्डेय]

से सही तरीके से लड़ सके और मातृभूमि की रक्षा कर सकें, यह आवश्यक है कि इस प्रस्ताव को वापस लें। अविश्वास का प्रस्ताव लाने और उसे ला करके सरकार को हटाने का अख्तियार विरोधी दल की संसदीय परम्परा में है, सरकार की नीतियों की सही तरीके से कंस्ट्रक्टिव आलोचना करके सही रास्ते बताने का अधिकार है और अच्छी परम्परा भी है लेकिन श्रीमन्, एमरी साहब ने ७ मई, १९४० को द्वितीय महायुद्ध के समय हाउस आफ कामन्स में कहा था कि 'Making a case and winning the war are not the same thing.' यह पार्लियामेंटरी डिबेट्स हाउस आफ कामन्स के सिक्स्थ वालूम सेशन १९३९-४० के पृष्ठ ११३९ पर है। यह बात सही हो सकती है कि सरकार के अन्दर कमियां हों, कमजोरियां हों। और एगर किसी सरकार के अन्दर कमियां हैं, कमजोरियां हैं तो हम आपकी आलोचनाओं तथा उस के लाभ को अपने सिर पर लेना चाहते हैं लेकिन अविश्वास का प्रस्ताव पेश करके आज आप एमरी साहब के शब्दों को जो उन्होंने हाउस आफ कामंस में कहा था उसको मत भूलिये :—

"making a case and winning the war are not the same thing."

इसलिये आपसे निवेदन करता हूं कि आप अपनी पूरी नीति का निरूपण करें, यह समय का तकाजा है, समय की पुकार है। अगर हमें डिमोक्रेटिक कन्सेप्ट (Concept) में जरा भी विश्वास है और हम चाहते हैं कि हमारे देश में प्रजातंत्र फूले और फूले तो मैं एमेरी साहब के उन शब्दों की तरफ भी आपका ध्यान ले जाना चाहता हूं "

"If we lose this war, it is not this or that ephevmueral Government but Parliament as an institution that will be condemned for good and all."

श्रीमन्, अगर हम हारते हैं तो हमारी जनतांत्रिक पद्धति हारती है, हमारे डिमोक्रेटिक इंस्टीट्यूशंस हारते हैं और हमेशा हमेशा के लिये हारते हैं, और इधर या उधर का सवाल नहीं है हमको चाहिये कि इसको देखकर हम अपनी नीतियों को आज इस तरह से रखें जिससे हम देश की जनता की रक्षा कर सकें। श्रीमन्, मैं कहना चाहता हूं कि अविश्वास का प्रस्ताव रखने के लिये मौके आयेंगे। अब हम आप यहां रहेंगे, हम आप विश्वास और अविश्वास एक दूसरे में पैदा कर सकते हैं, नीतियों के संबंध में, हमारे और आपके संघर्ष चलते रहेंगे। लेकिन जब हम और आप ही नहीं रहेंगे, जब हिन्दुस्तान की जमीन पर कोई हिन्दुस्तानी नहीं रहेगा, जब हिन्दुस्तान की जमीन पर पाकिस्तान जैसा नापाक तानाशाह आजायगा तब देश की हालत क्या होगी? तब हालत यह होगी कि न आप रहेंगे और न हम रहेंगे। इसलिये समय की पुकार को देखते हुये विरोधी दल के दिमाग में गुड सन्स प्रिवेल करेगी और समय की विशेष स्थिति के मुताबिक वह अपने प्रस्ताव को वापस करने के लिये कदम उठायेंगे।

दूसरी बात मुझे अविश्वास के प्रस्ताव के संबंध में यह कहनी है कि माननीय नेता विरोधीदल ने बहुत सी बातें कहीं जिनका यहां पर चर्चा करना इस आदरणीय सदन के सामने समय को बर्बाद करना है। आज हमारे सामने मौलिक सवाल यह है कि अगर हम अविश्वास का प्रस्ताव लाये हैं तो हमको अपनी नीतियों के अन्तर्गत आज डिफेन्स के मामले में सरकार को ठोस सुझाव देना चाहिये। युद्ध की विभीषिका सामने है, सरकार को कुछ ठोस सुझाव दें। जो महत्वपूर्ण प्रश्न होते हैं उनके लिये केवल कैबिनेट ही जिम्मेदार नहीं होती। कुछ इंडीविजुअल जिम्मेदारी भी हुआ करती हैं (कुछ व्यक्तिगत जिम्मेदारी भी हुआ करती हैं) जिनको निर्वहन करना पड़ता है। इसलिये इस स्थिति में हर एक सदस्य को चाहे वह उधर बैठता हो या इधर बैठता हो, उसकी ऐसे वक्त पर यह जिम्मेदारी है जिसको निर्वहन करना चाहिये। स्थिति बहुत गम्भीर है। स्थिति की गम्भीरता को हम सब लोग अच्छी तरह से समझते हैं। जिस

तरीके से लड़ाई की हालत चल रही है और जिस तरीके से हमारे देश के चारों तरफ पाकिस्तान की फौजों ने आक्रमण किया है उसके बचाव के लिये चाहे जो तरीके अख्तियार करने पड़ें, उनको अपनाना चाहिये। लड़ाई का जो रुख चल रहा है उस रुख को देखते हुये सारे हिन्दुस्तान के मसलों को एक तरफ रखकर, सरकार की हर गलती को भुलाकर एक आवाज से हमको उठना चाहिये और हरएक को उठना पड़ेगा और तभी हम अपने देश की हिफाजत कर सकते हैं। इस लिये मैं अधिक बात न कहते हुये केवल इस सुझाव के साथ आपसे निवेदन करना चाहता हूं कि राष्ट्रीयता के जो अधिकार हैं, जो हमारी राष्ट्रीयता की पुकार है उसके अनुसार आप इसपर सोचें और विचार करें और आज अपनी असामयिक बांसुरी न बजायें जिसके बजाने से जनता के सामने कोई अच्छी भावना पैदा नहीं होगी और इससे कोई मारेल भी जनता का ऊंचा नहीं होगा बल्कि जनता भी आपके इन कृत्यों का समर्थन नहीं करेगी।

श्री राधेश्याम शर्मा (जिला मथुरा)—

माननीय अधिष्ठाता महोदय, इस अविश्वास के प्रस्ताव के संबंध में बहुत कुछ कहा गया। जो अविश्वास का प्रस्ताव विरोधीदल की तरफ से पेश किया गया उस समय दोनों ओर से बम नहीं गिर रहे थे। अविश्वास का प्रस्ताव जिस वक्त हमने पेश किया था उस वक्त क्या परिस्थिति थी यह मैं नरसिंह नारायण जी को बतलाना चाहता हूं। वास्तव में वह समय बदल गया और हवा बदल गई। तो आप समझें कि यह समय और हवा बदलने के पहले दिया हुआ प्रस्ताव है और जब एक दफा प्रस्ताव पेश हो गया तो उस पर बहस करना एक संसदीय पद्धति के अनुसार बिलकुल जरूरी हो गया। आज हालत क्या है इसको देखने की कृपा करें। कांग्रेस दल की तरफ से यह बात कही जाती है कि इस वक्त जब कि विरोधीदल का प्रस्ताव आया है उस वक्त पाकिस्तान का हमला हुआ है। ऐसी बात करते हैं कि जैसे हम रेडियो नहीं सुनते हैं, ऐसी बात करते हैं कि जैसे हम अखबार नहीं पढ़ते हैं, ऐसी बात कर रहे हैं कि जैसे हम उत्तर प्रदेश में रहते नहीं। हमारे भी दो आंखे हैं, हमारे भी दिमाग है और मैं आपको बताना चाहता हूं कि इस उत्तर प्रदेश की और इस देश की सरसब्ज जमीन में जो पैदा हुआ है, जिसने यहां का अन्न खाया है, उस प्रत्येक व्यक्ति के खून में, नसों में महाराणा प्रताप और शिवा जी का रक्त बह रहा है। मेरी समझ में नहीं आता कि आप यह बात कैसे कह रहे हैं। आप की यह बात सुन कर मुझे अपने पर और आप पर तरस आता है। आज हमारे देश पर चाहे चीन से हमला हो अथवा पाकिस्तान से, इसकी रक्षा के लिये, अपनी स्वतंत्रता के लिये इस देश की ४५ करोड़ जनता का एक एक व्यक्ति कट जायगा इसमें आपको शक नहीं करना चाहिये। अगर हमारे में देशभक्ति न हो तो कैसे हम आप का सुबह का प्रस्ताव सर्वसम्मति से पास करते? अगर आप को जवान चाहिये तो वह भी हम आप से ज्यादा देना चाहते हैं, अगर आपको रुपया चाहिये तो विरोधी पक्ष उस में भी आप से पीछे नहीं रहेगा। हम आप के साथ कदम मिला कर चलने के लिये तैयार हैं और आप के दिमाग से यह बात निकाल देना चाहते हैं।

अब दूसरा प्रश्न है अविश्वास के प्रस्ताव का। यह ठीक है कि आज विरोधी पक्ष सरकार को गिरा नहीं सकता।

एक सदस्य—

कभी नहीं गिरा सकेगा।

श्री राधेश्याम शर्मा—

इस बात को आप छोड़िये। हिटलर और मुसोलिनी भी यहां नहीं रहे। आप सदा यहां बने रहेंगे ऐसा नहीं है। मैं समझता हूं कि विरोधी पक्ष इस समय सरकार को नहीं हटा सकता लेकिन मैं माननीय पाण्डेय जी को यह बता देना चाहता हूं कि जिस समय

[श्री राधेश्याम शर्मा]

अविश्वास का प्रस्ताव आया था उस समय जो हवा बनी थी उसके असर से उस समय आपके कांग्रेस पार्टी के सभापति ने सारी संसदीय परम्पराओं को तोड़ कर, उनका उल्लंघन करके इस सदन से वाक आउट किया था। पाण्डेय जी उनके साथ थे।

श्री नरसिंहनारायण पाण्डेय---

श्रीमन्, मैं बता दूं कि जिस रोज वाक आउट हुआ था उस दिन में सदन में मौजूद नहीं था।

श्री राधेश्याम शर्मा---

आप मेरी बात शान्ति से सुन लीजिये। जिस सरकार में और उसकी पार्टी में इतना जबदरस्त मतभेद हो उसको क्या कहा जाय। जब मैंने अखबारों में पढ़ा कि श्री कमला पति त्रिपाठी, जो उत्तर प्रदेश की कांग्रेस कमेटी के सभापति हैं इतने लोगों को साथ लेकर सदन से वाक आउट कर गये और केशरी प्रसाद पाण्डेय जी को सदन से बलपूर्वक निकाल दिया गया तो मेरी बात तो छोड़िये, चौराहे पर चलने वाला नागरिक, मजदूर और खेत में काम करने वाला किसान सभी यह बात पूछ रहे थे कि उत्तर प्रदेश सरकार और पार्टी में क्या समरूपता है? उस समय दिल्ली में विशेष रूप से चार चर्चायें चल रही थीं कि उत्तर प्रदेश के अध्यक्ष को अब शायद सरकार हटाये। दूसरी बात थी कि मंत्रिमंडल के खिलाफ कांग्रेस पार्टी अब अनुशासन की कार्यवाही करने की मांग कामराज जी से करेगी। तीसरी बात थी विरोधी पक्ष के लोग और डिसिडेन्ट ग्रुप के लोग दूसरी तरह की बातें फिर कर रहे हैं जिससे कि सारा मामला गड्ढे में पड़ गया है। उससे कोई सरकार में जबरदस्त विस्फोट होगा। तो मैं साफ तौर से कहना चाहता हूं कि सरकारी पार्टी जो इस तरह के काम रोज रोज कर रही है इसकी जिम्मेदारी अगर उस पर नहीं है तो किस पर है। मैं कहना चाहता हूं कि आज यदि यह संकट की स्थिति यहां न होती तो न जाने कितनी तरह की बातें यहां पर कही जातीं। मैं उन दस कारणों को आपको बताना चाहता हूं कि जिनकी बिना पर आप की यह सरकार यहां से हटनी चाहिये और मैं चाहता हूं कि यह जल्दी से जल्दी यहां से चली जाय, लेकिन इधर के घोड़े इतने बढ़िया और तादाद में इतने ज्यादा नहीं हैं कि वे उधर के इन गधों पर हावी हो सकें। मैं आपसे यह कहना चाहता हूं कि नम्बर एक बात तो यह है कि इस सरकार ने सदन में जो भी वादा किया वह कभी भी पूरा नहीं किया। इसी सदन में साल-डेढ़ साल पहले कुछ बहियां पेश की गयीं और जिस सदस्य ने पेश कीं उसने कहा कि अगर इसका एक-एक पृष्ठ सही सिद्ध न कर दूंगा तो सदन से इस्तीफा दे दूंगा और मंत्री ने कहा कि अगर यह सत्य सिद्ध होंगी तो मैं इस्तीफा दे दूंगा। आज तक सिद्ध नहीं हो पाया कि सही सिद्ध हुई या नहीं। जरा मुलाहजा फरमाइये कि जिस मंत्री के खिलाफ पेश हुई वह भी विराजमान हैं और जिसने पेश की वह भी सदन में मौजूद हैं। अगर गलत थीं तो सदस्य को और सही थीं तो मंत्री को हट जाना चाहिये था लेकिन डेढ़ साल तक परदा डाला गया कि आखिर उसका क्या हुआ। (एक आवाज——समझौता हुआ।) हां, उसी तरह से समझौता हो सकता है जैसे चोर कोई चोरी करने जायं और अपना माल बांटने के लिये झगड़ा करते हों, फिर एक हो जायं,

इसके बाद इस सूबे की खाद्य स्थिति कितनी खराब है, उसका अवलोकन नेगी जी करें। मैं रसद कमेटी का सदस्य हूं। बड़े-बड़े सवाल उठाये। १४८ लाख टन गल्ला उत्तर प्रदेश में पैदा हुआ और फी यूनिट एक पौन्ड के हिसाब से तो यह १४८ लाख टन गल्ला रबी के आने तक पूरा पड़ जायगा और काफी होगा और फिर भी ३६ लाख टन बच जायगा। फिर यह पी० एल० ४८० की क्या जरूरत है इस उत्तर प्रदेश के लिये और यह खाद्य संकट का हल्ला क्यों मचाया जाता है। जो खरीफ की फसल है, तो मक्का भी थोड़ी हो गयी

है। इसलिये ३६ लाख टन बच जायगा। हां, एक बात जरूर है, नवल किशोर जी ने कहा कि हमारी पी० ए० सी० सतर्क है, लेकिन गोरखपुर से तिब्बत और चीन तक हमारा गल्ला चला गया ६०–७० लाख टन कम से कम उत्तर प्रदेश की सीमा से बाहर, जिसकी वजह से दाने दाने के लिये उत्तर प्रदेश तरस रहा है।

न्याय की क्या हालत है ? यहां पुलिस मंत्री नहीं हैं। मैंने आज तक उनकी शान के खिलाफ कोई बात अभी तक नहीं कही, पर मैं बड़ा मजबूर हूं उस बात को कहने के लिये। लेकिन उनके ठाठ-बाट, रुतबे को देखकर जरूर ऐसा महसूस होता है कि उनके दिमाग में सामन्तवाद, साम्राज्यवाद और तानाशाही की मनोवृत्ति कूट कूट कर भरी हुई है। कोई शिकायत करो तो उलटा जबाब ! आदरणीय सदस्य कोई शिकायत करें तो उत्तर मिलेगा "आपकी शिकायत मिली, जांच की तो पता लगा कि गलत थी" लेकिन कोई तो सही हो, सभी गलत हैं। नरही में त्रिलोकी सिंह जी और कांग्रेस पार्टी के लोग गये। पुलिस स्टेशन में एक आदमी की बहुत पिटाई हुई बुरी तरह से और किसी वरिष्ठ नेता के शिकायत करने पर उन्होंने कहा कि आप ऐसी बात करेंगे तो आपकी भी जबरदस्त पिटाई होगी। तो यह हालत है आपकी पुलिस की। अदालतों की हालत आप समझ ही रहे हैं। तो क्या कहा जाय लेकिन ऐसी मजबूरियां हैं कि अपने उत्साह और उमंग को ठंडा करके अब मैं रचनात्मक दृष्टिकोण की तरफ ध्यान ले जाकर समाप्त करता हूं, इसलिये कि यह सरकार अब भी चेते।

उधर से यह कहा जाता है कि विरोधी पक्ष में एका नहीं है। विरोधी पक्ष में अगर एका होता तो हम आपको बैठने देते ? हम में एका नहीं है इसी से तो यह शासन चल रहा है, आप की सरकार चल रही है। पाकिस्तान के हमले की जो बात कही जाती है....

(इस समय २ बजकर ३१ मिनट पर उपाध्यक्ष, श्री होतीलाल अग्रवाल पीठासीन हुए।)

श्रीमन, उससे हमें किंचित मात्र भी भय नहीं है, हमारा उसका क्या मुकाबला है। हमारे यहां कारखाने मौजूद हैं, एक कारतूस खत्म होता है, दूसरा बन कर तैयार हो जाता है, उनके यहां दूसरे मुल्कों से मांग कर आता है, अगर खत्म हो जायेगा तो उन्हें कहां से मिलेगा। उसके मुकाबले में पंचगुनी शक्ति हमारी है, अगर हम उससे मुकाबला नहीं करेंगे तो क्या नैपाल और लंका से करेंगे ? अगर दूसरा मुल्क उसकी मदद पर नहीं आता, तो हमारा उसका क्या मुकाबला, वह तो कीड़े मकोड़े की तरह है हमारे लिये। लेकिन फिर भी जो खतरा है, तो हम सब देश के साथ हैं।

श्रीमन, यह सरकार स्वेच्छा से नहीं जा सकती। क्योंकि जब ७० साल, ७५ साल के रिटायर्ड लोग जब टिकट पाने की इच्छा रखते हैं, जिन्हें दिखाई नहीं देता, कान से सुनायी नहीं देता, हमारे जिले के आचार्य जी हैं जो सुन नहीं सकते, लिख नहीं सकते, वे लोग जब मंत्री बनने की इच्छा रखते हैं तो यह सरकार स्वेच्छा से तो हटेगी नहीं। अब हटे कैसे ? इधर के लोग भाग भाग कर उधर जा रहे हैं। श्रीमन, जब घर में लड़ाई होती है तो घर का झगड़ा शान्त करने के लिये बीबी पर गुस्सा उतारा जाता है। १७ आदमियों को लेकर गेंदा सिंह जी उधर चले गये और सारी कांग्रेस पर हावी हो गये। तो यह सरकार कैसे हटे ? एक मुख्य सचेतक इधर बैठते हैं, एक उधर बैठते हैं। इसलिये मैं विरोधी पक्ष से यह कहना चाहता हूं कि अगर इस सरकार को हटाना है तो सब एक हो। अलग-अलग विभिन्न पार्टियां हैं वे जब तक इस कांग्रेसी सरकार के विरोध में, जिसने जुल्म, बेईमानी, भ्रष्टाचार, चोरबाजारी आदि तमाम चीजों को बढ़ाया है, इसको ध्वस्त करने के लिये एक प्रोग्राम नहीं बनायेंगे, यह सरकार हट नहीं सकती। जहां और प्रकार के छोटे-छोटे यज्ञ आप करते हों, वहां एक होने की कोशिश करो। आज की परिस्थिति जरूर कुछ बदली हुई है, किन्तु जब यह परिस्थिति सामान्य हो जब उत्तर प्रदेश और

[श्री राधेश्याम शर्मा]

देश पर यह संकट समाप्त हो, तो उत्तर प्रदेश के इस विरोधी पक्ष की ओर से एक महायज्ञ रचा जाय और उस महायज्ञ में श्रीमन्, इस सरकार के कार्यक्रम बेईमानी, भ्रष्टाचार, रिश्वतखोरी, अकाल, महंगाई, भुखमरी, इन सारी चीजों को होम कर दें। उत्तर प्रदेश में सही शासन चले तभी उत्तर प्रदेश का भला हो सकता है। इस प्रकार से मैंने बड़ी संजीदगी के साथ ये सब बातें कही हैं और मैं उम्मीद करता हूं और जोरदार ढंग से कहना चाहता हूं कि सरकार अब भी इस कहे पर ध्यान देगी जब कि इस वक्त मुल्क पर हमला है।

*श्री गोविन्द सहाय (जिला बिजनौर)---

श्रीमन्, सरकार के विरुद्ध अविश्वास का प्रस्ताव कोई नई बात नहीं है। आपोजीशन की ओर से हर साल यहां पर आता भी है और उनका अपने लिये लाना जरूरी भी होता है। इसलिये इस बात पर बहस नहीं हो सकती और यह मुनासिब भी नहीं लगता कि हम यह कहें कि यह उनका हक नहीं। उनका हक है। सिर्फ सवाल इतना ही है कि किसी हक को किस समय इस्तेमाल करना चाहिये। अपोजीशन लीडर ने जितनी बातें कहीं, मेरा खयाल है, मैं बहुत कम दफा इतनी गौर से स्पीच सुन पाता हूं जितनी मैंने इस बार सुनी है। उन्होंने जो बातें कही हैं, हो सकता उसमें बातें सही हों। यह कहना कि आपोजीशन जो बात कहता है वह गलत होती हैं यह नामुनासिब बात है। परन्तु सही बात के लिये भी ठीक यही है कि सही मौका हो। उस खयाल से बड़े अदब से मैं आपके जरिये इतना कहना चाहता हूं कि अगर वे अविश्वास का प्रस्ताव इस समय न लाते तो ज्यादा मुनासिब होता। वे लाये हैं तो बड़ी अच्छी बात है और उनकी जो बातें वजनदार हैं, उन बातों को सरकार खुले दिल से गौर करना चाहिये।

अपोजीशन के नेता ने अपनी तरफ से जो इस सदन में एलान किया कि जनसंघ की ओर से चालीस हजार वालन्टियर्स इसमें योगदान देने के लिये तैयार हैं, ये सब बधाई की बातें हैं, हमें उन बातों की कदर करनी चाहिये। मैं यह कहना चाहता हूं कि कांग्रेस की ओर से भी ५७ लाख सदस्य हैं और उसमें एक लाख कर्मठ सदस्य हैं जो इस वक्त देश के लिये लड़ने को तैयार हैं। इस तरह से कांग्रेस पार्टी भी अपनी ओर से तमाम कर्मठ सदस्यों को इस लड़ाई में झोंकने को तैयार है।

अब रही बातें सरकार की। जाहिर बात है कि सरकार की पाकिस्तान से लड़ाई हो गई है। पर मैं यह कहना चाहता हूं कि जो लड़ाई को कल तक खराब समझते थे आज यकायक उसे अच्छा कहने लगे हैं। ये कैसे? अगर वे कहते तो मैं समझता हूं कि वे पहले गलत कहते थे या आज गलत कहते हैं। इसी तरीके से आज जो भी सरकार है, सवाल सिर्फ इतना है कि इस वक्त कोई भी सरकार हो आपको लड़ाई चलानी है तो जो सरकार है उसके जरिये ही चलानी है, दूसरी इस वक्त बन नहीं सकती है तो दानिशमन्दी का तकाजा यह है कि उस वक्त अगर वह सरकार कमजोर भी हो, तो उसे कमजोर नहीं कहना चाहिए, खराब भी हो तो उसे खराब नहीं कहना चाहिए। यह तो वैसे ही है जैसे कि किसी आदमी से कहें कि काम तो तुम्हीं से लेना है लेकिन हमारी राय यह है कि आदमी तुम बढ़िया नहीं हो। इसलिये अगर इस सरकार से काम लेना है तो ऐसे वक्त होते हैं जब सीने पर पत्थर रखकर बातें कहनी पड़ती हैं। इसका मतलब यह आप मत समझें कि जितनी बातें कही जाती हैं वह सब गलत हैं और मैं आपसे कह सकता हूं कि हमको खुद कुछ कम पत्थर रखकर के बातें नहीं कहनी पड़ रही हैं। बहुत सी बातें हम गलत समझते हैं परन्तु फिर भी किस वक्त पर कौन सी बात कहें, कौन सी न कहें, इसका इमत्याज इसकी पहचान हम रखते हैं। इसलिये इस वक्त इस बहस में मैं नहीं जाना चाहता। मैं यह कहना चाहता हूं कि आम लोगों के सामने यह बात जाय कि आपोजीशन पार्टियां

*वक्ता ने भाषण का पुनर्वीक्षण नहीं किया।

सब मदद तो करना चाहती हैं लेकिन मदद जिनकी कर रही हैं उनको बिलकुल निकम्मा समझती हैं, तो उनकी मदद की ताकत कम हो जायगी और उन तक उनकी मदद पहुंचेगी भी नहीं। इसलिये मैं समझता हूं कि अभी मेरे मित्र ने जितने शब्द कहे उनको इस वक्त न कहते तो ज्यादा अच्छा था। आखिर पालिटिक्स में बहुत जहर पीना पड़ता है। और आप कुछ वैसा भी मत सोचें क्योंकि तवारीख तो यह बताती है कि जिन सरकारों ने लड़ाइयां शुरू की हैं, बहुत कम लोग उसके आखिर तक जिन्दा रहते हैं, तो अगर पेशेंस हो आप में तो आपकी भी सांठगांठ लग सकती है। लेकिन इस वक्त पर मौजूं नहीं लगता है कि एक ही सांस में दो बातें कही जायं कि सरकार को हम सहयोग भी देना चाहते हैं हालांकि सरकार करप्ट है, भ्रष्टाचारी है, निकम्मी है। यह बातें शोभा नहीं देती हैं। इसलिए मैं इस सिलसिले में बहुत सी बातें कहना नहीं चाहता हूं, चाहे मेरी राय बहुत सी बातों में इख्तलाफ भी रखती हो लेकिन यह मौका उसके लिये नहीं है।

अब मैं थोड़ा सा एक बात की तरफ इशारा करना चाहता हूं। अपोजीशन नेता ने केवल एक ही प्रोग्राम बताया कि हमने तो पहले से ही बताया था, सरकार समझती ही नहीं। और उन्होंने क्या बताया? उनको केवल एक बात मालूम है कि इस प्रदेश में फिफ्थ कालमिस्ट बहुत हैं। जब भी कोई बात आती है तो वह फिफ्थ कालमिस्ट का सवाल ही करते हैं और जरा तफसील में पूछा जाय कि फिफ्थ कालमिस्ट किसको आप समझते हैं तो इनके सोचने का सारा ढंग जो है वह मालूम पड़ जायगा और यह कहेंगे कि अमुक मुसलमान फिफ्थ कालमिस्ट है। मैं आग्रह करना चाहता हूं कि हिन्दुस्तान पाकिस्तान की लड़ाई में इससे कोई अन्दाजा आप न लगायें कि किसकी फौज कहां आगे बढ़ी है। आज की दुनिया में कितनी भी बड़ी ताकत हो वह छोटे से छोटे मुल्क पर भी फिजिकल कब्जा नहीं कर सकता। वर्ल्ड ओपीनियन बहुत बड़ी ताकत रखती है। इसलिए हिन्दुस्तान के लिए लाजिमी है कि अगर कोई कदम वह उठाये तो जैसे हाथी पहले वजन करके देख लेता है तब कदम उठाता है, वैसे ही हिन्दुस्तान भी कोई कदम उठाने से पहले यह अच्छी तरह देख ले कि इस कदम को दुनिया ठीक कहेगी या नहीं, नहीं तो फिजिकल ताकत में बड़े से बड़ा मुल्क भी आज आगे बढ़कर ठहर नहीं सकता है। इसलिये जिन दोस्तों का यह कहना है कि अमुक टाइम पर हल्ला बोल देना चाहिये था, हमने बड़ी गलती की, उनसे मैं बड़े अदब से यह कह सकता हूं कि आपकी और हमारी टाईमिंग में फर्क है। एक अच्छे काम के लिये टाईमिंग भी ठीक होना चाहिये। आप देख रहे हैं, आज जब कि हिन्दुस्तान का पक्ष इतना मजबूत है तब भी यूनाइटेड नेशंस में किसी की हिम्मत नहीं पड़ रही है कि वह कहे कि पाकिस्तान की गलती है। अगर आप यह कहें कि क्या करना है इन्टरनेशनल पालिटिक्स को लेकर, दुनिया की ओपीनियन से क्या मतलब है, तो आप कह सकते हैं। लेकिन हमें तो उसी दुनिया में रहना है, उसी दुनिया से मदद लेनी है, उसकी ओपीनियन लेनी है। मैंने जैसा कहा—आज जब कि पाकिस्तान का इतना कमजोर केस है। उसने एग्रेशन किया, यूनाइटेड नेशंस के जो आबजर्वर्स हैं वह कहते हैं कि पाकिस्तान ने इन्फिल्ट्रेटस को भेजा फिर भी जो सबसे बड़ी अदालत दुनिया की है उसमें हिम्मत नहीं है कि वह यह कह सके कि पाकिस्तान ने एग्रेशन किया है। हमको दुनिया की फोर्सेज को भी देखना होगा और यह भी देखना होगा कि यह लड़ाई दो मुल्कों के बीच में तो है ही लेकिन यह दो उसूलों की, दो तरह की विचारधारा की, दो तरह की व्यवस्थाओं की लड़ाई भी है। अगर हम इसे दो कौमों की लड़ाई कहेंगे तो आपकी फौज कितनी मजबूत क्यों न हो, आप ऐसे उलझ जावेंगे कि उससे निकल नहीं पावेंगे, निकलना बहुत मुश्किल हो जायगा। हर वह आदमी फिफ्थ कालमिस्ट होता है जो अपने मुल्क की खामियां देखता है, उसकी कमजोरियों को ही सिर्फ देखता है, अपने दुश्मन की खूबियां देखता है, उनकी सराहना करता है।

पिछली बार चीन की लड़ाई में यह गलती कांग्रेस के बड़े-बड़े लीडर्स ने की थी। किसी ने कहा कि हमारी फौज के पास बूते नहीं हैं, और किसी ने कुछ कहा। लड़ाई में

[श्री गोविन्द सहाय]

सेट बैक्स हुआ ही करते हैं। मैं इसे बहुत अच्छा नहीं समझता कि हमारे अपोजीशन के लीडर्स यह कहते हैं कि हमने तो फिफ्थ कालमिस्टों के खिलाफ आगाह किया था। मुझे यह कहने में हिचक नहीं है कि ऐसी बातों से देश की ताकत नहीं बढ़ती है और न ही डैमोक्रेसी की ताकत बढ़ती है। और हम यही कहते रहें कि उधर के लोग सब बेईमान हैं और उधर के लोग कहते रहें कि इधर के सब लोग बेईमान हैं, तो इससे मुल्क आगे बढ़ने वाला नहीं है। इससे देश आगे नहीं चल सकता। मैं तो कम से कम अपने किसी पोलीटीकल साथी को बेईमान कहने के लिये तैयार नहीं हूं। साथ ही ईमानदारी का सर्टी फिकेट भी आसानी से देने के लिये तैयार नहीं हूं। अगर हम डमोक्रेसी के ट्रेडीशन्स को जिन्दा नहीं रखते हैं तो इस लड़ाई से खतरा है डैमोक्रेसी को भी। मुझे खुद यह बात अच्छी नहीं लगती कि सदन में २, २।। घंटे बहस हो इस बात पर कि कोई कहे कि फलां आदमी गलत पकड़ा गया है, काउंसिल में कहा जाय कि पुलिस ने ज्यादती की है। डैमोक्रेटिक गवर्नमेन्ट का फर्ज है कि वह हाउस की राय को समझे। अगर कोई सरकार ऐसा नहीं करती है तो वह डेमोक्रेटिक नहीं कहला सकती है। कांग्रेस ने मुझे एक ही बात सिखाई है कि गलत बात हिम्मत के साथ कहो। मुझे इसमें कोई शर्म नहीं है कि कांग्रेस पार्टी में आपस में झगड़े हैं। पोलीटीकल पार्टी में आपस में झगड़े होना कोई अजीब बात नहीं है लेकिन वे झगड़े पर्सनल नहीं होने चाहिये, वे विचारात्मक होने चाहियें।

श्री सत्यनारायण पांडेय (जिला इलाहाबाद)—

पर्चेबाजी क्या थी ?

श्री गोविन्द सहाय—

यह पर्चे की बात कोई मैच्योर्ड आदमी को शोभा नहीं देती। यह खसलत किसी मैच्योर्ड आदमी की नहीं होती है कि उसके खिलाफ अगर कोई बात कही जाय तो उसे ताव आ जाय। मैं आपकी इज्जत करता हूं और जो आप कहते हैं उसकी भी कदर करता हूं। मगर जो मैं कह रहा हूं उसे जरा शांति से सुनने की कृपा करें। आप देखेंगे कि जितने भी देश सेकिन्ड वर्ल्ड वार के बाद आजाद हुए हैं उनके अन्दर अभी तक पोलीटीकल पार्टियों में झगड़े चले आ रहे हैं। कुछ हमारे झगड़े पर्सनल हैं और कुछ के जिम्मेदार अपोजीशन के भाई हैं। अगर मजबूत अपोजीशन हो जाय तो हमारे झगड़े बहुत कुछ खत्म हो जावें। इस तरह से जो काम अपोजीशन को करना चाहिये वह हमें करना पड़ रहा है। तवारीख ने हमको सिखाया है कि अगर हुकुमत ठीक नहीं है तो उसके खिलाफ आवाज उठाओ। मैं आशा करता था कि आप हमारे झगड़ों से फायदा उठावेंगे और खुश होंगे। लेकिन साथ ही हमारी बड़ी मुसीबत यह भी है कि अगर हम मिलते हैं तो कहा जाता है कि चोर चोर मिल गये। अगर हम लड़ते हैं तो कहा जाता है कि लड़ते हैं। कांग्रेस पार्टी का तो ट्रेडीशन ही यह है कि जिस दिन कांग्रेस के अन्दरुनी झगड़े खत्म हो जावेंगे उस दिन मुल्क की प्रोग्रेस ही रुक जावेगी। कांग्रेस पार्टी ने १८ सालों में जिन सवालात को उठाया है उनसे मुल्क की ताकत बढ़ी है, मुल्क को रास्ता मिला है। साथ ही अगर कांग्रेस पार्टी के आपस के झगड़े हैं तो हमें उन्हें रिगिल आउट करने की कोशिश करनी चाहिये। झगड़ा मुझे सही बात कहने से रोकता नहीं है। कांग्रेस की ट्रेनिंग मुझे सिखाती है कि मैं गलत बात के खिलाफ आवाज बुलन्द करूं। अगर हमारे यहां झगड़े हैं तो आपको अपने यहां नहीं रखने चाहिये। कांग्रेस में झगड़े हैं और अपोजीशन बगैर पावर के ही टूटता जा रहा है। हमको इसमें कोई खुशी नहीं है। हम तो चाहते हैं कि डैमोक्रेसी के हित में यही है कि अपोजीशन स्वस्थ हो।

अब मैं सिर्फ इतना कहना चाहता हूं कि हम इस वार एफर्ट में क्या-क्या कर सकते हैं चाहे कोई किसी भी पार्टी का क्यों न हो। बहुत सी समस्यायें ऐसी हैं जिनको हम सब

मिलकर आसानी से सुलझा सकते हैं। मेरा यकीन है कि या तो यह लड़ाई १०, १५ दिन में खत्म हो गई वरना यह बहुत लम्बी होने वाली है और इसमें सारी दुनिया की ताकतें आने वाली हैं। हिन्दुस्तान और पाकिस्तान की लड़ाई पर सारी दुनिया की सियासी गुटबन्दी उठने वाली है। इसमें एक कैपि लिस्ट देश दूसरे कैपिटैलिस्ट देश से लड़ेगा और एक सोशलिस्ट देश दूसरे सोशलिस्ट देश से लड़ेगा। इसलिये यह लड़ाई लम्बी हो सकती है। ऐसे अवसर पर एक जेन्टिलमैन्स एग्रीमेन्ट होना चाहिये भले ही हमारे डिफरेंसेज चलते रहें। हुकुमत को तो यह करना चाहिये कि जो कुछ खराबियां आज तक बताई गई हैं, उनको दूर करने की कोशिश करें चाहे आहिस्ता आहिस्ता ही सही। यह गलत खयाल है कि १, २ मिनिस्टर इधर के या उधर के बढ जावें, यह उसूलन गलत बात है। यूं टी का मतलब है कि आबजैक्टिब्ज में यूनिटी हो। एडमिनिस्ट्रेशन को हम झगड़े के अखाड़े से निकालें। मुझे यह कहने में कोई हिचक नहीं है कि ऐडमिनिस्ट्रेशन में कभी भी इतनी गन्दगी नहीं थी जितनी कि आज है। मैं किसी की कही हुई बात नहीं कह रहा हूं, बल्कि अपनी देखी कह रहा हूं। पर्सनल बातों से हम जरा ऊपर उठें। पर्सनल बातों के लिये बहुत समय बाद में मिल सकता है। मगर इस समय वक्त का तकाजा है, हालात की मांग है, कि हम ऊपर उठें। इस सरकार के सिंहासन को १।।, २ साल तक तो कोई हिलाने वाला नहीं है। यह अपने को महफूज समझ कर ऐडमिनिस्ट्रेशन को ठीक करे ताकि देश का हर आदमी अपना योगदान दे सके।

अपोजीशन वाले शिकायत करते हैं, जनसंघ के लोग शिकायत करते हैं, और सरकार से आपसे अधिक हमारा रिश्ता है और हम सब उसको छाती पर पत्थर रख कर देख रहे हैं और यह भी ठीक है कि हम लोगों से अधिक आपके हक सुरक्षित हैं। लेकिन आज हमें उन बातों पर विचार नहीं करना है। हमें तो आज यह देखना है कि इस ऐडमिनिस्ट्रेशन को किस प्रकार से अधिक एफीशियेन्ट बनाना है। मुझे डर है कि अगर सरकारी मशीनरी को यह नहीं बताया गया कि फिफथ कालमिस्ट कौन हैं तो यह लाजिमी है कि वे लोग भटक जायेंगे। बहुत से स्थानों पर यह होता है कि किसी प्रकार उस झगड़े को कम्युनल रंग दे दिया जाय। हमें यह कोशिश करनी चाहिये कि बिला वजह किसी को कम्युनल रंग न दिया जाय। हमें बताना होगा कि जो लड़ाई लड़ी जा रही है वह पीपुल आफ पाकिस्तान और पीपुल आफ इंडिया की लड़ाई नहीं है। वह केवल दो मुल्कों की लड़ाई है और दो मुल्कों के एम्स एन्ड आबजेक्ट्स की लड़ाई है। यह डिक्टेटरशिप की डेमोक्रेसी के खिलाफ लड़ाई है। मैं इस बात को भी कहने में न हिचकूंगा कि जब पाकिस्तान में मिस्टर अयूब आये तो मैंने तभी कहा था अब लड़ाई कभी भी हो सकती है क्योंकि डिक्टेटर जिन्दा ही तभी रहता है जब कि लड़ाई का तनाव पैदा करता रहे। इसलिये अयूब के आने पर मिलिटरी डिक्टेटरशिप लाजिमी थी। हम लोगों को यह साबित कर देना है कि हम भारत में सब मिल जुलकर एक झंडे के नीचे किस प्रकार अमन चैन से रहते हैं। इस तरह से हमें अपने ऐडमिनिस्ट्रेशन को बनाना है। यह भी नहीं है कि लड़ाई के जमाने में गवर्नमेंट न बदलती हो। जब गवर्नमेंट निकम्मी होती है तो उसको हटाया जाता है, चेम्बरलेन को ही हटाया गया था। लेकिन पहले उसको कुछ चान्स तो देना ही होता है। अभी तो लड़ाई शुरू ही हुई है। मुझे फख्र है कि जिस प्रकार से इन्डियन लीडरशिप ने और मिलिटरी के लोगों ने जो कदम उठाये हैं, उसमें उन्होंने अपनी ताकत का सही इस्तेमाल किया है और अन्तराष्ट्रीय क्षेत्र में भी जो लोग हमारे खिलाफ जा रहे थे वे आज कुछ कह नहीं पा रहे हैं। आज यह जनता की लड़ाई है इसलिये हमें जनता में एक वातावरण पैदा करना होगा जिसमें उसका उत्साह बढ़े और भारत में जो लोग अप्रत्यक्ष रूप से पंचमांगियों का काम कर रहे हैं उनको हमें आइसोलेट करना होगा, चाहे वह किसी भी धर्म या मजहब का क्यों न हो।

पाकिस्तान ने पैराट्रूप्स का यह नया कदम उठाया है। दुनिया की तवारीख में इस तरह से पैराट्रूप्स को कहीं नहीं उतारा गया। जहां भी पैराट्रूप्स उतारे गये हैं वहां पिछली लाइन को काटने और सेबोटेज के लिये ही उतारे गये हैं। जब यहां की जनता को ही बहुत सी बातें नहीं मालूम होतीं तो उनको क्या मालूम है कि वहां कौन सी चीज बन रही है। यह सिर्फ इसलिये

[श्री गोविन्द सहाय]

किया जा रहा है कि किसी तरह से अविश्वास पैदा होकर हिन्दू मुसलमान के झगड़े के रूप में खड़ा कर दिया जाय । ये सेबोटेज वर्क करने नहीं आये हैं बल्कि पब्लिक में कन्फ्यूजन पैदा करने के लिये आये हैं । आज हिन्दुस्तान में सब कौमें मिल जुल कर काम कर रही हैं, यह उनकी यूनिटी को तोड़ने के लिये आ रहे हैं। इसलिये हमें इस तरफ से सावधान रहना है और जो लोग उनके इस काम में मदद करने वाले हैं उनको आइसोलेट करना है। इससे सरकार को जनप्रियता बढ़ेगी ऐडमिनिस्ट्रेशन ऐसा होना चाहिये जिसमें हर आदमी यह कहे कि इसमें मेरा बराबर का हक है: अगर हम इस आबहवा को पैदा कर पाये तो इसमें शक नहीं कि हिन्दुस्तान लड़ाई के बाद इससे भी अधिक शक्तिशाली होकर निकलेगा । लेकिन उसमें अगर कोई गलती की और उसकी फौजी जीत भी हो गयी हमारी शान्ति को उससे खतरा पहुंच सकता है । चीन ने यद्यपि लड़ाई को जीत लिया था लेकिन शान्ति को उसने खो दिया । लड़ाई की तरफ भी हमें नजर रखना है और अन्दर के देश के अमन और सारे नक्शे पर ध्यान रखना है, जनमत को भी तैयार करना है तभी हम इस इम्तहान से पास हो कर निकल सकते हैं । मैं आखिर में अपने अपोजीशन के लोगों से माफी चाहता हूं अगर कोई बात मुझ से ऐसी हो गई हो, मेरा कभी कोई ऐसा इरादा नहीं होता । मैं आशा करता था कि जो थोड़ी बहुत बातें होती हैं उन को कहने का हमेशा मौका रहता है। इस वक्त वह न कही जायं तो अच्छा है वर्ना कोई ऐसी बात नहीं है कि उन को अविश्वास-जाहिर करने का हक नहीं है। लेकिन आज एक बड़ी जिम्मेवारी हम पर आई है तो हमें स्वयं और एडमिनिस्ट्रेशन दोनों को मिलकर उस को निभाना है, हमें चाहिये कि हम उन वैल्यूज और संस्थाओं को कायम रखें जिन की वजह से हमारे देश और पाकिस्तान में एक नुमाया फर्क है । मुझे आशा है कि इस लड़ाई के बाद हम अधिक सुदृढ़, शक्तिशाली और अधिक मिल जुल कर दुनिया के सामने आयेंगे।

श्री लखपतराम शर्मा (जिला झांसी)—

उपाध्यक्ष महोदय, जो अविश्वास का प्रस्ताव सदन के सामने प्रस्तुत हुआ है उस पर मैं अपने विचार व्यक्त करूंगा । यह सही है कि इस समय देश और प्रदेश के सामने एक तूफान की शक्ल में एक बहुत बड़ा संकट आया है और शायद इतना बड़ा संकट पिछले सौ सवा सौ सालों में चीन के हमले के बाद इस बार आया है । इस समय देश व प्रदेश पर हमले के खिलाफ और देश की रक्षा के लिये जो हमारे नौजवान कुरबानी कर रहे हैं, जो आज भारत माता की लाज रख रहे हैं उन का इतिहास स्वर्णाक्षरों में लिखा जायगा और उस को लिखने के लिये बहुत बड़ी शक्ति की आवश्यकता होगी । आज हम इस विधान सभा में बैठकर जो काम यहां कर सकते हैं और कर रहे हैं, मेरा खयाल ऐसा है शायद किसी को मेरी बात से तकलीफ हो क्योंकि सत्य व कटु आलोचना तकलीफ देह होती ही है लेकिन आज जो संकट देश पर है उस को दूर करने के लिये जो कुछ हम यहां कर रहे हैं उस से अधिक जरूरी काम हम बाहर कर सकते थे । इसी-लिये मैंने सदन के सम्मुख विचार रखा था कि विधान सभा का कार्य बन्द किया जाय और यह अविश्वास का प्रस्ताव वापस लिया जाय ।

माननीया मुख्य मंत्री की तरफ से एक प्रस्ताव आज आया जिस में देश को मजबूत बनाने की भावना थी, उस पर भी लोगों ने अपने विचार व्यक्त किये । जनतंत्र का यह तकाजा है और उस में हर सदस्य अपने विचार रखने के लिये स्वतंत्र है और व्यक्त करता है लेकिन अभी जैसा कि श्री गोविन्द सहाय जी ने कहा कि हर चीज के लिये एक उपयुक्त समय और वातावरण की आवश्यकता होती है । मेरा किसी दल से सम्बन्ध नहीं है इसलिये मैं आप के सामने अपने विचार स्वतंत्रता से रखना चाहता हूं । आज जब जनता के सामने यह चर्चा आती है कि देहातों में लड़ाई न होकर शहरों में लड़ाई हो सकती है वह है भी और दिल्ली, राजस्थान, कलकत्ता में पाकिस्तान हमला कर चुका है, उस हालत में भी क्या यह उचित है कि विरोधी दल की ओर से अविश्वास का प्रस्ताव रखा जाय ? यह सही है कि यह हमारा अधिकार है लेकिन साढ़े सात करोड़ जनता के सामने ऐसे समय में अविश्वास के प्रस्ताव की बात करेंगे तो बहुत सी बातों का और आलोचना का उत्तर न दिया जा सकेगा । आज हर आदमी के दिमाग में है कि दिल्ली पर बम बारी

हो सकती है तो आप लखनऊ की इस विधान सभा की बात क्यों नहीं सोचते ? आज जब देश और प्रदेश सभी संकट में हैं उस समय हमारे दोस्तों ने यह भी शिकायत की कि सरकार की तरफ से हमारा सहयोग नहीं लिया जाता। हम को बुलाया नहीं गया लेकिन मैं उन को बता दूं कि जब देश पर संकट होता है तो किसी को बुलाने का इंतजार नहीं रहता बल्कि स्वयं को प्रवेश करना होता है। कांग्रेस का आज सवाल नहीं है, सरकार के बुलाने न बुलाने का भी सवाल नहीं है, यह वह समय है जब राष्ट्र ने आपका आह्वान किया है, आप किसी के बुलाने का इंतजार क्यों करते हैं आप को कांग्रेस का या शासन का साथ नहीं देना है आप को संकट का मुकाबला करना है। आप को देश बुला रहा है, भारत माता बुला रही है, आओ आगे बढ़ो । उन नौजवानों से पूछा जाय जो आज देश की एक एक इंच भूमि के लिये अपना बलिदान कर रहे हैं और अपना खून दे रहे हैं, मां अपने बच्चों को और बहिनें अपने भाइयों को दे रही हैं और वे हमारे देश की रक्षा कर रहे हैं । अगर उनके पास यह समाचार पहुंचे कि इस प्रदेश की सरकार के विरुद्ध, जो साढ़े सात करोड़ जनता की सरकार है, अविश्वास का प्रस्ताव आया है तो क्या इससे इनका मनोबल ऊंचा हो सकेगा ? हमारे नौजवानों पर इसका क्या असर पड़ेगा ? यह मैं जानता हूं कि हमारे और आपके बीच में एक बड़ी खाई है जो एक समुन्दर जैसी है लेकिन जब देश की ऐसी हालत हो कि चप्पे चप्पे पर लड़ाई हो रही हो तो हमें शत्रु का मुकाबला करने के लिये इस चीज को भूलना पड़ेगा ।

इस सम्बन्ध में आपके सामने एक ऐतिहासिक घटना रखना चाहता हूं और वह ऐतिहासिक घटना ऐसी है कि जिससे हमारे बहुत से माननीय सदस्यों को भी लाभ होगा । इस देश में चन्देरी में जब कि बाबर ने हमला किया उस समय वहां के राजा ने हिन्दूरानी से नई शादी की थी और वे उसके प्रेम में लिप्त थे । जब बाबर ने चन्देरी के किले पर हमला कर दिया तो रानी ने राजा से कहा कि चन्देरी की स्वतंत्रता समाप्त हो रही है और आप मेरे प्रेम में उलझे हुए हैं, राजा ने प्रेम में अन्धे होने के कारण कुछ न सुना । रानी ने बार-बार कहा कि चन्देरी की रक्षा के लिये आप दुश्मन का मुकाबला करो और अगर नहीं कर सकते हो तो चन्देरी में फिर कभी शक्ल न दिखाना लेकिन उस ओर फिर भी राजा ने ध्यान नहीं दिया। बाबर वहां के किले की तरफ बढ़ने लगा तो महारानी ने सोचा कि अब चन्देरी की स्वतंत्रता समाप्त हो जायगी । तो उस राजपूत नारी ने बांदी को बुलाया और उसे आदेश दिया कि तुम मेरे सिर को उतारकर एक बहुत खूबसूरत थाल में रखकर महाराज के पास ले जाना और उनसे कहना कि रानी ने अपनी सबसे कीमती भेंट भेजी है । रानी के कहने के अनुसार किया गया और जब रानी का सिर महाराजा के सामने गया तो उन्होंने पूछा कि यह क्या है तो उसने बताया कि रानी ने अपना सबसे कीमती उपहार भेजा है । राजा ने देखा कि यह तो रानी का सिर है, फिर क्या था, राजा उठा और उसने चन्देरी की स्वतंत्रता को बचाया । उस रानी ने अपना बलिदान स्वयं दिया लेकिन उसने चन्देरी की स्वतंत्रता को बचाया । नतीजा क्या हुआ कि राजा उठा और उसने दुश्मन को झकझोर दिया और बाबर को सोचना पड़ा कि हम किस जगह टकराये हैं । जब हिटलर और इंगलैण्ड की सुलह हो सकती है तो क्या हमारी और आपकी सुलह नहीं हो सकती है । जब देश खतरे में होता है तो जिनके विचार भिन्न भी होते हैं, वे भी आपस में मिल जाते हैं ।

यह सही बात है कि आज पाकिस्तान में हमारे विश्वासपात्र बहुत कम लोग हैं लेकिन उनके बहुत से लोग यहां हैं । पाकिस्तान को हमारी चीजें तो मिल सकती हैं लेकिन हमें उनकी चीजें नहीं मिल सकती हैं क्योंकि अगर बहिन यहां पर है तो भाई पाकिस्तान में है और बाप यहां पर है तो बेटा पाकिस्तान में है । इस समय जो लड़ाई है वह उसूलों की हमारी एक लड़ाई है जनता की लड़ाई नहीं । स्थिति का तकाजा यह है कि अगर तुम किसी बहिन से पूछो जिसका भाई वहां है तो वह कभी भी यह नहीं चाहेगी कि उसके भाई पर हमला हो और वह मारा जाय । लेकिन आज तो यह लड़ाई वहां की मिलिट्री शासन के खिलाफ है । वहां की जनता के खिलाफ हो, ऐसी बात नहीं है । आज जरूरत इस बात की है कि कांग्रेस वाले भाई हमारे सहयोग की कीमत समझें और अगर आप लड़ते रहे तो याद रखिये, जो लोग आजादी के लिये, देश के लिये लड़ते हैं उनकी खाक की भी पूजा होती है, लेकिन देश पर आये संकट के समय आपस में लड़ने वालों

[श्री लखपतराम शर्मा]

का इतिहास सदा काले अक्षरों में लिखा जाता है । आने वाली पीढ़ी हमको कभी माफ नहीं कर सकती है । देश की जनता हमको क्षमा नहीं करेगी और जिस मिलिट्री को आपने १८ साल के बाद अपने राजनीतिक अखाड़े से छुट्टी दी है वह भी आपको क्षमा नहीं कर सकती । इतिहास इस बात का साक्षी है कि दुश्मन दोस्त और दोस्त दुश्मन युद्ध में बन जाता है। लड़ाई के समय में माननीया मुख्य मंत्री से कहना चाहता हूं कि मुल्क की सुरक्षा की तरफ आपका ध्यान जाना चाहिये ।

एक बात मैंने पहले भी कही थी, आज अगर पाकिस्तान का हमला गली-कूचे में और मुहल्लों में हो जाय और हम लोग उसका मुकाबला करना चाहें तो ५०० रुपये में १०० कारतूस ठीक रहे हैं । मैं पूछता हूं कि अगर मुहल्लों में लड़ा जाय तो कितने लोग ऐसे हैं जो इतने महंगे कारतूस खरीद कर अपने मुहल्ले को बचा सकते हैं । देशी कारतूस जो ७० और १०० रुपये सैकड़ा मिलने चाहिये उसमें भी दुकानदार का बहुमत बेईमानी कर रहा है । इसलिये मैं कहना चाहता हूं कि देश आज सिर्फ आलोचना से जिन्दा नहीं रहेगा, बल्कि जहन्नुम में चला जायगा, आलोचनाओं से दुश्मन को फायदा होगा । जब मुल्क की अच्छी हालत होगी तो हम और आप लड़ लेंगे आपस में लेकिन इस समय नहीं । मेरा सुझाव है कि जनता के हित में यह है कि असेम्बली की कार्यवाही तुरन्त बन्द करें । कार्यवाही बन्द करने के बाद जो सदस्य हैं इन सब का एक सेमीनार कीजिये, मिलिट्री के अफसरों को बुलाइये जो हमको शिक्षा दें कि जब दुश्मन का हमला हो तो हम अपने क्षेत्र में किस प्रकार से जनता को बचने की बातें बतायें । जहां तक कारतूस का सवाल है जितने लाइसेंस होल्डर्स हैं उनको सरकार की तरफ से उचित मूल्य पर कारतूस दिलाने की व्यवस्था होनी चाहिये ताकि लोग बन्दूकों का सही ढंग से इस्तेमाल करें । इस समय जो हिन्दू मुसलमान का सवाल पैदा किया जाता है, मैं समझता हूं कि अगर ऐसा किया गया तो पाकिस्तान तो हमको नहीं खा सकता है, अन्दरूनी गृह युद्ध हमको जल्दी खत्म कर सकता है । इसलिये आज यह भावना होनी चाहिये कि अगर कहीं किसी मुसलमान की जान खतरे में है तो हिन्दू अपनी जान की कुरबानी दे कर भी उसको बचाये और इसी तरह से मुसलमान भी करें कि अगर कहीं किसी हिन्दू की जान खतरे में है तो उसकी जान बचाने के लिये मुसलमान अपनी जान तक की कुरबानी दे दें ।

आपके अनेक मंत्रिगण सिफारिशों के आधार पर अनुचित से अनुचित काम करते हैं, जो गलत है, मैं चाहूंगा कि बेईमान आदमियों की सिफारिश करने जो भी आप के पास जाय चाहे वह कितना ही बड़ा क्यों न हो उसके ऊपर फौरन डी० आई० आर० चलाया जाय । मुल्क सबसे बड़ा है, अगरआप मुल्क को जहन्नुम में जाने से बचाना चाहते हैं तो मैं आपसे कहूंगा कि ये जो आपके ब्लैकमार्केटियर्स सेठ और साहूकार हैं उनको भी आप इन्सानियत का सबक सिखलाने की कोशिश करें और जरूरत पड़े तो सख्ती और डंडे के जोर से भी उनको अपने काबू में करने की कोशिश करें । कल लखनऊ के एक सेठ पूंजीपति विधायक ने कहा था कि इस मौके पर राजा महाराजाओं को सामने आना चाहिये । लेकिन मैं कहता हूं कि राजा महाराजाओं की तो आपने रियासतें छीन ली हैं लेकिन ये कानपुर तथा तमाम हिन्दुस्तान के जो मिल ओनर्स हैं, उनको भी आप इन्सानियत का सबक पढ़ाइये क्योंकि चीन का जब हमला हुआ था तब भी इन्होंने देश का साथ नहीं दिया था और अब पाकिस्तान के हमला करने पर भी ये हमारा साथ नहीं दे सकते हैं । ऐसे लोग चीन और पाकिस्तान से ज्यादा देशद्रोही हैं, वह भी जो आज भी आपस में लड़ते हैं और अपने मुल्क का साथ नहीं देते हैं । उनके साथ सख्ती करने की जरूरत है । तभी देश के प्रति आप अपने कर्त्तव्यों को पूरा कर सकेंगे ।

काजी जलील अब्बासी (जिला बस्ती)—

उपाध्यक्ष महोदय, आज का विषय है अविश्वास का प्रस्ताव । कल से मैं सुन रहा था, इधर से या उधर से यहां जितनी तकरीरें हुई हैं सारी आज के संकट के ऊपर ही हुई हैं। मालूम होता है हमारे विरोधी दल के नेता ने शायद इसीलिये इसको रख दिया कि इस बहाने इस संकट

की परिस्थिति पर अपने-अपने खयालात रखने का मौका मिल सकेगा। मैं समझता हूं कि इतनी सद्बुद्धि तो सभी में है कि ऐसे समय में कोई अविश्वास का प्रस्ताव नहीं लाना चाहिये, लेकिन इस सिलसिले में यह अवसर जो मिला है उसका भी सभी फायदा उठा रहे हैं। मैं कल से सुन रहा हूं कि ऐसे वातावरण में हाउस के अन्दर किसी का जी नहीं लग रहा है, सबका जी रेडियो पर लगा हुआ है कि न मालूम अब क्या हुआ। हर वक्त दिल व दिमाग में एक परेशानी की हालत है कि आखिर होना क्या है। मेरे खयाल से जितने सदन के मेम्बर हैं सभी ने यह कहा कि किसी का दिल यहां लग नहीं रहा है। उसके क्षेत्र में क्या हो रहा है उसके लिये हर वक्त सब परेशान हैं। ऐसी सूरत में यह हमारी कांग्रेस की जिम्मेदारी नहीं है बल्कि विरोधी दल इसके लिये जिम्मेदार हैं कि यह सदन आज चल रहा है, वरना शायद सदन को बन्द करने में माननीया मुख्य मंत्री को कोई जहमत न थी। आज इस सदन को कब तक चलना है इसका फैसला इधर से नहीं बल्कि उधर से होना है। समय की अहमियत को महसूस करके सभी इस बात को महसूस करते हैं कि इस वक्त मुनासिब चीज क्या है। मैं समझता हूं कि उसको बार-बार दोहराने में कोई खूबी नहीं है। हमारे विरोधी दल के सारे नेता काफी पढ़े लिखे, होशियार, समझदार और ईमानदार तथा देशभक्त हैं। इसलिये इस वक्त देशभक्ति का सबक उनको सिखलाना या समझाना मेरे लिये उचित नहीं है। मैं तो यह चाहता हूं कि उनके अन्दर देशभक्ति की भावना जल्दी जागे और वे महसूस करें कि हमलोग एक पिंजड़े के अन्दर बन्द हैं और यहां से छूट कर हम जल्द से जल्द अपने क्षेत्रों में जाना चाहते हैं।

अब तो यू० पी० के अन्दर मेरठ में पैराट्रूपर्स उतरे हैं, इससे साफ जाहिर है कि यह मामला सारे हिन्दुस्तान में है, खास कर हमारे सर पर आ गया है। मेरठ के अन्दर किस शक्ल में, कौन पैराट्रूपर्स कौन सी वर्दी पहन कर आये, इसको पहचानना बड़ा मुश्किल है। मैं समझता हूं कि ऐसी हालत में किसी भी देशभक्त को तब तक चैन नहीं मिल सकती जब तक कि वह पकड़ न जायं। ऐसी हालत में किसी को रात में नींद भी नहीं आ सकती है। जैसा कि माननीया मुख्य मंत्री ने कहा था, आखिर ये पैराट्रूपर्स क्यों आये हैं? मैं जिस तरह से खुदा पर यकीन रखता हूं उसी तरह इस पर भी यकीन रखता हूं कि ये पैराट्रूपर्स वास्तव में यहां हिन्दू-मुस्लिम दंगा कराने के लिये आये हैं और ऐसी सूरत में हमारा फर्ज हो जाता है कि इन पैराट्रूपर्स को पकड़ने के सिलसिले में सब कुछ करें। माननीया मुख्य मंत्री ने ५०० रु० के इनाम का एलान किया है और मैं समझता हूं कि ५०० रुपये हमको खर्च करके पकड़ने का मौका मिले तो भी खर्च करना चाहिये। इस सिलसिले में जिम्मेदारी ज्यादातर मुसलमानों पर रखी जाती है। जाहिर है कि पेराट्रूपर्स मुसलमान होने की वजह से जो उनका यहां भाई भतीजा है, खास अजीज है उसको तलाश करेगा। मैं यकीन रखता हूं और पूरा यकीन रखता हूं कि इस बात पर हम हिन्दुस्तान के मुसलमान एक आवाज के साथ हिन्दुस्तान के साथ हैं। इसी तरह का मंसूबा लेकर अयूब साहब काश्मीर में घुसे थे लेकिन उनका मंसूबा चकनाचूर हो गया और उसी तरह से उनका मंसूबा हिन्दुस्तान के गोशे गोशे से चकनाचूर हो जायगा। काश्मीर में घुसने के पहले उन्होंने सोचा था कि काश्मीर का मुसलमान शेख अब्दुल्ला के साथ है और वह उनका साथ दे देगा उनके पैराट्रूपर्स का, इंफिल्ट्रेटर्स का, और उनसे असलाह लेगा और फिर आपस में खानाजंगी करेगा। तब पाकिस्तान कह सकेगा कि हमसे क्या मतलब, यह लड़ाई तो आपस में हो रही है। पहले उन्होंने यह कहा भी कि हमारा उनसे कोई मतलब नहीं। लेकिन जब काश्मीर के मुसलमानों ने उनको पकड़ना शुरू किया और अखबार में मोटे मोटे लफ्जों में आया कि वजीर मुहम्मद पहला शख्स था जिसने इंफिल्ट्रेटर का पता दिया तो वहां के मुसलमानों की हमदर्दी का हाल खुल गया यह एक गांव का आदमी था और जिसको इत्मीनान हो गया तो वह भागकर गया और मिलीट्री को खबर कर दी। इस प्रकार पहली खबर वजीर मुहम्मद ने दी। यह खबर इसलिये अहमियत की है कि काश्मीर के अन्दर यह खबर एक मुसलमान वजीर मुहम्मद ने सबसे पहले दे कर कि इंफिल्ट्रेटर्स घुस आये हैं उसने मुसलमानों का सर ऊंचा किया और मुझे उम्मीद है कि हिन्दुस्तान का हर मुसलमान अपना सर ऊंचा करेगा और इस मामले में हिन्दुस्तान के साथ वह करके दिखायेगा जो उसका फर्ज है।

[काजी जलील अब्बासी]

कुछ मुसलमान जो यह कहते हैं कि साहब हमें क्या, हम तो कुछ भी करें गद्दार कहलायेंगे, मुझे उनसे यह कहना है कि जब मुहल्ले में आग लग जाती है तो दोस्त, दुश्मन सब चाहे किसी नस्ल के हों हर आदमी बाल्टी लेकर दौड़ पड़ता है। हमारी जायज शिकायतें हो सकती हैं उनके लिये हम बाद में लड़ते रहेंगे लेकिन इस समय जब पाकिस्तान ने हमको ललकारा है, हमारे घर में आग लगाने की कोशिश की जा रही है तो हम आग नहीं लगने देंगे। अगर घर में आग लग गयी तो फिर क्या शिकायत करेंगे और किससे शिकायत करेंगे ? इसलिये अपना फर्ज समझ कर हमें करना है। हमारे कुछ भाई हमें शक व शुबहा की निगाह से देखते हैं उसकी उनको परवाह नहीं करनी चाहिये। यह उनका मामला नहीं है, उनके संगठन का मामला नहीं है, यह हमारे देश का सवाल है और उस देश के हम भी वासी हैं। जहां हमारे भी कांस्टीट्यूशन में वही हक हैं जो औरों को दिये गये हैं चाहे कोई सिक्ख हो, ईसाई हो, पारसी हो अथवा मुसलमान हो। आज हमको अपनी सारी ताकत से जो हमारे पास है दुश्मन को बाहर निकालना है और इसके लिये मैं समझता हूं कि इस सदन के हर आदमी के दिल के अन्दर एक जज्बा है कि जल्द से जल्द हमको यहां से छुटकारा मिले। मैं फिर अपने विरोधी भाइयों से अपील करूंगा कि जब आज उनको अवसर मिला है और जैसा गोविन्द-सहाय जी ने कहा भी कि उनको अपनी बात कहनी थी वह कह चुके, एक दिन उस पर बोलना काफी था आज दो दिन उस पर तकरीरें हो चुकी हैं, हम भी सब्र व इस्तक्लाल के साथ उनको सुन चुके हैं लेकिन अब जरूरत इस बात की है कि इस झगड़े को खत्म किया जाय और हमको जाने की इजाजत दी जाय।

इन चन्द शब्दों के साथ मैं यह समझता हूं कि अब इस मसले पर मजीद कुछ कहने की जरूरत नहीं है। हमारे सामने जो सवाल है वह अहम है और उसके लिये जो चैलेंज हमको पाकिस्तान ने दिया है उसके लिये हमको अपना तन, मन और धन लगाने का मौका दिया जाय।

अपनी कांस्टीट्युएन्सी में जाकर सुरक्षा कोष में रकम जमा करने के लिये अमन कायम करने के लिये और जो भी हम से काम हो सकता हो उसको करने में हमें लग जाना चाहिये। इन शब्दों के साथ जो हमारे भाई अविश्वास का प्रस्ताव सरकार के खिलाफ लाये हैं, उसका मैं विरोध करता हूं।

श्री झारखण्डे राय (जिला आजमगढ़)—

माननीय, हमारे भाइयों को इस अविश्वास के प्रस्ताव पर बहुत असन्तोष है। अविश्वास का प्रस्ताव लाना हमारा एक अधिकार है जिसके जरिये से हम जनता के असन्तोष को व्यक्त करना चाहते हैं और व्यक्त करते रहे हैं। इस समय इसका यही अर्थ है। यह हम भी जानते हैं, उधर के लोग भी जानते हैं और आपको भी भलीभांति मालूम है कि इस अविश्वास के प्रस्ताव पर मौजूदा सरकार गिरने नहीं जा रही है। यों तो हमारे पास शक्ति होती तो हम वैसे ही सरकार को बदल दिये होते और आज भी बदल सकते थे। सरकार और राज्य में, सरकार और जनता में हमेशा अन्तर हुआ करता है। सरकार आती और जाती रहती है और लड़ाई के दिनों में सरकार अक्सर बदलती है लेकिन राज्य का और देश की जनता का कार्य नहीं रुका करता है। मैं चाहूंगा कि आज जो सरकार है उसके बदलने के लिये कांग्रेस वालों को आगे बढ़ना चाहिये। मैं चाहूंगा कि अगर सचमुच देश की सुरक्षा के प्रति देश के और प्रदेश के शासकों में गम्भीरता है तो अपनी पार्टी की इस फूट को बन्द करें। माननीय गोविन्द सहाय जी की स्पीच का मैं बड़े गौर से सुना करता हूं और आज भी मैंने सुनी। आज मुझे उससे तकलीफ हुई। उनकी पार्टी की फूट सिद्धान्तहीन है और गुटबाजी है ऐसी गुटबाजी से न देश का हौसला बढ़ता है, न देश का नैतिक बल ही बढ़ता है और न जनवाद की प्रगति ही होती है। इसलिये गुटबाजी खत्म करके यह पार्टी सरकार को इस रूप में गठित करे जिससे प्रदेश की जनता को विश्वास प्राप्त हो सके और तब ही देश की सुरक्षा भलीभांति हो सकती है।

मान्यवर, एक माने में देखा जाय तो इस प्रदेश में किसी पार्टी की सरकार नहीं रह गई है बल्कि यह सरकार एक गुट विशेष की है। यह सरकार नौकरशाही के हाथ में आज बन्दी बन चुकी है और हर तरह से नौकरशाही शासन के यंत्र के एक एक पुर्जे पर हावी है। मंत्रियों को फुर्सत नहीं है कुछ देखने की। इसमें कुछ अपवाद हो सकते हैं। इनको फुर्सत नहीं है कि शासन के सुधार की ओर ध्यान दें। उनके बंगले का समय तो व्यर्थ जाता है और दफ्तर में भी जहां कि काम करना चाहिये इनका ७५ फीसदी समय गुटबाजी में, दरबारदारी में और चाटुकारिता में बीतता है। ऐसी सूरत में देश की सुरक्षा नहीं हो सकती है।

आज स्थिति यह है कि किसी शहर में रोडवेज के कर्मचारी को पुलिस का सिपाही पीटता है अकारण पूरे रीजन में हड़ताल होती है लेकिन पुलिस मंत्री के कान पर जूं नहीं रेंगती और वे कोई कार्यवाही करना शान के खिलाफ समझते हैं। एक महिला को पुलिस द्वारा बेइज्जत किया जाता है उस पर कई मुहल्लों में हड़ताल होती है, विरोध होता है लेकिन पुलिस मंत्री और अधिकारियों के कान पर जूं नहीं रेंगती। इसी लखनऊ में सरकार की नाक के नीचे नरही में इतनी बड़ी दुर्घटना हो गई जिसका अखबारों में प्रकाशन हुआ और लोग गृह मंत्री से मिले विरोधी लोगों ने तीव्र विरोध किया लेकिन उन सम्बन्धित पुलिस वालों का बाल बांका नहीं हो सका। पुलिस मंत्री तय कर चुके हैं चाहे कुछ भी हो एक-एक पुलिस के कुकर्म को छिपायेंगे। मैं मांग करता हूं इस इमर्जेंसी पीरियड में कम से कम गृह मंत्री जी को छुट्टी दे दें, बेइज्जत करके नहीं, बाइज्जत रिटायर कर दें, पेंशन दे दें। हम समर्थन करेंगे। लेकिन ऐसे आदमी जो किसी की भावनाओं का आदर करना नहीं जानते इनको न रख कर कम से कम इस वक्त सरकार को बदनामी से बचावें। आज अधिकारियों में कितनी इमर्जेंसी का सेंस पैदा हो गया है इसका प्रमाण यह किताब है जो सूचना विभाग से छपी है। इसका नाम "आज का चीन" है। आज जब इनफिल्ट्रेटर्स कश्मीर में घुसे, हजार, दो हजार नहीं, दस हजार की संख्या में घुस गये हैं, आज भारत और पाकिस्तान में लड़ाई हो रही है, इस वक्त हम उम्मीद करते थे कि हम को पाकिस्तान के सम्बन्ध में आंकड़े और दूसरे विवरण दिये जायंगे, उसके बजाय "आज का चीन" बांटा जा रहा है, बजाय इसके आज का पाकिस्तान मिलता। यह सूचना विभाग की गम्भीरता के अहसास का परिचय है जो आज की इमर्जेंसी में दिखायी पड़ रहा है। हमारे साथी ठीक कह रहे हैं कि तीन वर्ष बाद, अन्तर्राष्ट्रीय दबाव में पड़कर, मध्यस्थता के दबाव से जब हमारी लड़ाई खत्म हो जायगी, जब हमारे और पाकिस्तान के सम्बन्ध नार्मल हो जायंगे तब हमको "आज का पाकिस्तान" मिलेगा। अगर जनतंत्र का अर्थ यह है कि दो-दो रुपये पर वोट बिकता हो स्विट्जरलैंड के एक-एक बेंच पर अफसर बिकता हो, एक ही विभाग का एक कर्मचारी दूसरे कर्मचारी का बिना घूस लिये काम न करता हो, जबकि हमारा राष्ट्रीय चरित्र इतना गिर गया हो जितना कि अंग्रेजों की दो सौ वर्ष की गुलामी और हुकूमत में भी न गिरा हो, जबकि पार्टियां और उनके नेता पूंजीपतियों और पूंजीपतियों को गुटों के हाथ में बिकते चले जा रहे हों, जबकि शासक पार्टी लाखों बोगस मेम्बर्स पूंजीपतियों से पैसा लेकर बना रही हो, जब समाचार पत्र भी पूंजीपति घरानों के हाथ में चले गये हों और स्वतंत्र पत्रकारिता अभिशाप बन गई हो, तो आइये ऐसे कांग्रेसी बुर्जुआ जनतंत्र को जमींदोज कर दें।

अगर वर्तमान योजना का मतलब यह है कि राष्ट्र की बढ़ती हुई आय का ७० फी सदी कुछ मुट्ठी भर परिवारों के हाथ में सिकुड़ता चला जा रहा हो, जबकि २० परिवारों ने देश की सम्पत्ति का एक तिहाई बटोर कर अपने पास रख लिया हो, लखपती करोड़पती, करोड़पती, अरबपती, अरबपती खरबपती बनता चला आ रहा हो, हमारे देश में मानोपली कैपिटल बढ़ता चला आ रहा हो, जब महंगाई और दामों पर नियंत्रण न हो रहा हो, जब बेकारी और बेरोजगारी का बढ़ना रुकता न हो। गरीब और अमीर के बीच की खाई बढ़ती जा रही हो, साधारण जनता के लिये हर नया दिन एक नई मुसीबत लाने वाला साबित होता जा रहा हो, तो कहूंगा तोड़ दीजिये योजना आयोग को फाड़ फेंकिये उसकी रिपोर्टों को, बन्द कीजिये इस पूंजीवादी, विकास योजना को। मेरी समझ में इसके सिवा और कोई रास्ता नहीं है। पहले का रास्ता १८ साल का अनुभव

[श्री मारकण्डेराय]

से गलत सिद्ध हो चुका है। इसलिये हमें उस पर गम्भीरता से विचार कर नये विकास के समाजवादी पथ पर मजबूती से बढ़ना चाहिये। यदि देशभक्ति का अर्थ यह है कि चोरबाजारी और जखोरेबाजी करने वाले लोग मनमानी खुली लूट करते हों और उनके खिलाफ हरगोविन्दसिंह का डंडा न चलता हो, जनता भूखों या अर्द्ध भूखों मरने के लिये मजबूर हो, विदेशी संकट काल के समय में भी, चाहे वह चीन का हो या पाकिस्तान का, यह व्यापारी मुनाफा लूटने से कतई बाज न आयें, दूसरी ओर जब भूखी जनता की, त्रस्त जनता की मांगों को लेकर लड़ने और देश के कोने-कोने में अपनी बात कहने पर जेलों में डी० आई० आर० के अन्तर्गत अनिश्चित काल के लिये बन्द कर दिया गया हो या उन पर विभिन्न दफाओं के अन्तर्गत मुकदमे चलाये जा रहे हों। तो सेवकों और देशभक्तों पर देशभक्ति की परिभाषा हमें बदलना पड़ेगी। हमें देशभक्ति की एक नई परिभाषा ढूंढनी पड़ेगी। देश के नाम पर, देशहित के नाम पर, ऐसे गलत और शोषण के कामों को करने की कतई छूट नहीं दी जा सकती।

माननीय सुचेता जी ने जो व्यापारियों से आज प्रातः अपील की, मैं उसके बारे में फिर से कहना चाहता हूं कि वह व्यापारी हृदयहीन होते हैं, जो पत्थर के देवता हैं वह अपीलों से नहीं मानते हैं। जो चीन के आक्रमण के समय में अपनी देशद्रोही कार्यवाहियों से तनिक भी बाज नहीं आए, यह इस पाकिस्तानी आक्रमण की पृष्ठभूमि में रास्ते पर आ जायेंगे वह आपके निवेदन पर ध्यान देंगे, इसकी आपको बिलकुल आशा नहीं करनी चाहिये। उनसे उम्मीद करना बिलकुल गलत है, यह बिलकुल मृगतृष्णा है। उनसे किसी सहयोग की आशा कतई मुख्यमंत्री महोदया को नहीं करनी चाहिये।

यदि कांग्रेस के प्रशासन में संवैधानिक अधिकारों का मतलब यही है कि रोटी के बदले गोली दी जाय, जनता अपनी उचित मांग को लेकर लड़े तो उस पर आंसू गैस छोड़ी जाए, और अंधाधुंध गोली बरसायी जाए, जो शान्तिपूर्ण प्रदर्शन करते हैं उनको गोली से कुचल दिया जाय। जो पोलिटिकल नेता और कार्यकर्त्ता हैं उनके पीछे गुप्त पुलिस घूमे, उनके भाषण को नोट किया जाए और बात बात में दफा १४४ और करफ्यू का प्रयोग किया जाए और डी० आई० आर० का मनमाना प्रयोग राजनैतिक विपक्षियों को कुचलने के लिये किया जाय, डी० आई० आर० की सत्तारूढ़ पार्टी द्वारा मनमाना प्रयोग किये जाने पर जयप्रकाश नारायण जैसे शान्तिप्रिय नेता को भी कहने के लिये मजबूर होना पड़ा है कि डी० आई० आर० ने एक साधारण कानून का स्थान ले लिया है, इस पर सरकार को विचार करना चाहिये। तो कहना होगा कि वर्तमान सरकार के कदम तेजी से फासिज्म की ओर बढ़ रहे हैं, और समय रहते इसे सचेत, संगठित होकर रोका नहीं जा सका तो भारत में भी पूरी तरह फासिज्म आये बिना रुक नहीं सकता।

मौजूदा केन्द्रीय सरकार और यूपी की सरकार की नीतियों की असफलता कहानी बहुत लम्बी है, जिसकी चर्चा यहां कई बार मैं कर चुका हूं। आज फिर २-३ मिनट में इसकी चर्चा करना चाहता हूं। आप कृषि की नीति को देखें, यदि पैदावार अधिक नहीं होगी जितनी अपने देश और प्रदेश के लिये आवश्यक है, तो हम सुरक्षा के काम में भी असफल होंगे, जो हमारी नागरिक सुरक्षा का कार्य है, उसमें भी हम पीछे हटेंगे। जिस भोजन को हमें जरूरत है वह हम नहीं पाएंगे और बिना भोजन के हम एक कदम भी आगे नहीं बढ़ सकते हैं। यदि कृषि नीति असफल होगी तो हमारे नेता जो, जो मंजर इकट्ठा किये रहते हैं अनाज का, वह क्या कर सकते हैं, वह तो लुंज-पुंज हैं।

अतः क्रान्तिकारी भूमि सुधार होना चाहिये। जमीन का पुनः बन्दोबस्त होना चाहिये। करोड़ों एकड़ बेकार पड़ी जमीन भूमिहीनों में बांटी जानी चाहिये। लाखों एकड़ जमीन जंगल के नाम पर घेर ली गई है, उसे खेत मजदूरों और हरिजनों में बांटी जानी चाहिये। चकबन्दी जल्द से संशोधन होना चाहिए आज गोबर का कंडा बना कर जलाने के लिये किसान मजबूर है ईंधन का कोई दूसरा विकल्प उनके पास नहीं है। अतः १० निर्धी-कारखाने की क्षमता का गोबर साल

में जल जाता है। यह दयनीय स्थिति है। इस स्थिति में मैं यही कहूंगा कि इनकी कृषि नीति और अर्थ नीति दोनों असफल हो चुकी है, उन पर अब सरेनौ गौर करके आमूल परिवर्तन करने की जरूरत है तभी हम भली भाँति आज की स्थिति में लोगों से अपने कर्तव्य का पालन करा सकेंगे। औद्योगिक नीति की असफलता का तो कहना ही क्या है। १८ साल के अन्दर आज यू० पी० में प्राइवेट सेक्टर का डामिनेशन यही नहीं कि आगे बढ़ा है, रुका नहीं है, वह बढ़ता ही गया है। यहीं बगल में कानपुर है। जहां दो-दो महीने से साढ़े ६ हजार आदमी दो मिलों में बेकार हैं, २५ हजार व्यक्तियों के लिये दाल रोटी के लाले पड़े हुये हैं, आज वह भूखे, अधभूखे मरने पर मजबूर हैं। इतनी गरीबी होते हुये भी यह सरकार दो-दो मिलों में मामले को टैकिल नहीं कर पा रही है उन पर हस्तक्षेप करके कंट्रोल नहीं कर पा रही है, इससे बढ़कर असफलता की कहानी क्या कहूं। ३१ करोड़ एकड़ देश की भूमि में संस्कार पांचवां भाग से भी कम केवल ६ करोड़ एकड़ भूमि में सिंचाई का प्रबन्ध कर पायी है। बोनस आर्डिनेंस को लीजिये। प्रदेश की कितनी फैक्टरियों पर वह लागू है, यह किसको पता है? जिससे मजदूर लोगों को राहत मिले। इसीलिये मैं कहता हूं कि नीतियों की असफलता की कहानी बहुत लम्बी है। सरकारी, अर्द्ध सरकारी कर्मचारियों की स्थिति क्या है। उनके अन्दर असन्तोष फैल रहा है। वेतन अभिनवीकरण समिति की रिपोर्ट से वह असन्तोष कम नहीं हुआ, बढ़ा है। जो स्थिति थी उसमें अन्तर बिलकुल नहीं आया है यथावत् है। केन्द्रीय सरकार और राज्य सरकार के कर्मचारियों के बीच में जो अन्तर है उससे तीव्र असन्तोष है। वह यहां जो व्यक्त किया गया है उससे अधिक बाहर किया गया है लेकिन उसमें परिवर्तन नहीं हो पाया है। निम्न वेतन भोगी कर्मचारियों, मध्यम वेतन भोगी कर्मचारियों और उच्चवेतन कर्मचारियों में जो अन्तर आज वह कांग्रेसी राज्य में बढ़ता जा रहा है। समान कार्य के लिये समान वेतन के सिद्धान्त कोई अवहेलना आज भी यथावत् है (लाजवती होने पर) मान्यवर, मुझे आज बड़े समय चाहिये क्योंकि मैं अपनी पार्टी की तरफ से बोल रहा हूं।

श्री उपाध्यक्ष—

नहीं, केवल १५ मिनट का समय है। वह कल निश्चित हो चुका है।

श्री झारखण्डेराय—

थोड़ा समय दे दीजिये।

श्री उपाध्यक्ष—

ठीक है, दो मिनट और बोल लीजिये।

श्री झारखण्डेराय—

धनी और गरीब का अन्तर बढ़ता जा रहा है। देहातों में भी धनी और गरीब आदमियों का अन्तर बहुत बढ़ गया है। आज भी देहातों में १ करोड़ लोगों की प्रति व्यक्ति प्रतिदिन औसत आय २७ पैसे है और केवल १३ फीसदी लोग ऐसे हैं जिनके पास ६० फीसदी पूंजी हो गयी है। इससे तो अच्छा है कि समाजवाद की बात ये कांग्रेस वाले न कहें और सरकारी पार्टी के लोग उस नाम को ही छोड़ दें तो अच्छा है। समाजवाद का मतलब होता है उसके लिये एक उदाहरण मैं देना चाहता हूं। अनेक उदाहरण तो मैं कई बार दे चुका हूं। पड़ोसी देश बर्मा है जो गवर्नमेंट आफ इंडिया ऐक्ट ३५ के पहले तक हमारे देश का एक प्रदेश रह चुका है। किसी समाजवाद के लिये उसकी चर्चा करना मैं जरूरी समझता हूं। रिपोर्ट लम्बी है किन्तु कुछ थोड़ा अंश मैं पढ़ना चाहता हूं। विदेशी पूंजी के प्रभुत्व का खत्म किया जा रहा है। अभी आखिरी विदेशी कम्पनी का राष्ट्रीयकरण किया गया है जिसकी तीन चौथाई पूंजी अंग्रेजों की थी। सारा आयात निर्यात व्यापार सरकार ने अपने हाथ ले लिया है। देश के अन्दर का भी अधिकांश व्यापार सरकार के साथ में है। भारी उद्योग, कृषि पैदावार का वितरण और यातायात सरकार के हाथ में है। अर्थ व्यवस्था की मूल बातों पर राज्य का अधिकार है। "मान्यवर, तेल की कम्पनी का राष्ट्रीयकरण किया जा चुका है। खानों के भी राष्ट्रीयकरण का आदेश दिया गया

[श्री सारखण्डेराय]

है। १२९ मिशनरी स्कूलों का राष्ट्रीयकरण किया गया है। हर प्रकार के व्यापार का राष्ट्रीयकरण किया जा चुका है। हिन्द एशिया स्थित सभी विदेशी वाणिज्य प्रतिष्ठानों का प्रबन्ध सरकार ने अपने हाथ में ले लिया है। इससे ब्रिटेन, अमेरिका, फ्रांस, बेल्जियम और स्विटजरलैण्ड प्रभावित हुये हैं। हिन्दोस्तान में विदेशी पूंजी नियोजन का अन्त हो गया है। पर यहां पर कोई ध्यान नहीं है। जनता को दिनोंदिन बढ़ते टैक्स से बचाना है और टैक्स से पैदा हुई महंगाई से भी जनता को बचाना जरूरी है। टैक्स का कोई विकल्प हमको सोचना होगा और वह सिवाय राष्ट्रीयकरण करने के और चारा नहीं है क्योंकि बड़ी इंडस्ट्री बड़े विदेशी और देशी कैपिटलिस्टों के हाथ में है। इस ओर प्रदेश या देश की सरकार ने कोई ध्यान नहीं दिया है। श्री हुमायूं कबीर ने जिस समय तेल के लिये सारे देश में हाहाकार मची हुई थी यह कहा कि तेल कम्पनियों का राष्ट्रीयकरण नहीं किया जायगा। अर्थ सम्बन्धित मंत्री ने संसद में स्पष्ट कहा कि विदेशी व्यापार का राष्ट्रीयकरण नहीं किया जायगा। कांग्रेसी ५६ एम० पी० के प्रोटेस्ट करने के बावजूद ८ सूबा कांग्रेस कमेटीज के प्रस्ताव बावजूद, लोक सभा और राज्य सभा में व्यक्त भावनाओं के बावजूद, लखनऊ, वाराणसी और गोरखपुर के कांग्रेस वर्कर्स सम्मेलनों के प्रस्तावों के बावजूद राष्ट्रीयकरण की बात आज तक कांग्रेस सरकार ने स्वीकार नहीं किया है और न सूबे की सरकार ने इसके लिये सिफारिश की है। मैं उन मुल्कों की बात कहता हूं जो हमारी तरह पूंजीवादी व्यवस्था वाले हैं। वे मुल्क राष्ट्रीयकरण और समाजवाद की तरफ तेजी से बढ़ रहे हैं। स्माल स्केल इंडस्ट्री के बारे में पूरी अवहेलना हमारे प्रदेश में की जा रही है। इसकी शिकायतें प्रधानमंत्री शास्त्री को दी गई डेवर कमेटी रिपोर्ट में की गयी है। ६ महीने बीत गये हैं लेकिन उस दिशा में अभी तक कोई सुधार नहीं हो सका है। अमीर और गरीबों के प्रति सरकारी बरताव में अन्तर और भेदभाव की नीति आप देखें। आज केवल कानपुर में इस सरकार का ५॥ करोड़ रुपया पूंजीपतियों पर बाकी है लेकिन सरकार कुछ करती नहीं है परन्तु टैक्स वसूली के लिये गरीबों के बरतन भी उठा लिये जाते हैं। प्रदेश कर्ज में डूबता जा रहा है। प्रदेश सरकार ने उद्योगों के लिये जो रुपया लोगों को दिया है उसका ४० फी सदी उन्होंने दुरुपयोग किया है। उसका उपयोग उस काम के लिए नहीं हुआ, जिसके लिये वह धन दिया गया था।

पुलिस प्रशासन के विषय में कुछ कहना बेकार है। उसके बारे में हम बहुत कह चुके हैं। हम भी कहेंगे कि जब तक माननीय हरगोविन्दसिंह जी गृह मंत्री पद पर हैं न प्रदेश की सुरक्षा हो सकती है और न पाकिस्तान के हमले के मुकाबले में कार्यवाही जो करनी है वह करना सम्भव है। इसलिये हम चाहते हैं कि माननीय हरगोविन्दसिंह जी को मुक्ति मिलनी चाहिये और प्रदेश के लिये वह चीज की जानी चाहिये जो हमारी प्रदेश की सुरक्षा और देश की सुरक्षा के लिये जरूरी है। अंग्रेजों के जमाने के सड़े गले और सर्वथा अनुपयुक्त नियमों और कानूनों को—फैमीन कोड और टेस्ट वर्क नियम जैसे—जारी रक्खा गया। विभागों में सहयोग और समन्वय की कमी पूर्ववत् है।

*श्री राममूर्ति 'अंचल' (जिला शाहजहांपुर)—

उपाध्यक्ष महोदय, जो माधव प्रसाद जी त्रिपाठी का प्रस्ताव विचार के लिये यहां पर आया हुआ है उस पर जितने भाषण हुये विरोधी दल के उधर से हुये उनमें मुझे ऐसा महसूस हुआ कि उनकी आत्मा नहीं बोल रही है। उनकी आत्मा सचेत नहीं है। उनका इशारा इस ओर नहीं है कि अविश्वास का प्रस्ताव पास हो। वह खानापुरी कर रहे हैं। मैं यह चाहता हूं कि यह अविश्वास का प्रस्ताव वे सस्नेह वापस ले लें। मैं एक कविता निवेदन करना चाहता हूं जो देश के प्रति, मुख्य मंत्री सुचेता जी के लिये, कांग्रेस दल के लिये और माधवप्रसाद जी, जिन्होंने यह प्रस्ताव पेश किया है, के सम्बन्ध में है

---

*वक्ता ने भाषण का पुनर्वीक्षण नहीं किया।

सारा भारत जब सोता था जड़ता के घोर अंधेरे में,
चेतना जगाई थी किस ने मुर्दा मिट्टी के ढेरे में।
वह कांग्रेस ही है जिस ने युग का इतिहास बदल डाला,
भारत में नवयुग लाकर कि धरती आकाश बदल डाला।
वह कांग्रेस ही है जिस ने युग के अभिशाप बदल डाले,
विश्वास बदल डाले युग के युग के संताप बदल डाले॥

* * * *

चेतना की मर्यादा का है प्रश्न नहीं, मर्यादा भारत की नारी की
है लेन पत्निनी जिस पर जब हो ऐसी विपदा की।

* * * *

विजयी हो सेना भारत की ओ वीर जवानों आज जओ,
फिर शोणित अर्पित करना है मजदूर किसानों आ जाओ।
रणचण्डी का जो कण कण विरोध वह कायर है, अन्यायी है,
हम विजय कराय भारत मां की नवयुग लेना अंगड़ाई है।

* * * *

गोमती नदी की लहरों में फिर नूतन हाहा कार उठा,
चेतना तरंगित है युग की जन मन मानस में ज्वार उठा।
भग्नावशेष ललकार उठे चौंकी फिर सूनी दीवारें,
बोलीं मंदिर की दीवारें बोलीं मस्जिद की मीनारें।
जिस माता की खातिर पंत ने हंस कर थी लाठी खायी,
जिस की रक्षा हित नेहरू ने अंगार मयी सी अंगड़ाई।
अब भारत मां के लाल बहादुर के शौर्य की आज समीक्षा है,
ऐसे में क्या शोभा देता लेना सीता की अग्नि परीक्षा है।

* * * *

प्रण करो आज जर्जर कायर बेबस विश्वास बदल देंगे,
आपसी फूट पर आधारित कल्पित इतिहास बदल देंगे।

* * * *

नगराज चुनौती देता है धीरज का बांध नहीं टूटे,
चौहान दुहाई देता शब्द बेधा बाण नहीं चूके।
बिस्मिल, अश्फाक पुकार रहे जूझे जो खिली जवानी में,
बेटियां भगत की गरज रहीं अब भी झेलम के पानी में
पंजाब केसरी देख रहा अपना झंडा मत झुक जाये,
सरिता स्वराज्य की बहती है इसका प्रवाह मत रुक जाये।
प्रण करो आज हो विजय देश की लाहौरी हाहाकारों में,
झंडा न कभी झुकने देंगे ताण्डव होगा तलवारों में।

* * * *

सौगन्ध तुम्हें दे रहा हिमालय है गंगा के पानी की,
आजाद भगत से वीरों की ज्वाला सी खिली जवानी की।

* * * *

जिन्दाबाद चौधरी जनरल जिन्दा सैनिक सभी हमारे
नस-नस में मचला प्रलयकाल जल उठे लहू में अंगारे।
जल जल कर होते राख महल जब बरसाये अंगारे जाते हैं।
मच कर रहता है हुड़दंग जब चीर उतारे जाते हैं।।
"अभ्यूद" कौरवा के ऊपर गांडीव उठाना ही होगा।
सीमा की बलिवेदी पर "भुट्टो" का शीश चढ़ाना ही होगा।
जागो तुम राणा सांगा अब, जागो वीरवर बन्दा बैरागी।
तुम जागो वीर शिवाजी अब, झेलम के पानी में लग जाय आगी।।

[श्री राममूर्ति 'अंचल']

जागो चित्तौड़ के खंडहरों, जागे चेतक की अमर टाप ।
जागे मेवाड़ की वीर भूमि—जागे वीरवर महाराणा प्रताप ।।

पानीपत फिर से जाग उठे अरु जाग उठे हल्दी घाटी ।
केसरिया बाना जाग उठे, जाग उठे, भारत की माटी माटी ।।

महाराणा सांगा की सौगंध तुम्हें, ओ वीर जवानों आ जाओ ।
शिवा के भाले की सौगंध तुम्हें, सीता की लाज बचाने आ जाओ ।।

जाग उठे लखनऊ "लक्ष्मण का" जो शेषनाग अवतारी है ।
लो अंगड़ाई हिल उठे पाक, आ गयी प्रलय की बारी है ।।

कितने ही लक्ष्मण बैठे हैं, सुनते क्यों करुण पुकारों को ।
दानवता का वध करो तुरत, पूर्ण कर दो सीता की चाहों को ।।

जागो लखनऊ निवासो तुम, गौरवमय कृष्ण समान बनो ।
द्रुपदा का चीर नहीं उतरे, तुम वीर वीर बलवान बनो ।।

देवी की लज्जा रखना ही, सुन्दर आदर्श तुम्हारा है ।
दे रहा तुम्हें सौगंध आज तक, भारत अखंड तुम्हारा है ।।

आखरी बात कहना चाहता हूं, माधव प्रसाद त्रिपाठी जी से —

द्वापर के "माधव" ने तो द्रुपदा की लाज बचाई है ।
कलि के "माधव" ने जाने क्यों देशपर तेग उठाई है ।।

श्री "माधव" ले लें वापिस अपना प्रस्ताव अविश्वास वाला ।
हम उनको पहनायेंगे पाकिस्तानी शरि मुंडों की माला ।।

दावानल की लपटें पीकर फिर से बनवारा बन जाओ ।
संकट का गोवर्धन धर कर फिर से गिरिधारी बन जाओ ।।

फिर "माधव" का यह पांचजन्य, भैरव स्वर में ललकार उठे ।
भारत के बच्चे बच्चे के कर में महाराणा की तलवार उठे ।।

सांसों में बांधों महाकाश मारुतसुत नाम तुम्हारा है ।
नाचतो मही को थिर करना योगेश्वर काम तुम्हारा है ।।

भारत माता के विजय केतु हो तुम आज दिखा देंगे...

अब मैं अपनी मुख्यमंत्री जी से कह रहा हूं—

तुम भारतमाता की हो विजय केतु यह आज अभी दिखला देंगे ।
पद्मिनी पुनः ललकार उठे वह जौहर ज्योति जगा देंगे ।।

अन्त में मैं फिर भी भाइयों से निवेदन करूंगा कि वह अपने प्रस्ताव को वापस ले लें ।

*श्री भानुप्रतापसिंह (जिला बस्ती)—

उपाध्यक्ष महोदय, पिछले साढ़े तीन वर्षों में इस सदन में मुझे कई विषयों पर बोलने का अवसर मिला है, परन्तु आज इस अविश्वास के प्रस्ताव पर बोलने के पूर्व जितनी दुविधा में हूं, जितना संकोच है उतना पहले कभी नहीं था। इसका कारण यह नहीं है कि वर्तमान कांग्रेस सरकार में मुझे विश्वास नहीं हो गया है। ऐसी बात बिलकुल नहीं है। आप जानते हैं कि हमारी पार्टी का निर्माण ही कांग्रेस दल के संपूर्ण विरोध पर आधारित है। संपूर्ण का प्रयोग मैं इसलिए करता हूं कि जो और विरोधी पार्टियां हैं वे सरकार की नीतियों का विरोध नहीं करती,

*वक्ता ने भाषण का पुनर्वीक्षण नहीं किया ।

उसके कार्यक्रम का विरोध करती हैं, जब कि हमारी पार्टी सरकार की नीतियों का और उसके कार्यक्रम दोनों का विरोध करती है। यह सारी बाते होते हुए भी, आज जब कि हमारा देश एक ऐसे शत्रु से जूझ रहा है जो स्वयं ही बहुत जालसाज है, जिसको पिछले १० वर्षों के अन्दर अमेरिका से २ हजार करोड़ रुपये के अस्त्र शस्त्र मुफ्त मिले हैं और जिसके पीछे चीन का भी समर्थन है, आज जब कि हमारे हवाबाज अपनी जान की बाजी लगा रहे हैं, तो मैं समझता हूं कि ऐसे समय में हमें अपने छोटे छोटे झगड़ों को लेकर बैठना, उचित बात नहीं है। मुझे यह कहने में कोई संकोच नहीं है कि यह प्रस्ताव असामयिक है। परन्तु मैं यह भी कहना चाहता हूं कि इस अविश्वास के प्रस्ताव के आने की जिम्मेवारी काफी हद तक इस सरकार पर है और उसका कारण मैं यह बतलाना चाहता हूं कि जब अधिकतम सद्भावना और अच्छे स बंधों की आवश्यकता थी, उस समय सरकार की ओर से इस संबंध में कोई कदम नहीं उठाया गया। लालबहादुर शास्त्री जी ने विरोधी पक्ष के नेताओं को बुलाकर उनका विश्वास प्राप्त करने का प्रयत्न किया, परन्तु हमारी सरकार की तरफ से इस प्रकार का कोई कदम नहीं उठाया गया जिसका मुझे खेद है। संभव है अगर इस ओर कोई कदम उठाया गया होता तो शायद यह अवसर न आता।

श्रीमन्, मैं अपने उधर के बैठने वाले मित्रों से यह कहना चाहता हूं कि आज इस संकट की घड़ी में आप ऐसा व्यवहार न करें जिसे आपका अभिमान दिखलायी दे। पिछले १५ वर्षों की आपकी सफलताएं ऐसी नहीं हैं कि जिन पर आप अभिमान कर सकें। जिस उत्तर प्रदेश को हम कभी प्रगतिशील उत्तर प्रदेश कहते थे, वह आज सबसे पिछड़ा हुआ है और सारे प्रदेशों के मुकाबले में। श्रीमन्, मैं ब्योरे में नहीं जाना चहता, सरकार द्वारा प्रकाशित पुस्तिका है, इसमें जो लिखा है मैं उसी को सामने रखना चाहता हूं। इसमें है—१५ वर्षों के योजनाबद्ध कार्यक्रम में औसत आमदनी में कोई वृद्धि नहीं हुई है। शिक्षा के क्षेत्र में भी हमारा प्रदेश पिछड़ा हुआ है। जिस गति से हम इस ओर बढ़ रहे हैं, सवा सौ वर्ष हमें लोगों को शिक्षित करने में लग जायेंगे। मैं ब्योरा नहीं देना चाहता क्योंकि मैं समझता हूं कि मुख्य मंत्री स्वयं इसको मानती होंगी अपने मन में कि उनको बहुत बड़ी सफलतायें नहीं मिली हैं लेकिन आज केवल इसकी आलोचना करने से काम बनने वाला नहीं। मैं समझता हूं कि इसको वें किस प्रकार दूर करने की कोशिश करेंगी। आज आवश्यकता है हम और वे मिलकर ऐसे प्रयत्न करें। हमको अपने युद्ध के संचालन में अधिकाधिक सफलता मिली। युद्ध संचालन का कार्य तो भारत सरकार का है और हमारे सैनिकों का है और वे इस काम को अच्छे ढंग से कर रहे हैं। मुझे उस विषय में कुछ नहीं कहना है। उत्तर प्रदेश सरकार तो केवल इतना ही कर सकती है कि वह जनता के मनोबल को बनाये रक्खे। उत्पादन को बढ़ाने में प्रयत्नशील रहे, शांति और व्यवस्था बनाए रक्खे। श्रीमन्, यह सब कैसे सम्भव है। केवल कह देने मात्र से जनता का मनोबल ऊंचा नहीं उठता। न हमारे भाषण देने से जनता का मनोबल बढ़ता है और न उनके भाषण देने से जनता का मनोबल घटता है। मनोबल बढ़ने और घटने की बात इस पर निर्भर है कि हमारी सरकार और हम जनता से कैसे व्यवहार करते हैं। सबसे पहली आवश्यकता आज मनोबल बढ़ाने की है वह यह कि नेतृत्व में एकता उत्पन्न हो। दूसरी बड़ी जो आवश्यकता है मनोबल बढ़ाने के लिए वह यह है कि जनता यह महसूस करे कि सरकार से उसे न्याय मिल रहा है। सहानुभूति मिल रही है।

श्रीमन्, किस प्रकार से नेतृत्व में एकता उत्पन्न हो जब सैद्धांतिक मतभेद इतना है। यह प्रश्न उठ सकता है। लेकिन मैं यह कहना चाहता हूं कि आज राज्य का मुख्य कर्त्तव्य देश सुरक्षा में जितने सैद्धांतिक मतभेद हैं उनके विषय में हमें संधि विराम (ट्रस) करना पड़ेगा चाहे वह किसी भी पार्टी के हों। जो हम १८ वर्षों की सामान्य स्थिति में नहीं कर सके उसको संकट काल की स्थिति में हम करने का प्रयत्न करते हैं तो हम अपने देश के साथ गद्दारी करते हैं। इसलिए मैं कहता हूं कि आज जो सैद्धांतिक बातों को पहले से न करके उसको इसी वक्त करना चाहते हैं उसका विरोध होगा उससे एकता नहीं आ सकती। तो मैं चहता हूं कि इस प्रदेश में संधि

[श्री भानुप्रता सिंह]

विराम स्थापित हो और मैं समझता हूं युद्ध काल में यह संभव है क्योंकि मैं समझता हूं कि राज्य का एकमात्र उद्देश्य है वह सरकार करे। सरकार की ओर से यह आश्वासन होना चाहिए कि कोई भी कंट्रोवर्शयल बात वह आज तक करने में समर्थ नहीं हुई वह इस काल में करने का प्रयत्न नहीं करेगी कि सामने विरोधी पक्ष चुपचाप बैठा हुआ है। श्रीमन्, न्याय के विषय में मैं कहना चाहता हूं कि न्याय केवल होना काफी नहीं। न्याय का प्रदर्शन भी होना चाहिए। आज जनता में क्षोभ है। जनता के चुने हुए प्रतिनिधियों में क्षोभ है कि सरकार की ओर से कभी-कभी न्याय नहीं होता है। न्याय की बात करने में गोलियों की बौछार होती है। जब जांच के लिए बात कही जाती है तो अवहेलना की जाती है। जांच से कुछ बनने बिगड़ने वाला नहीं। युद्ध काल में इतना घोषित कर दे सरकार कि जब गोली चलने की कोशिश होगी तो न्याय मिलेगा तभी जनता समझेगी कि न्याय होता है। इसे सहानुभूति की आवश्यकता है। जनता सहानुभूति की भूखी है।

श्रीमन्, जैसा मैंने सरकार के लिए कहा, जो सरकार १८ वर्षों तक नहीं कर पायी वह कोई सैद्धांतिक कार्यक्रम को इस समय चालू करने का प्रयत्न न करे। मैं इधर के बैठने वालों से भी कहता हूं कि इस समय आप सरकार को जब तक कि वह सुरक्षा के कार्यों का संचालन ठीक तरह से करती है, आपसे परामर्श लेती है, आपके विश्वास के द्वारा सद्भावना प्राप्त करने की कोशिश करती रहती है तब तक उसको अपदस्थ करने का प्रयत्न न करें। श्रीमन् मैं समझता हूं कि आज पक्ष और विपक्ष का प्रश्न नहीं। श्रीमन्, अगर उस दल के लोग अपने आपको समझते हैं कि वे सत्तारूढ़ हैं तो मैं भी भारत के नागरिक की हैसियत से नहीं इस देश के नागरिक होने के नाते मैं भी अपने आप को सत्तारूढ़ समझता हूं। यदि इस समय कोई विपक्ष है तो वह पाकिस्तान है। हम इस समय अपने पक्ष और विपक्ष के झगड़े से दूर होकर बाहर के विपक्ष शत्रु का सामना करें इसीमें हमारा हित है। इसी में हमारी बुद्धिमानी है, इसी में हमारे देश का हित है और मैं सरकारी पक्ष से और विरोधी पक्ष से दोनों से अपील करता हूं कि वह अधिकतम सहयोग और सद्भावना के लिए एक दूसरे की तरफ हाथ बढ़ायें और यह भी मैं कहूंगा कि इस दिशा में पहलकदमी सरकार की तरफ से होनी चाहिए क्योंकि वह ज्येष्ठ हैं, उनकी जिम्मेदारियां हैं और मुझे ऐसा विश्वास है कि यदि उधर से पहलकदमी हुई होती तो यह अविश्वास का प्रस्ताव न आया होता और अब भी अगर स्थिति को बचाना है तो उनकी तरफ से पहलकदमी होनी चाहिए और इस भेदभाव को मिटाकर हमको इस समय पक्ष विपक्ष की बात भुला कर केवल शत्रु का मुकाबला करने के लिए तैयार हो जाना चाहिए। मैं ज्यादा कुछ नहीं कहना चाहता हूं। केवल एक बात की पुनः अपील करता हूं कि अब समय ऐसा आ गया है कि आप अपने सोचने के ढंग को बदलिए। जो ढर्रा आपके सोचने का रहा है उस पर चलते हुए न सरकार को सफलता मिल सकती है और न इधर बैठने वालों को। इसलिए आज आवश्यकता है कि आप अपने सोचने के ढंग को बदलिए।

*मुख्य मंत्री (श्रीमती सुचेता कृपालानी)—

उपाध्यक्ष महोदय, इस समय मुझे भाषण तो कुछ देना नहीं है, मगर भानुप्रताप जी ने जो बातें कहीं उस विषय में एक बात का मैं क्लैरिफिकेशन कर देना चाहती हूं। मैं चाहती थी दिल्ली जाने के पहले ही कि सब पार्टियों के लोगों को बुलाकर बातचीत करूं। आपको मालूम है कि मैं पहली तारीख तक यहां थी नहीं, पहली तारीख को यहां आयी और फिर यहां की परिस्थिति समझ कर पहली तारीख को लोगों को बुलाने की कोशिश की। लेकिन तब अपोजीशन पार्टीज के कुछ लीडर बाहर थे। उसी दिन मैं दिल्ली जा रही थी, ५–६ को वहां मीटिंग थी, मैंने समझा दिल्ली से आकर बुलाऊंगी और वहां की परिस्थिति से भी उस समय अवगत हो जाऊंगी। दिल्ली जब मैं ५ तारीख को गयी तो परिस्थिति दूसरी थी। उसके बाद और

---

*वक्ता ने भाषण का पुनर्वीक्षण नहीं किया।

परिस्थिति गंभीर हुई। इसलिए अब मैंने तय किया है कि परसों शाम पांच या सवा पांच बजे जब हम यहां से उठें उस समय मैं आपको बुलाऊंगी और उसके पहले सिविल डिफेंस आदि का जो प्रोग्राम बनाना है उसका नक्शा भी बन जायगा जिसको कि आपके सामने रखा जा सकेगा और फिर हम सक्रिय ढंग से उस पर बातचीत कर सकेंगे। यह बात कतई आप लोग अपने मन से हटा दीजिए कि मुझे कोई अभिमान का खयाल है या यह खयाल है कि कांग्रेस अकेले ही सब काम कर लेगी। जैसा आपने कहा इस समय हम सब एक पार्टी हैं क्योंकि इस समय दुश्मन का मुकाबला है। इस समय सब का साथ और सबका सहयोग मिले तभी जाकर हम इस संकट को पार कर सकेंगे। तो हमारे मन में कोई अभिमान नहीं है, और हम आपका सहयोग चाहते हैं।

अब रहा सवाल अविश्वास का, तो वह आप लोगों के हाथ में है, आप लोग जैसा चाहें वैसा कर सकते हैं। लेकिन हमारी तरफ से और हमारी पार्टी की तरफ से सारी पार्टियों को साथ लेकर इस संकट के समय में चलने का हमारा आग्रह है यही मैं कहना चाहती हूं।

श्री जगवीरसिंह (जिला बुलन्दशहर)—

उपाध्यक्ष महोदय, सर्वप्रथम मैं अपने उन नवजवानों को जो कि अपनी मातृभूमि की रक्षा के लिए....

श्रीमती सुचेता कृपालानी—

मैंने तो समझा कि जो मैंने कहा उसका मतलब ही यह है कि अब अविश्वास का प्रस्ताव रखने की कोई जरूरत नहीं है। मैं चाहूंगी कि आज इस संकट के समय में यह प्रस्ताव आप वापस ले लें।

श्री बलवानसिंह—

हम लोगों को आध घंटे का मौका आप दें ताकि अपोजीशन पार्टीज के लोग आपस में बैठकर बातचीत कर सकें।

श्री रामसुन्दर पांडेय—

हमारे विरोधी पक्ष के नेता माननीय माधव प्रसाद जी नहीं हैं और जब तक वह नहीं आते हैं तब तक ऐसे प्रस्ताव पर विचार करना मेरे लिए अनुचित होगा।

श्री उपाध्यक्ष—

अब तो ४५ मिनट रह गए हैं, अगर आप चाहें तो बड़ी खुशी की बात है, आप परामर्श कर लें...

श्री विश्वनाथप्रसाद (जिला वाराणसी)—

मैं यह प्रार्थना करूंगा कि तब तक इस सदन को स्थगित कर दिया जाय, ताकि पक्ष विपक्ष में रोष न होने पाए।

श्री जगन्नाथ राव (जिला जौनपुर)—

माधव बाबू दिल्ली गए हुए हैं। वह कल आ जायेंगे। तब तक आप सदन को स्थगित कर दें।

कुंवर श्रीपालसिंह (जिला जौनपुर)—

श्री माधवप्रसाद त्रिपाठी कल आ जायेंगे, तब यह तय हो जायगा। इसलिए इस समय सदन की बैठक स्थगित कर दी जाय। अब एक ही घंटा बाकी है। अतः अब आगे और इस पर बहस न की जाय। वे कल आ जायेंगे तब सब तय हो जायेगा।

श्री उपाध्यक्ष—

अब हम उठते हैं, कल ११ बजे फिर मिलेंगे।

(इसके बाद सदन ४ बजकर १५ मिनट पर अगले दिन के ११ बजे तक के लिये स्थगित हो गया।)

देवकीनन्दन मित्थल,
सचिव, विधान सभा,
उत्तर प्रदेश।

लखनऊ :
८ सितम्बर, १९६५।

विधान सभा

परिशिष्ट 'क'

[देखिये नियम ३९ (२) के अन्तर्गत तारांकित प्रश्न ४ और ५ का उत्तर पीछे पृष्ठ २२८ पर]

क्रम संख्या	विकास खंड का नाम		वर्ष १९६५–६६ में अब तक कितने सिंचाई के कूप के निर्माण हेतु कितनी सीमेन्ट व कितना धनराशि मांगी गयी			कितनी सीमेंट व कितनी धनराशि दी गई		वर्ष १९६५–६६ में कितने सिंचाई के कूप निर्मित हुये	वर्ष १९६५–६६ में कितने कूप सीमेंट के अभाव में अर्द्ध निर्मित पड़े हैं
			कूप संख्या	सीमेन्ट	धनराशि	सीमेन्ट	धनराशि		
१	२		३	४	५	६	७	८	९
१	नवाबगंज	..	१००	१७००	१००००	६२०	४००००	३७	
२	सफीपुर	..	३०	७५०	२६०००	६१५	३००००	५०	
३	समेरपुर	..	१२०	२०६०	१०००००	९६०	३००००	७०	
४	बिछिया	..	३५	८१०	३०८५०	५६०	४००००	२८	
५	असोहा	..	१९	२६७	१४४५०	४००	२००००	६८	
६	हसनगंज	..	६५	४००	१०००००	७२४	३००००	६५	
७	फतेहपुर चौरासी	..	८०	९००	१०००००	३००	५००००	४५	कोई नहीं
८	पुरवा	..	१००	१०००	७५०००	७८०	२५०००	८१	
९	बीघापुर	..	१२०	२५००	१०००००	११९०	२५०००	४०	
१०	हिलोली	..	५९	८४७	५३०००	४५७	१००००	२४	
११	मोहा मियांगंज	..	८५	३०००	२५०००	१०००	१००००	८५	
१२	औरास	..	१००	२७००	१०००००	५३०	२५०००	४९	
१३	सिकन्दरपुरसिरोसी	..	१००	२०००	५०००००	५८०	२००००	२७	
१४	सिकन्दरपुरकरन	..	६०	३४४०	८०००००	८४५	१५०००	२४	
१५	गंजमुरादाबाद	..	५३	६००	५००००	३००	१००००	२८	
१६	बांगर मऊ	..	११०	१५००	३८२१०	३६०	२००००	३५	
	टोटल	..	१२३६	२४४७४	१०४२५१०	१०२२१	४०००००	७५६	

नोट :—स्तम्भ ५ तथा ६ में वर्णित धनराशि में सिंचाई कूप तथा नलकूप आदि सभी कार्य सम्मिलित हैं। स्तम्भ ७ की कुल धनराशि में से १,५०,००० रु० सिंचाई के कूप के लिये बांटा गया है।

नत्थी 'ख'

(देखिये तारांकित प्रश्न संख्या ४, ५ और ६ का उत्तर पीछे पृष्ठ २३१–२३२ पर)

परिशिष्ट 'क'

(प्रतिलिपि)

कार्यालय मुख्य अभियन्ता, उत्तर प्रदेश
सार्वजनिक निर्माण विभाग ।
सं० ५८९ आर० एम० पी०/५ आर० एम० पी० (६)-६५
दिनांक, लखनऊ ६ मार्च, १९६५ ई०

अधीक्षण अभियन्ता, (अल्प सिंचाई) विभाग
उत्तर प्रदेश, लखनऊ ।

विषय : जन शक्ति योजना के अन्तर्गत, जिला बाराबंकी में सड़कों का निर्माण ।

महोदय,

आप अपने पत्र सं० ५५१/आर० एम० पी० (एस ई) ७/६–६४–ए० क्यू०, दिनांक २६ फरवरी, १९६५ को अवलोकन करें ।

उपरोक्त विषय पर श्री रामकिशोर त्रिपाठी के प्रथम पत्र १९६५ के चौथे शुक्रवार के लिये तारांकित प्रश्न ४ में प्रस्तावित सड़कों का परीक्षण करने के पश्चात् सूचित किया जाता है कि (१) हैदरगढ़ सुबेहा (२) हैदरगढ़–महराजगंज, (३) भिलवल हसुवांपुर गूढ़ा (प्रश्न में इस सड़क का नाम बाबा हसुवा पुर भिलवल से बढ़ा दिया गया है जो गलत प्रतीत होता है) सड़कें ग्रामीण जन शक्ति योजना के अन्तर्गत लेने के लिये उपयुक्त हैं । इस संबंध में चेक लिस्ट (बी) अधिशासी अभियन्ता, प्रान्तीय खंड, फैजाबाद द्वारा शीघ्र ही भेज दी जावेगी ।

भवदीय,
ह० ए० एच० जुबेरी,
कृते मुख्य अभियन्ता ।

संख्या ५८९(१)/आर० एम० पी०—५ आर० एम० पी० (६)–६५ दिनांक.....।
प्रतिलिपि (१) अधिशासी अभियन्ता, प्रान्तीय खंड, फैजाबाद (२) जिला अभियन्ता, सार्वजनिक निर्माण विभाग, बाराबंकी को इस अनुरोध के साथ प्रेषित किया जाता है कि उपरोक्त सड़कों के संबंध में पूर्ण सूचनायें चेक लिस्ट बी० में नियोजन अधिकारी, बाराबंकी को शीघ्र भेजें । उसकी एक प्रति अधीक्षण अभियन्ता, (अल्प सिंचाई), उत्तर प्रदेश को भी भेजें और भेजने की सूचना इस कार्यालय को भेज दें ।

ह० ए० एच० जुबेरी,
कृते मुख्य अभियन्ता ।

परिशिष्ट 'ख'

COPY

From

THE SUPERINTENDING ENGINEER,
MINOR IRRIGATION DEPARTMENT,
UTTAR PRADESH, LUCKNOW

To

THE CHIEE ENGINEER,
P. W. D. (R.M.P. SECTION),
UTTAR PRADESH, LUCKNOW.
No. 639/R M P/S E/7/6/64
Dated Lucknow, June 4, 1965

Subject : **Taking up Road Schemes in Bara Banki District.**

SIR,

I HAVE the honour to invite reference to your office letter no. 589/RMP/5 RMP/6/1965, dated March 6, 1965 on the above mentioned subject and to say that block-wise details of cost, etc., in check list (B) are still being awaited which may kindly be sent early.

2. It may be added that only Rudauli Block of Bara Banki District is sanctioned under R. M. P. scheme and the works relating to this block only can be taken up under this programme for the present. As such details in check list (B) may kindly be sent for those blocks only which are sanctioned under R.M.P. scheme.

Yours faithfully,
R. N. SINGH,
Superintending Engineer (MI),
Uttar Pradesh.

No. 639(i)/RMP/SE/7/6/1964 of date

COPY in continuation to the above mentioned letter of the Chief Engineer, P. W. D., forwarded to :

(1) Executive Engineer, P. W. D., Faizabad.

(2) District Eingineer, P. W. D., Bara Banki, for information and necessary action, and

(3) District Planning Officer, Bara Banki, for information in continuation to this office endrosement no. 551(i))RMP/SE/7/6/1964 A.Q., dated February 26, 1965.

(Sd.) R. N. SINGH,
Superintending Engineer (M.I.),
Uttar Pradesh.

परिशिष्ट 'ग'

COPY

Copy of the letter no. 1850/20 Com, dated June 15, 1965 from the District Engineer, P.W.D., Bara Banki to the Superintending Engineer, Minor Irrigation Department, U. P., Lucknow.

Subject : **Taking up road schemes in Bara Banki District.**

Reference : **Your Endorsement letter no. 639(i) R.M.P./S.E./7/6/1964 of June 4, 1965**

In this connection I have to point out that the roads mentioned in your letter no. 589/5 RMP/6/1965, dated March 6, 1965, i.e.

(1) Haidergarh-Mahraj Ganj.

(2) Haidergarh-Subeha.

(3) Huswapur road.

are in Haidergarh and Trivediganj Block for which D.P.O., Bara Banki, B. D. O., Haidergarh and Trivediganj were written for furnishing check list (B) which is still awaited from them and will be forwarded to you on receipt.

In this connection, I have to point out that the roads referred above do not fall in Rudauli Block. It may kindly be intimated if check list (B) of the above roads which does not fall in Rudauli Block is still needed.

(Sd.) P. ASTHANA,
District Engineer,
P W. D., Bara Banki.

No. 1850/20 Com of date June 15, 1965

Copy submitted to the Chief Engineer (R.M.P. Section) for information with reference to

Copy to Executive Engineer, Provincial Division P. W. D., Faizabad for information with reference to

Copy to D. P. O., Bara Banki with the request to furnish check list (B) of the above roads at an early date.

(Sd.) P. ASTHANA,
District Engineer,
P.W.D., Bara Banki.

True Copy :

(Sd.) (ILLEGIBLE).
District Engineer,
P.W.D., Bara Banki.

नत्थी 'ग'

(देखिये तारांकित प्रश्न १९ और २० का उत्तर पीछे पृष्ठ २३९ पर)

गोंडा जनपद में स्थिति कोग्रापरेटिव बीज भंडार ३१–७–६५ की स्थिति

क्रम संख्या	नाम विकास क्षेत्र	कोग्रापरेटिव सीड स्टोर का नाम	सीड स्टोर पर नियुक्त सुपरवाइजर का नाम	सीड स्टोर पर कार्य प्रारम्भ करने की तिथि	विशेष विवरण
१	२	३	४	५	६
१	झंझरी ..	खोरसा ..	श्री कृपा शंकर श्रीवास्तव ..	१५–३–६५	..
२	इन्टियाथोक ..	इन्टियाथोक ..	,, ऋषि राम मिश्र ..	२९–९–६१	..
३	कटरा बाजार ..	रामापुर ..	,, बच्चू लाल शुक्ल ..	७–७–६४	..
४	मुजेहना ..	धानेपुर ..	,, कृष्णाकान्त पाडेय ..	१३–२–६५	..
५	रूपईडीह ..	कौड़िया ..	,, तिलकधारी सिंह ..	१३–१–६२	..
६	पंडरी कृपाल ..	बैरिया बिशुनपुर ..	,, अवधेश प्रसाद यादव ..	७–१०–५९	..
७	मनकापुर ..	अशरफपुर ..	,, रामकृष्णमिश्र ..	२८–४–६४	..
८	उतरौला ..	कूपादेवर ..	,, कृष्ण सिंह ..	२८–१–६१	..
९	छपिया ..	मसबिनवां ..	,, साहब सिंह ..	६–७–६५	..
१०	श्रीदत्त गंज ..	विश्रामपुर ..	,, रामसुभग ..	१–२–६१	..
११	रेहरा बाजार ..	रेहरा बाजार ..	,, रमापति दूबे ..	२०–१२–६१	..
१२	रेहरा बाजार ..	सादुल्लानगर ..	,, जीत बहादुर राय ..	१६–४–६३	..

क्रम संख्या	नाम विकास क्षेत्र	कोआपरेटिव सीड स्टोर का नाम	सीड स्टोर पर नियुक्त सुपरवाइजर का नाम	सीड स्टोर पर कार्य प्रारम्भ करने की तिथि	विशेष विवरण
१	२	३	४	५	६
१३	गौंडास बुजुर्ग	.. छटई रामपुर	.. श्री साधू शरण	.. १८-८-६३	..
१४	बेलसर	.. रामड़गंज	.. श्री कैलाश नाथ तिवारी	.. १८-४-६२	..
१५	बेलसर	.. उमरी बेगमगंज	.. श्री हरिश चन्द्र त्रिपाठी	.. ५-१०-६३	..
१६	नवाबगंज	.. नवाबगंज	.. श्री राम सुमिरन शुक्ल	.. ६-८-६५	..
१७	करनैलगंज	.. कन्जेमऊ	.. श्री रामगोपाल तिवारी	.. २९-१-६४	..
१८	बजीरगंज	.. बजीरगंज	.. श्री तेज नरायन श्रीवास्तव	.. १७-२-६५	..
१९	जरवलपुर	.. लगई जोत	.. श्री बुद्ध राम त्रिपाठी	.. २५-४-६५	..
२०	हरैयासतरवा	.. मथुरा बाजार	.. श्री रूदल प्रसाद वर्मा	.. २८-९-६३	..
२१	पचपेड़वा	.. पचपेड़वा	.. श्री रामनवल चौधरी	.. ४-७-५९	..
२२	गैसड़ी	.. गैसड़ी	.. श्री शिवदेव मिश्र	.. १५-९-६३	..
२३		.. पिपरा	.. श्री राम लौटन राम	.. ५-१-६३	..
२४	तुलसीपुर	.. तुलसीपुर	.. श्री हरिहर सिंह	.. १८-४-६३	..
२५		कौड़वापुर	.. श्री रामअचल पांडेय	.. ९-८-६५	..

उत्तर प्रदेश सभा

निम्नलिखित सुपरवाइजर की सूची

क्रमांक	नाम सुपरवाइजर	अपराध जिनमें सुपरवाइजर निलंबित हुआ
१	२	३
१	सर्वश्री मोहम्मद रफीक खां	.. अनियमितता एवं गबन
२	,, अलीरजा खां	.. अनियमितता
३	,, शीतला प्रसाद गुप्त	.. अनियमितता एवं अनुपस्थिति
४	,, सूर्य नारायण मिश्र	.. अनुपस्थिति की रिपोर्ट
५	,, जयनारायण सिंह	.. अनियमिमता एवं गबन
६	,, त्रिलोकी नाथ	.. अनियमितता एवं आदेश की अवहेलना
७	,, बंश उजागर लाल	.. अनियमितता एवं आदेश की अवहेलना
८	,, सर्व नारायण तिवारी	.. अनियमितता
९	,, शंकर दयाल मिश्र	.. पुलिस की रिपोर्ट पर
१०	,, रामस्वरूप श्रीवास्तव	.. आदेशों की अवहेलना, कार्य के प्रति उदासीन
११	,, राजेन्द्र सिंह पाल	.. अनियमितता, आदेश की अवहेलना
१२	,, बलराम सिंह	.. स्पेशल आडिट रिपोर्ट का आधार तथा अनियमितता
१३	,, नगेन्द्र बहादुर सिंह	.. गबन एवं अनियमितता
१४	,, रामलखन	.. अनियमितता एवं कार्य के प्रति उदासीनता

ऐसा कोई सुपरवाइजर नहीं है जिसका मामला कोर्ट में दिया गया हो ।

उत्तर प्रदेश राज्य अभिलेखागार